THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY
OU_182304
UNIVERSAL LIBRARY

ıania University Library
3
5 S
Accession No. H 3576

ı be returned on or before the date last marked below.

शहर, लोग और मैं

'असन्तुलन' के बारे में कुछ कहना इस लिए भी जरूरी हो जाता है कि इस में चित्रित दिल्ली वैसी नहीं है, जैसी कि आज से दो साल पहले थी या दो साल बाद होगी।

सितम्बर-अक्तूबर १९६४ का समय दिल्ली के लोग कभी न भूल सकेंगे, जब नागरिक सुविधाएं पाना तो दूर, जीवित रहना तक दूभर हो गया था। इस दौरान कइयों ने दिल्ली हमेशा के लिए छोड़ दी और इस शहर के नाम लानत भेजते हुए अखबारों में पत्र भी छपवाए।

उपन्यास में जो तथ्य-सम्बन्धी (फैक्चुअल) बातें आई हैं, वे विश्वसनीय न लगें तो भी सत्य हैं। पांच साल बाद इस उपन्यास को पढ़ने वाला आश्चर्य करेगा कि राजधानी में ऐसा भी हुआ था।

घटनाओं का क्रम अखबारों की तारीखों के अनुसार नहीं है। कथात्मकता की आवश्यकता सन्तुष्ट करने के लिए मैं ने उसे थोड़ा इधर-उधर किया है। पहले सोचा था कि अखबारों की कतरनें ब्लाक बना कर फुट-नोट्स के रूप में छापी जाएं, लेकिन ऐसा नहीं किया। पाठकों को इतना विश्वास होना चाहिए कि लेखक उसे धोखा नहीं दे रहा है।

नायक रामप्रकाश (या किसी भी अन्य पात्र) ने जो कहा है, वह रामप्रकाश (या उस पात्र) ने ही कहा है – मैं ने नहीं। स्वयं की बात कहने के लिए मैं उपन्यास की बजाए निबन्ध लिखना ज्यादा पसन्द करता।

मैं उमेश प्रकाशन के भाई रमेश सन्त और भाई शिव सन्त का बड़ा आभारी हूं, जिन के सहयोग से इस कृति का इतनी शीघ्रता से प्रकाशन हो पाया। दो उपन्यासों को इस अनोखे ढंग से एक साथ पेश करने का आइडिया भी उन्हीं का है।

आनन्दप्रकाश जैन ने अपने एक पत्र में मुझे लिखा था : 'आर्थिक परिशोषण इस दुनिया में इतना गहन और सूक्ष्मवेशी होता जा रहा है कि अनेक ईमानदार बुद्धि जीवी भी उस के ऊपरी आवरणों को अपनी

दृष्टि से नहीं भेद पाते। जिस प्रकार यौन मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक संयोजन में सूक्ष्म उद्वेलक का कार्य करता है, उसी प्रकार वर्ग-संघर्ष हमारी सामाजिक रचना व हलचल की रग-रग में समाया हुआ है। यदि किसी लेखक की अंतर्दृष्टि वर्ग-संघर्ष की परतों के पार देखते रहने से निर्मित हुई है, तो वह सत्य के अधिक निकट पहुंच सकता है। वर्ग-संघर्ष मोटे तौर से अमीर-गरीब की लड़ाई का ही प्रश्न नहीं है।'

'असन्तुलन' में मैं ने इसी सूक्ष्म वर्ग-संघर्ष की परतों के पार देखने की चेष्टा की है। सचेतन गद्य आन्दोलन के अन्तर्गत आने वाले अनेक साहित्यकारों ने अपनी सामाजिक संचेतना का जो परिचय दिया है, उस में इसी का सूक्ष्म विवेचन परिलक्षित होता है। महीप सिंह की दृष्टि जीवन को अन्य पहलुओं से भी देखती-परखती है, लेकिन धर्मेन्द्र गुप्त, योगेश गुप्त, आनन्दप्रकाश जैन, वेद राही, सुखबीर, रामकुमार भ्रमर इत्यादि कई साहित्यकारों में वर्ग-संघर्ष की परतों के पार देखने की प्रवृत्ति ही अधिक उभरती है।

आई १५४, कीर्तिनगर,
नई दिल्ली-१५

मनहर चौहान

:: १

रात के प्राय: आठ का समय। आधे घण्टे से कोई बस नही आई थी, जिस से कतार बहुत लम्बी हो गई थी और ऊब रही थी। रामप्रकाश के सामने कम-से-कम तीस लोग खड़े थे। पहले इन सब को जगह मिलेगी, तब जा कर कहीं उस की बारी···उफ !

रामप्रकाश अकड़ कर खड़ा हो गया। बस आने में जो देर हो रही थी, उस के कारण एकाएक उसे चौंकने का-सा अनुभव हुआ था, क्योंकि उसे याद आ गया था, वह दिल्ली में है।

कतार की पूरी लम्बाई, जो आलस्य के कारण दब्बू होने लगी थी, जीवन्तता से भर उठी। बस आ रही थी। उस का चपटा और चौखुटा थूथना अपनी गोल, पीली और बिना पलकों वाली दो रोशनियों के साथ शेड की ओर बढ़ रहा था। बस में सिवा ड्राइवर और कण्डक्टर के और कोई नहीं था। जाहिर था कि गुरुद्वारा रोड के इस स्टाप से यह बस स्पेशल होने जा रही थी। रामप्रकाश ने उस के बोर्ड की ओर देखा। तेरह नम्बर · राजौरी गार्डन्स···

रामप्रकाश को डर लग रहा था, कही कतार न टूट जाए। भीड़ में हाथापाई कर के बस में घुसना रामप्रकाश को बहुत अटपटा लगता था, हालांकि कभी-कभी उस ने ऐसा करने में सफलता भी पाई थी। उसे यह देख कर राहत मिली कि कतार उसी तरह बस के अन्दर जा

रही थी, जिस तरह कोई लम्बा और पतला सांप धीरे-धीरे रेंगता हुआ अपने बिल में जाता है।

वह पिछली सीट के दरवाजे के पास वाले कोनीले खाचे में बैठ गया, क्योंकि यह पुरानी बस थी और उस के चलने पर हवा का झोंका यदि कहीं से आ सकता था, तो सिर्फ इसी दरवाजे से।

'राधास्वामी सत्संग' के स्टाप से पहले के मोड़ पर एजिन बन्द हो गया। ड्राइवर ने बस के अन्दर की रोशनिया बुझा दीं, ताकि बैटरी तेज हो कर एंजिन को स्टार्ट कर सके, लेकिन एंजिन हर बार सिर्फ घिर-घिर-घिर कर के रह गया। थोड़ा और प्रयास कर के ड्राइवर ने घोषणा कर दी कि बस आगे नहीं जाएगी। सवारियां भनभनाने लगीं कि यह दिल्ली है या जहन्नुम, बसें आखिर कब तक इतनी खस्ता रहेंगी। दो-एक लोगों ने यह सवाल ड्राइवर से पूछा, गोया उसे वाकई सही-सही मालूम हो कि अच्छी बसें कब आएंगी। दस-बारह लोग बस से उसी समय उतर गए, लेकिन कई लोग, खास कर औरतें, काफी देर तक भीतर बैठे रहे, मानो ड्राइवर ने झूठ कहा हो कि बस आगे नहीं जाएगी। रामप्रकाश यह सोचता हुआ उतर पड़ा कि यहां अब दूसरी बस न मालूम कब मिलेगी।

रात दस बजे के बाद रामप्रकाश घर पहुंचा तो पता चला, गुड्डो अभी तक सुदर्शना के यहां से नहीं आई है। वह नाराजगी से कमीज उतारने लगा। उस ने शान्ति की ओर देख कर कहा, "बुरी बात है।" शान्ति चुप रही। वह अच्छी तरह जानती थी कि उस के पति को गुड्डो की आजादी पसन्द नहीं है, लेकिन दिक्कत यह थी कि वह गुड्डो को मना भी न कर पाती थी। वह चुप रही। रामप्रकाश ने फिर कहा, "सुना नहीं? बहुत बुरी बात है। हमारे इलाहाबाद में औरतें आठ बजे के बाद शायद ही घर से निकलती हैं। एक तुम्हारी बेटी है जो इतनी रात तक सहेलियों से गप्पें लड़ाती है।"

"गपें लड़ाने नहीं गई है।"

"तो ?"

"उन की प्रिंसिपल ने कहा है कि इस माह की तनख्वाह पहली की बजाए सात को मिलेगी। सभी टीचर्स इस का विरोध कर रही हैं। इसी बारे में बात करने गई है।"

"बात क्या खाक होगी ? और बात हो भी क्या सकती है ? घर में बात कर के प्रिंसिपल पर भला क्या रौब डाला जा सकता है ?"

"प्रिंसिपल जरा गरम मिजाज की है। इसी लिए कुछ करने या कहने से पहले सोच लेना जरूरी हो जाता है।"

"कब गई है ?"

शान्ति जरा झिझकी, फिर बोली, 'गई तो आठ बजे है।"

रामप्रकाश एकदम उबल पड़ा, "आठ बजे गई है ! और अब दस से भी ऊपर हो रहे हैं ! बातें कर रही है या·· बिल्लू ! · ओ बिल्लू !"

चौगान में बैठ कर स्कूल का काम कर रहा उस का आठ-वर्षीय बेटा बलदेव कमरे में आ गया।

"सुदर्शना जी के यहां से दीदी को बुला लाओ। और देखो, वापस आ कर तुरन्त सो जाना। इतनी रात तक बच्चों को नहीं जागना चाहिए।"

"जी, डैडी !" बिल्लू चला गया।

रामप्रकाश ने अपनी पैन्ट पर पड़े छींटों को देखा, जो तेजी से भागती एक कार ने उड़ाए थे। फिर पैन्ट को रद्दी कपड़ों के लिए बनी केन की छोटी-सी कोठी में डाल दिया। उस ने बनियान भी उतार दी और छाती के बालों पर हाथ फेरते हुए कहा, "आज उमस ज्यादा है—नहीं ?" शान्ति चुप रही। रामप्रकाश सहसा गम्भीर हो गया और स्वर को भारी करता हुआ बोला, "एक जरूरी बात करनी है।"

शान्ति ने चुप्पी कायम रखते हुए पति की तरफ देखा।

"गुड्डो और सुदर्शना की दोस्ती कम होनी चाहिए।"

"क्यों ?"

"मैं ने सुदर्शना के बारे में···दरअसल, देखो न, बातें तो तरह-तरह की होती रहती है, फिर भी मुझे कई लोगों ने बताया है कि सुदर्शना···"

'क्या ?"

"वह लोगों के साथ बहुत घूमती-घामती है।"

"देखोजी, वह है मास्टरनी, कहीं-न-कहीं आना-जाना लगा ही रहता है। कल को हमारी गुड्डो के लिए कुछ सुनाई पड़ने लगे तो क्या करोगे ? दिल्ली जैसे शहर में ऐसी बातों पर ध्यान देने से काम नहीं चलेगा।"

"सो तो ठीक है, फिर भी···" रामप्रकाश कुर्सी पर बैठ गया और चेहरे पर उभर आई चिन्ता की रेखाओं को मिटाने की कोशिश करने लगा।

बाहर से बिल्लू की आवाज सुनाई पड़ी, "मम्मी !" वह कमरे में आया और बोला, "दीदी और सुदर्शनाजी पान खाने मारकेट गई हैं। मैं सुदर्शनाजी की मम्मीजी को कह आया हूं कि आते ही दीदी को भेज दें।"

रामप्रकाश बौखला गया, "पान खाने ? यह पान खाने का समय है ?·· अच्छा, बिल्लू ! जाओ, किताबें समटो और सो जाओ। सुबह पढ़ना।"

बिल्लू चला गया। रामप्रकाश ने कहा, "क्या करें, दिल्ली में किराए इतने ज्यादा हैं कि एक कमरे में गुजर करना पड़ता है। क्यों जी, पांच-दस रुपए ज्यादा दे कर दो कमरों की जगह नहीं मिल सकती ? कमरे इस से छोटे हों, तो भी काम चल सकता है। होने दो चाहिएं।"

कठोर सत्य यह था कि पांच-दस क्या, तीस-पैंतीस ज्यादा दिए जाते तो भी दो कमरे मिलना मुश्किल था। यह कमरा, जो एक्स ब्लाक की एक बरसाती थी, रामप्रकाश ने आज से लगभग चार साल पहले

बयालीस रुपए मासिक किराए पर ली थी। यदि आज इसे छोड़ा जाता, तो निश्चित रूप से यह करीब पचहत्तर में उठ जाती। जब सिर्फ पांच-दस अधिक दे कर दो कमरे लेने की बात रामप्रकाश ने कही, तो वह खुद भी जानता था कि वह एक मजाक कर रहा है। अपने-आप से मजाक। वह मुस्कराने लगा। गुड्डो पान खाने गई है, यह उसे याद आ गया और उस की मुस्कान डूब गई।

चार साल पहले रामप्रकाश अपने भाइयों से जुदा हो कर इलाहाबाद से दिल्ली आ गया था। एक मित्र ने दो महीनों में उस की नौकरी लगवा दी थी। तब से वह सपरिवार इसी बरसाती में था। उस समय गुड्डो चौदह साल की थी। यहां आ कर दिल्ली का पानी उस को ऐसा लगा था कि चार सालों में ही गुड्डो दस साल बड़ी हो गई थी। रामप्रकाश को उस के अधिकांश तौर-तरीके पसन्द नहीं थे। यह बताना असम्भव ही था कि कौन-सा तरीका उसे विशेष रूप से नापसन्द था, लेकिन जुमला यह था कि वह गुड्डो से असन्तुष्ट रहता था। इस असन्तोष को वह मन-ही-मन घोटता रहता, लेकिन कभी-कभी वह फूट ही पड़ता। पिछले कुछ माहों से असन्तोष की अभिव्यक्ति ज्यादा हो रही थी—जब से गुड्डो और सुदर्शना की दोस्ती में पहले से ज्यादा पक्कापन आया था।

सुदर्शना अरोड़ा एक ऊंची-पूरी, स्वस्थ, गोरी, खुशमिजाज लड़की थी और अजनबियों से जरा भी नहीं झेंपती थी। हंसते समय उस के गालों में गड्ढे नही पड़ते थे, लेकिन उस की हंसी बहुत प्यारी थी। कभी-कभी यह हंसी रामप्रकाश से सहन न होती। उसे यही लगता कि लड़कियों को इतना खुल कर हंसना नहीं चाहिए। क्यों नहीं हंसना चाहिए, जबकि हंसी ही वैसी हो—इस सवाल का उत्तर रामप्रकाश के पास नहीं था। सुदर्शना अरोड़ा की पोशाक पर रामप्रकाश को बहुत एतराज था। पुष्ट नितम्बों और वक्ष को और ज्यादा उभारती व थिरकाती हुई सुदर्शना अपनी चुस्त पोशाक में जीना चढ़ती या उतरती, तो

रामप्रकाश के मन में जुगुप्सा जाग उठती। वह शान्ति से शिकायत करता, "तुम्हीं बताओ, किसी मास्टरनी की पोशाक ऐसी होनी चाहिए? बच्चे इस को आदर से देखेंगे या इस की ओर सीटियां बजाएंगे?"

यह बरसाती दूसरी मंजिल पर थी। जमीनी मंजिल पर मकान-मालिक, जो एक बूढ़ा सरदार था, स्वयं रहता था। दूसरी मंजिल पर दो-दो कमरों के सेट थे। एक सेट बड़े कमरों का था, शेष दो छोटे थे। चारों के बीच लेवेटरी सिर्फ एक थी, हालांकि गुसलखाने दो, स्टोर-रूम दो और रसोई-घर भी दो थे। ये चारों कमरे एक इंजीनियर साहब ने ले रखे थे। वह अपने-आप में सिमटे रहने वाले आदमी थे। इन चार सालों में रामप्रकाश ने मुश्किल से उन्हें आठ-दस बार (आमने-सामने) देखा होगा। बातचीत का मौका दो-चार बार से ज्यादा न आया होगा। जब रामप्रकाश शेव कर रहा होता, इंजीनियर साहब आफिस चले जाते। रामप्रकाश के आने से पहले ही वह लौट आते और कमरे में घुस कर, रेडियो शुरू कर के, घोंघे की तरह कुरसी में सिकुड़े, किसी अखबार या पत्रिका के पृष्ठ उलटते। उन के दो छोटे-छोटे बच्चे थे—दोनों लड़के। वे ऊधमी नहीं थे। बिल्लू के कारण उन का ऊपर आना-जाना था। इंजीनियर साहब की शान-शौकत से रामप्रकाश मन-ही-मन कुण्ठित होता था। ऐसी कुण्ठा शान्ति के मन में भी थी, हालांकि इंजीनियर साहब की पत्नी से उस की अच्छी खासी पटती थी।

ग्रेजुएट न होने के कारण रामप्रकाश को दिल्ली में अच्छी नौकरी कभी न मिली थी। असन्तोष की झोंक में वह बार-बार नौकरियां छोड़ दिया करता। वह फिजूल-खर्च नहीं था, यह अच्छी बात थी, वरना दिल्ली में गुजारा कैसे हो पाता, कहना मुश्किल था। इन दिनों वह करोलबाग के एक ड्रग-स्टोर में काउण्टर-क्लर्क के रूप में काम कर रहा था।

गुमास्ता एक्ट जारी हो चुका होने के कारण दिल्ली के बाजार साढ़े सात बजे बन्द हो जाते, लेकिन होटलों और दवा की दूकानों इत्यादि

पर यह एक्ट लागू न होता। ड्रग-स्टोर नौ बजे के बाद भी अक्सर खुला रहता। रामप्रकाश को प्रायः साढ़े सात बजे छुट्टी मिल जाती, क्योंकि ड्रग-स्टोर के मालिक का छोटा भाई आ कर काउण्टर पर शौकिया बैठा करता, लेकिन कभी-कभी जब वह न आता, तो रामप्रकाश को घर पहुंचने में बहुत देर हो जाती। बसों की सर्विस वैसे ही माशाअल्ला थी। वह पौने दो सौ रुपए तनख्वाह पाता था। जब से वेस्ट पटेलनगर के एक प्राइवेट माण्टेसरी स्कूल में गुड्डो ने टीचरशिप पाई थी, घर में सौ रुपए ज्यादा आने लगे थे।

गुड्डो, जिस का नाम दरअसल गायत्री था, एक मोमी लड़की थी। मोम जैसी ही आसानी से वह नए-नए सांचों मे ढलती थी। इसी लिए रामप्रकाश को लगता कि गुड्डो का व्यक्तित्व खिचड़ी हो गया है। उस में ईसाईपन है, क्योंकि माण्टेसरी स्कूल में एक ईसाई लड़की टीचरशिप करती है और उस की दोस्त है। उस में परिवारगत उत्तरप्रदेशीयपन है, साथ-साथ पंजाबियत का अनोखा मिश्रण भी।

ज़ीने से गुड्डो की आवाज आई, "बिल्लू ? सो गया क्या ?"

वह कमरे में आई। रामप्रकाश बरस पड़ा, "तुम पान खाने गई थीं ? यही लक्षण हैं तुम्हारे ? रात के दस-सवा-दस बजे मारकेट में मटरगश्ती हो रही है ! वाह, लखनवी ठाठ के क्या कहने !"

"सुदर्शना जबर्दस्ती खींच कर ले गई। बहुत मना किया फिर भी···" गुड्डो ने बिना झेंपे कहा।

"ले कैसे गई ? अगर तू न जाती, तो ले कैसे जाती ?"

"आप भी क्या छोटी-छोटी बातों को ले कर · "

शान्ति ने डाट दिया, "तुम उन की लड़की हो। उन का कहा न सुनोगी तो किस का सुनोगी ?—और वह कोई गलत बात भी नहीं कह रहे।"

कुछ क्षणों तक मौन छाया रहा। रामप्रकाश ने अपने को जीत गया महसूस किया। शान्ति ने गुड्डो से पूछा, "क्या बातचीत हुई ?"

"यही—प्रिंसिपल से साफ-साफ कह दिया जाए कि तनख्वाह हर हालत में पहली को मिलनी चाहिए। हम जितना दबती हैं, उतनी ही दबाई जाती हैं। सिर्फ न दबने के लिए ही हम विरोध कर रही हैं, वरना सात तारीख को तनख्वाह मिलने में कोई खास परेशानी नहीं है।"

"हुं..."

रामप्रकाश जान-बूझ कर कोई दिलचस्पी नहीं ले रहा था।

"जरा बाहर जाओगे ?" शान्ति उस के बहुत पास आ कर धीमे स्वर में कह रही थी।

वह बाहर निकल आया और चौगान में खड़ा हो गया। वह जानता था कि गुड्डो भीतर कपड़े बदल रही है। उस ने फिर से चाहा कि गुड्डो और सुदर्शना की मित्रता छूट जानी चाहिए। वह दूर-दूर तक देखता रहा। तीसरी मंजिल से कीर्तिनगर की रोशनियां खूबसूरत लग रही थीं। फिल्म की पट्टी के दोनों ओर छोटे-छोटे चौकोर छिद्रों का जो सिलसिला होता है, उसी के जैसी डिज़ाइन द्वारा तैयार की गई 'नटराज' थियेटर की नियां लाइट्स अपनी नीलिमा के साथ आकाश में लटकी हुई थीं।

बिल्लू सो चुका था। खा-पी कर तीनों अपनी-अपनी खाटों पर लेट गए। जो खुले चौगान में बिछाई गई थीं।

:: ३

जब रामप्रकाश इंडस्ट्रियल एरिया के बस-स्टाप पर उतरा, उस ने देखा कि स्टाप पर पहले से एक बस खड़ी हुई है। उस में से इंजीनियर साहब सपत्नीक उतर रहे थे। दोनों बसें एक साथ चल पड़ीं। चूंकि उन लोगों से उस की खास बोल-चाल नहीं थी, इस लिए वह उन से अन्तर बनाए रख कर पीछे-पीछे चुपचाप चलता रहा।

कीर्तिनगर की बजाए इंडस्ट्रियल एरिया के स्टाप पर उतर कर एक्स ब्लाक तक जाना बनिस्बत एक छोटा फासला था। रामप्रकाश हमेशा इसी स्टाप पर उतरा करता। इंडियन आक्सीजन के गेट पर बिजली के दो पीले ग्लोब चमक रहे थे। चेम्पियन फूड कम्पनी की लाइट्स भी दृढ़ता के साथ नीली हो उठी थीं। रामप्रकाश उन रोशनियों में इंजीनियर साहब और उन की पत्नी के मोटे जिस्मों को पीछे से देखता रहा। वह सोच रहा था कि लोग इतने मोटे कैसे हो जाते हैं। टिम्बर मारकेट की ओर जाने वाली यह सकरी सड़क सूनी थी। उस ने इंजीनियर साहब की बातें सुनीं। उस को दूसरों की बातें सुनने की आदत थी, क्योंकि अकसर उसे यह शक हो जाता था कि उसी के बारे में कुछ कहा जा रहा है। इंजीनियर साहब किसी लड़की की बात कर रहे थे। पीछे किसी के आने का पता न होने के कारण वह उन्मुक्त हो कर हंस रहे थे। रामप्रकाश ने उन्हें पहली बार इतना हंसते देखा। शायद घर में इसी

तरह हंसते हों, लेकिन बाहर उन का मुंह प्रायः सूजा ही रहता। आज पत्नी के साथ थे, कदाचित् इस लिए भी···

"बहुत खूबसूरत तो नहीं, हां, गठीली जरूर है।" इंजीनियर साहब की पत्नी कह रही थी।

इंजीनियर साहब हंस दिए, 'औरत औरत की खूबसूरती भला कैसे आंकेगी ? मेरी निगाहों से देखो। मुझे तो वह बहुत ही · ''

"ले आओ फिर किसी दिन · घर में ही · ''

"और तुम ?"

"मैं हमेशा के लिए मायके चली जाऊंगी।"

"खूबसूरत तो है, लेकिन तुम्हारे एवज में थोड़े ही···"

रामप्रकाश को शक हुआ कि वह इंजीनियर दम्पति से काफी पास आ कर चल रहा है और यदि दोनों में से किसी ने मुड़ कर पीछे देख लिया तो एक ही बात सोची जाएगी कि रामप्रकाश चोरी-चोरी उन की बाते सुन रहा है। उस ने अपने-आप से कहा कि उसे जरा पीछे हो जाना चाहिए, लेकिन वह उसी तरह काफी करीब रह कर चलता रहा।

"तुम्हारे जैसा कंजूस आदमी, रात भर के वह जितने मांगेगी, उतने कहां से देगा···?"

इंजीनियर साहब (शायद) खिसिया गए। उन से कहा जा रहा था, "उस का घर कौन-सा है, यह तो बता दो ?"

"मुझे नहीं मालूम।"

"झूठ ! अभी बस में कह रहे थे कि मालूम है।"

"अच्छा, अच्छा, दिखाता हूं।"

ब्रांच पोस्ट-आफिस पास आ चुका था। वहां से दाहिनी ओर की बाई लेन पर मुड़ते हुए इंजीनियर साहब ने इशारे से एक मकान दिखाया और कहा, "वह किसी स्कूल में टीचर है।"

"अच्छा ? यहां रहती है ? इतनी पास ? मुझे तो मालूम ही नहीं था ··"

"दिन भर घर में बन्द रहोगी, तो कैसे···"

"नहीं जी, बन्द रहने की बात नही है। बात है दिलचस्पी लेने की। तुम्हें थी दिलचस्पी, सो तुम ने पता लगा लिया। अब किसी दिन आगे का भी काम कर लोगे···हमारे मकान में वो ऊपर वाले हैं न? उन के यहां आती-जाती है। गुड्डो की दोस्त है···"

"अच्छा, मजाक बहुत हो चुका, कोई और बात करो।"

रात लगभग आधी बीत चुकी थी और रामप्रकाश सोच रहा था कि इस सम्बन्ध में क्या किया जाए।

जरूरी नहीं था कि सुदर्शना के बारे में इंजीनियर साहब के विचार सही हों। सम्भव था, इंजीनियर साहब सिर्फ एक मजाक ही कर रहे हों, लेकिन इस ऊंची-पूरी, स्वस्थ लड़की के बारे में पहले भी रामप्रकाश इसी तरह की बातें एक से ज्यादा बार सुन चुका था। यदि इस में थोड़ा बहुत भी सत्य था, तो गुड्डो को सुदर्शना की मित्रता तुरन्त छोड देनी चाहिए।

मित्रता छूटने का यह अर्थ नहीं था कि सुदर्शना का सिर्फ घर में आना-जाना रुक जाए। स्कूल में भी गुड्डो से उस की कोई बात न होनी चाहिए। शायद यह तब तक सम्भव नही है, जब तक दोनों एक ही स्कूल में पढ़ाती हैं। तो क्या···गुड्डो से कहा जाए कि वह नौकरी छोड़ दे? कहीं और, किसी और काम की तलाश कर ले? महंगाई के साथ-साथ बेकारी के भी इस जमाने में नया काम मिलना कितना दुष्कर है, रामप्रकाश अच्छी तरह जानता था।

"लो भाई, सुनो!" रामप्रकाश ऊंचे स्वर में बोला। अखबार आ चुका था। उस की आदत थी कि जो समाचार (उस के अनुसार) मजेदार होते, उन्हें वह जोर से पढ़ कर सबको सुनाता। शान्ति निर्विकार रही। उस ने भरभराते स्टोव पर से खौलती चाय उतार कर केतली में छानी।

चाय दो बार बनती थी। पहली बार तब, जब रामप्रकाश ब्रश कर चुका होता। इस चाय में बिल्लू अपना हिस्सा बटाता, साथ नाश्ता भी करता, फिर स्कूल चला जाता। उसे ले जाने के लिए तब तक रिक्शा आ जाता था। स्नान-गृह से जुड़े हुए एक विशेष कक्ष को रामप्रकाश ने 'चीन' नाम दे रखा था। चाय पी कर वह 'चीन' चला जाता, लौट कर अखबार के मुख्य समाचार खामोशी से पढ़ता, अपनी बनियान और अण्डरवियर खुद धोता, जूतों की पालिश करता, यदि शेव करने का दिन होता (एक दिन की आड़ में) तो शेव करता, फिर नहाता। कभी-कभी नहाने से पहले एकाध कपड़े पर इस्तरी कर लेता। नहाने के बाद उसे दूसरी बार चाय पीने की जरूरत हुआ करती, क्योंकि नाश्ता वह नहाने के बाद करता था और नाश्ता चाय के बिना नहीं हो सकता था। शान्ति ने पति के सामने वनस्पति घी में बने दो छोटे परांवठे रखे, चाय का कप सरकाया।

गुड्डो सुदर्शना के घर के लिए रवाना हो चुकी थी। वहां से वे दोनों साथ-साथ शादीपुर डिपो पहुंच कर बस पकड़ने वाली थीं। रामप्रकाश किसी तरह यह भुलाना चाहता था कि गुड्डो सुदर्शना के यहां गई है। अखबार की परतों को व्यवस्थित करते हुए उस ने चाय की चुस्की ली और पढ़ा, दिल्ली की अदालत में एक सांप पेश किया गया। उस पर आरोप था कि उस ने एक लड़के को काट लिया, जिस से उस की मृत्यु हो गई। यह सांप एक मदारी का था, जो जामा-मस्जिद के पास भीड़ इकट्ठी कर के तमाशा दिखा रहा था। अचानक सांप बेकाबू हो गया और भागने लगा। मदारी को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। उस पर सार्वजनिक स्थल में खतरनाक खेल दिखाने का आरोप है।"

शान्ति ने अनसुनी करते हुए कहा, "चीनी के लिए कार्ड बनवाना होगा। एक आदमी को एक माह में एक किलो से ज्यादा नहीं मिलेगी। दूध भी कार्ड में जितना लिखा है, उस का आधा मिलेगा। कल से।

"मुझे मालूम है, बार-बार सुना कर क्यों मूड खराब करती हो?"

"इस लिए कह रही हूं कि तुम जो दो-दो बार चाय पीते हो, कल से एक ही बार मिलेगी।" शान्ति ने निश्चयात्मक स्वर में कहा, "आज चीनी के लिए पूरे चार घण्टों तक लाइन में खड़ी रही, तब कहीं..."

रामप्रकाश कुछ न बोला। शान्ति ने जो कुछ कहा था, वह उसे पसन्द न आया था, लेकिन पसन्द न आने के बावजूद इस का कोई इलाज नहीं था। अखबारों में समाचार छपे थे कि गांवों से दूध आना कम हो जाने के कारण दिल्ली-मिल्क-स्कीम उतना दूध नहीं दे पाएगी, जितने की शहर को आवश्यकता है। अमरीका से दूध के पाउडर वाला जहाज भी किसी कारणवश नहीं आ पाया था। रामप्रकाश मन-ही-मन बुदबुदाया, 'चलो, इस बहाने बचत ...।' बचत का प्रश्न उस के सामने सचमुच एक गम्भीर समस्या थी। अपने पांच हजार के बीमे की किस्तें देने का भी इन्तजाम वह मुश्किल से कर पाता। अलग से बचत पूरी कोशिश के बावजूद न हो पाती। कई बार वह हिसाब लगाने बैठता कि रुपए आखिर कहां-कहां खर्च हुए, लेकिन दस-दस के कई नोटों का कोई हिसाब न मिल पाता। अपनी ओर से वह पूर्णतया सावधान था कि फिजूलखर्ची से बचता रहे लेकिन न मालूम कहां सारा पैसा...

ड्रग-स्टोर में टाइपिंग का जो थोड़ा-बहुत काम होता था, उसे रामप्रकाश ही सम्भालता था। दोपहर के बाद टाइप-राइटर खटखटाती उस की उंगलियां एकाएक रुक गई, क्योंकि आकाश में जो बादल घिर रहे थे, उन में जोरों की गर्जना हुई थी। उस ने बाहर आ कर दृष्टि ऊपर उठाई।

पन्द्रह मिनटों में इतनी मोटी बूंदें आकाश से गिरनी शुरू हो गई कि दूकानों, छज्जों इत्यादि के नीचे पहुंचते-पहुंचते ही लोग काफी भीग गए। तीन दिनों से गरमी बहुत ज्यादा थी, अतः बारिश ने सब को खुश कर दिया। सब आपस में कहने लगे कि अब मौसम अच्छा हो जाएगा, हालांकि यह न कहा जाता, तो भी इस की जानकारी सब को थी।

दो दक्षिण भारतीय और चार पंजाबी लड़कियां ड्रग-स्टोर के अन्दर

चली आई थीं। रामप्रकाश ने सड़क के दूसरी ओर, तेजी से कदम उठा रही एक लड़की को पहचाना। वह इतनी भीग चुकी थी कि उस की लगभग पूरी पोशाक में आंशिक पारदर्शकता आ गई थी। वह सुदर्शना अरोड़ा थी। ऊंची एड़ियों की सैंडिल्स पर अपने को संतुलित करती हुई वह एक पान वाले की दूकान के छाजन के नीचे जा खड़ी हुई। रामप्रकाश को थोड़ा अचरज हुआ, क्योंकि सुदर्शना को इस समय पटेल नगर के स्कूल में बच्चों को पढ़ाते होना चाहिए था। झुकती दोपहरी में वह करोलबाग में क्या करने आई है? रामप्रकाश अपने पर झुंझलाने लगा। आई होगी किसी काम से। छुट्टी ले ली होगी। कीर्तिनगर में कई ऐसी चीज़ें नहीं मिलतीं, जो करोलबाग में मिलती हैं। रामप्रकाश को क्या सरोकार?

उस ने फिर से टाइप-राइटर पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। न चाह कर भी बार-बार उस की आंखें सुदर्शना की दिशा में उठ जातीं। उस ने गौर किया कि सुदर्शना अकेली नहीं है। एक युवक, जिस ने दोनों हाथों में (अभी-अभी) खरीदा गया काफी सामान थामा हुआ था, उस के पास ही आ खड़ा हुआ था। दोनों किसी बात पर ठहाका लगा रहे थे। बारिश की छरछराहट में हंसी की आवाज तो न सुनी जा सकी, लेकिन उन का ठहाका दिखाई अवश्य पड़ रहा था। रामप्रकाश को बुरा लगा। न मालूम कौन था यह युवक! फिर उस ने सोचा कि बुरा क्यों लगना चाहिए? कोई भी हो सकता है···कोई रिश्तेदार, परिचित, पड़ोसी, भाई···सिर्फ एक ही बात का शक क्यों करना चाहिए? रामप्रकाश ने अनुभव किया कि स्वयं उसी के मन में चोर बैठा है। वह बार-बार पान वाले की दूकान की ओर देख लेता। बारिश और तेज हो गई। जहां वे दोनों खड़े थे, वहां बौछार आने लगी होगी, क्योंकि उन्होंने अपने को सिकोड़-सा लिया। अब वे बहुत पास आ कर सटते हुए खड़े हो गए थे। भीगी पोशाक में से सुदर्शना का शरीर फूटा पड़ रहा था। 'ऐसी हालत में तो अपने भाई के साथ भी इस तरह नहीं सटना चाहिए।'

रामप्रकाश ने सोचा। उसे इंजीनियर साहब की वे बातें याद आ रही थीं। वह रबर ढूढ़ रहा था, क्योंकि टाईपिंग में वह तीन गलतियां लगातार कर गया था। उस की आंखों के सामने गुड्डो का चेहरा तैर गया। इतना अंधेरा हो गया था कि ड्रग-स्टोर की ट्यूब-लाइट्स जलानी पड़ी थीं।

आकाश में फिर कड़कड़ाहट हुई। बारिश उसी तरह घनी थी। रामप्रकाश ने बरसती बूंदों की लय में से छनती हुई एक बारीक आवाज सुनी, "टैक्सी !" उस ने पान वाले की दूकान की ओर देखा। सुदर्शना हाथ उठाती हुई आवाज लगा रही थी। "टैक्सी !" युवक भी चिल्लाया, लेकिन टैक्सी वाला लापरवाही से गाड़ी को आगे बढ़ा ले गया। इधर से रामप्रकाश दोनों की झुझलाहट देख सका। सड़क नजर नहीं आ रही थी, क्योंकि उस पर दो-दो इंच पानी था और मटमैलेपन के साथ बह रहा था। रामप्रकाश ने दोनों को आर्यसमाज रोड की ओर बढ़ते देखा।

जब वे निगाहों के दायरे से बाहर होने लगे, तो उस से न रहा गया। वह उठा और काउण्टर पर झुकता हुआ उन्हें देखने लगा। आर्य-समाज रोड आने से पहले ही वे बाई ओर की एक बाई-लेन में मुड़ गए···छज्जों इत्यादि के नीचे से गुजरते हुए या कभी कोई और चारा न होने पर खुली बारिश में निकल आते हुए। 'हुंह ! जा रहे होंगे कहीं !' रामप्रकाश मन-ही-मन बुदबुदाया, फिर अपने काम में मन लगाने लगा।

ट्रैफिक कण्ट्रोलर द्वारा नियन्त्रित आवागमन कभी सड़क पर एकत्र हो जाता, कभी आगे सरकता नजर आता। हार्न की तरह-तरह की आवाजें बारिश की छरछराहट के साथ मिल कर सुनाई पड़ रही थीं। एक आवाज ठीक ड्रग-स्टोर के सामने सुनाई पड़ी। रामप्रकाश ने उधर देखा। वह एक टैक्सी थी। उस की पीली छत भीग कर चमक-सी रही थी। बारिश की चिक में से होती हुई रामप्रकाश की दृष्टि टैक्सी में

बैठी सवारियों पर चली गई। उस ने उसी क्षण निर्णय कर लिया। गुड्डो और सुदर्शना की मित्रता समाप्त हो जानी चाहिए। कैसे ?—यह सोचा जाना बाकी था। टैक्सी में उस ने उस युवक को सुदर्शना पर कुछ इस तरह निढाल होते देखा कि···आवेश में आ कर वह जल्दी-जल्दी उंगलियां चलाने लगा···ट्रैफिक कण्ट्रोलर का लाल साइन हरा हो गया। टैक्सी के सामने एक स्कूटर आ कर घरघराने लगा। स्कूटर पहले और उस के बाद टैक्सी गुरुद्वारा रोड का चौक पार करने के लिए निगाहों के दायरे से बाहर निकल गए।

करीब आधे घण्टे के बाद (बारिश उसी तरह मूसलाधार थी) रामप्रकाश का आवेश कुछ शान्त हुआ। उस ने गौर किया कि उसे इतने संकुचित विचारों का नहीं होना चाहिए। वह युवक सुदर्शना का मंगेतर हो सकता है। प्रेमी भी हो तो क्या हर्ज है ? रामप्रकाश ने टाइप-राइटर से जूझते हुए सब कुछ भूल जाने का प्रयास किया।

सड़क पर छह-छह इंच पानी बह रहा था। दिल्ली की नाली-व्यवस्था छोटे पैमाने पर होने के कारण जरा-सी बारिश होते ही सड़कों और निचाइयों में पानी जमा हो जाता था। आज तो वैसे भी बहुत ज्यादा बारिश थी। बादलों में बार-बार हो रही मेघ-गर्जना अब डरावनी लगने लगी थी। सात बजे तक जब यही हाल रहा तो रामप्रकाश सोचने लगा कि वह घर कैसे पहुंचेगा। उस की बरसाती की दो दीवारों में सीलन उतरने लगी थी। आज वे दीवारें और भी गीली हो गई होंगी और कमरे में अजीब-सी गन्ध भरी होगी। सड़क पर इतना पानी था कि वह ड्रग-स्टोर की सीढ़ियों तक आ चुका था। चौक में दो स्कूटर ठण्डे हो गए थे। नंगे-अधनंगे बच्चों की भीड़ धक्के देती हुई उन्हें सड़क के किनारे ला रही थी। बच्चे चिल्ला रहे थे और स्कूटरों के ड्राइवर अपनी सीट पर बैठे, झेंपते-मुस्कराते हुए इधर-उधर देख रहे थे।

इसके करीब पन्द्रह मिनट बाद बारिश रुक गई।

× × ×

रामप्रकाश साढ़े दस बजे घर पहुंचा। कीचड़ के छींटों से उस के कपड़ों का बुरा हाल था। बाल भीग कर खिचड़ी हो गएथे। मूड उस का पहले से ही खराब था, तिस पर बारिश हुई होने से असंख्य बरसाती कीड़े कमरे के अन्दर और चौगान में भी खामोशी से मंडरा रहे थे। तीन छिपकलियां दीवार की छाती से अपने पेट चिपकाए हुए, लम्बी-लम्बी जीभें मार कर कीड़ों का सफाया कर रही थीं। ज्यों ही रामप्रकाश कमरे में आया, एक बारीक कीड़ा उस की नाक में चला गया। वह छींक कर नल की ओर भागा।

खाना (जो ठण्डा हो चुका था) खाते समय रामप्रकाश के मुंह में दो बार कीड़े चले गए। वह झींखता रहा कि दरियागंज की सड़क पर लटकते गमले लगाने, उन पर रोज पालिश करवाने और रंगीन फूल खिलाने के लिए तो कारपोरेशन के पास पैसे हैं, लेकिन कीर्तिनगर की नालियां बन्द करवाने के लिए नहीं है। इस के बाद रामप्रकाश चुप हो गया, क्योंकि उसे वह टैक्सी याद आ गई। उस ने गुड्डो की ओर देखा। वह सिर झुका कर रोटी में से गस्सा तोड़ रही थी।

:: 3

सुबह जब रामप्रकाश शेव कर रहा था, सुदर्शना आ पहुंची। वह उसी तरह की पोशाक में थी, जिस में रामप्रकाश ने उस के होने की आशा रखी थी। वह शेव कर चुका। सारा सामान उठा कर वह नल के पास बाहर चला गया, ताकि ब्रुश, ब्लेड इत्यादि धो सके। उसे अच्छा लगा कि वह सुदर्शना के सामने से उठ आया है। 'हुंह! मास्टरनी बनी फिरती है।' उसने सोचा, 'सड़कों पर कूल्हे मटकाने से तो फुरसत मिलती नहीं और देश की अगली पीढ़ी का निर्माण करने चली हैं!'

उस ने ब्रुश धो कर उसका गीलापन झाड़ने के लिए जोर का झटका दिया, जिस से धूमकेतु की दुम की तरह चौगान पर छींटों के निशान फैल गए। उसी समय सुदर्शना और गुड्डो अपने स्कूल की कोई बात करती हुई बाहर निकलीं और जीना उतरने लगी। गुड्डो आगे थी। सुदर्शना पीछे। रामप्रकाश ने गौर किया कि सुदर्शना की चुस्त कमीज पीछे से करीब आधा इंच फट गई है। शलवार का सफेद कपड़ा दीख रहा था। घृणा का कफ़ मन-ही-मन घोटते हुए रामप्रकाश ने दूसरी ओर देखा।

ज़ीना उतर कर गुड्डो और सुदर्शना सडक पर आई और शादीपुर डिपो की दिशा में जाने लगी। बीस कदम मुश्किल से चल पाई थीं कि

दिल्ली परिवहन की एक लाल बस झपाके के साथ उन के बहुत करीब से गुजरी। बस के एग्सास्ट से इतना काला धुआं निकल रहा था कि उस के बादल में दोनों लड़कियां कैद-सी हो गई। गुड्डो ने नाक पर रूमाल रख लिया। बड़ी मुश्किल से वह अपनी खांसी रोक पाई। सुदर्शना ने भी सांस रोक रखी थी। काले धुएं का वह बादल सड़क की कगार पर बहुत दूर तक लेट गया था। बचने के लिए वे सड़क की दूसरी ओर चलने लगीं। गुड्डो ने रूमाल हटाया। बादल को देखते हुए उसने आश्चर्य व्यक्त किया, "ये डी०टी०यू० की बसें तो लोगो की जान ले कर मानेंगो। मैं ने कही पढ़ा था कि बस का धुआं बहुत खतरनाक होता है। उस का कार्बन-मोनो-आक्साइड सांस में जा कर ··"

"सब पैसा-खाऊ है।" सुदर्शना ने बीच में टोकते हुए कहा, "जनता का ध्यान किसी को···"

उसी समय एक और बस बहुत पास से गुजरी। दोनों फुरती के साथ किनारे न हो गई होतीं तो उन्हें चोट पड़ सकती थी। "रास्कल!" बस के पिछवाड़े से लटक रहे सिनेमा के एक पोस्टर को, जो खड़खड़ करता हुआ तेजी के साथ दूर जा रहा था, देखते हुए सुदर्शना ने कहा। दोनों ने अपने को सड़क से काफी परे कर लिया। गुड्डो बोली, "लेकिन ये बसें आज इधर से कैसे गुजर रही हैं? यह तो इन का रूट नहीं है। इन को तो मोतीनगर होते हुए गुजरना चाहिए।"

सुदर्शना ने बताया कि उधर की सड़क में मरम्मत शुरू हुई है, क्योंकि उस में बहुत गड्ढे पड़ गए है। झुग्गियों की बस्ती पाण्डुनगर वाली पगडण्डी से हो कर कम समय मे शादीपुर पहुंचा जा सकता था, लेकिन बारिश के कारण वह रास्ता कीचड़ वाला हो गया था। पक्की सड़क से होती हुई ये इण्डस्ट्रियल एरिया के रास्ते डिपो की ओर बढ़ती रहीं। रेलवे क्रासिग पार करने के बाद शादीपुर डिपो की विशाल इमारत दिखाई पड़ी।

घृणा का कफ़ मन-ही-मन घोटते हुए रामप्रकाश ने दूसरी ओर देखा। कहा, "सुदर्शना कुछ दिन पहले एक युवक के साथ नजर आई थी। दोनों एक टैक्सी में थे और···और गड़बड़ कर रहे थे।"

शान्ति ने पति की ओर पलके उठाई, "क्या मतलब ?"

"मतलब क्या हो सकता है ? वही जो मै कह रहा हू। मैं ने पहले भी एक बार टोका था कि हमारी गुड्डो को उस के साथ ज्यादा नहीं रहना चाहिए।"

शान्ति विचार-मग्न हो गई। बोली, "कह नही सकती, सच्चाई क्या है, लेकिन दो मकान छोड़ कर जो मुलतानी रहते है, उन के यहां भी मुझे इसी को ले कर टोका गया था। बात दरअसल यह है कि··· गुड्डो एक दिन खुद ही बता रही थी। यह सुदर्शना बहुत खुले स्वभाव की है। वैसे भी, पंजाबियों में खुलापन ज्यादा होता है। सुदर्शना का किसी के साथ···अ · प्यार चल रहा है। कोई कपूर कर के है—उसी के साथ वह अक्सर दिखाई पड़ती है। सुदर्शना के घर वालो को अभी तक मालूम नही है लेकिन कब तक छिपा रहेगा···"

रामप्रकाश तसमें कसता हुआ बोला, "अच्छा ? लव-अफेयर है ? लेकिन इस से सड़कों पर नाचने की छूट थोड़े ही मिल सकती है !"

वह जेब मे पेन खोंसता हुआ कहने लगा, "ऐसा है, मै इश्क-विश्क को बुरा तो नही कहता, लेकिन दिल्ली में इश्कबाजी महज़ एक फैशन या शुगल है। आधुनिकता यहां के लोगों को अभी पच नहीं पाई। इसी लिए सब को आधुनिक··· का कब्ज़ है। नया सूट तो पहन लिया, लेकिन अन्दर मैला जनेऊ मौजूद मिलेगा। इसी लिए मै चिढ़ता हूं। इस से अच्छा तो मै हूं जो एक हद तक पुराने ही विचारों का हूं। मुझ से तुम लिख कर ले लो। अगर सुदर्शना को कीर्तिनगर के चार-पांच और लोगों ने भी—क्या नाम बताया तुम ने ? कपूर ?·· अगर मिस्टर कपूर के साथ देख लिया, खास कर उस हालत में, जिस में मैं ने उसे देखा है, तो यकीन जानो, सुदर्शना पूरे कीर्तिनगर की सब से बदनाम लड़कियों

में से एक होगी।"

"जो आगे होगा, उस का इलाज भी आगे मिलेगा, अभी नहीं। दोनों एक ही स्कूल में काम करती हैं, एकाएक उनका साथ कैसे छुड़ाया जाए? इस के अलावा, पड़ोस का भी मामला है। क्या आश्चर्य यदि सुदर्शना और कपूर की शादी ही हो जाए। तब सारी बद खत्म हो जाएगी। इस के अलावा, दुनिया में किस-किस की परवाह करते फिरोगे?"

"दूसरों की न सही, खुद अपनी तो करनी चाहिए।" रामप्रकाश ने कहा, "अच्छा, इस पर फिर कभी बात करेंगे, अभी तो मुझे देर हो रही है।"

वह सीढ़िया उतरने लगा।

रेलवे क्रासिंग पार करने के बाद गुड्डो और सुदर्शना को शादीपुर डिपो की विशाल इमारत दिखाई पड़ी। इक्कीस नम्बर की बस, जिस में बैठने की काफी जगह भी थी, सामने तैयार खड़ी थी। दोनों उस में चढ़ीं। मौज में आ कर सुदर्शना सीट पर जरा धचके के साथ बैठी। मोटा गद्दा कुछ दबा। सुदर्शना ने गद्दे और अपने जिस्म के बीच कपड़ा फटता महसूस किया" गुड्डो पास आ बैठी थी और पर्स खोल कर टिकट के लिए खुदरे पैसे ढूढ़ रही थी।

"गुड्डो!"

गुड्डो ने सुदर्शना की ओर देखा। वह कुछ घबराई हुई थी। "क्या है?" गुड्डो ने पूछा। सुदर्शना एकाएक समझ न पाई कि कैसे बताए। उस ने सिर घुमा कर पीछे देखा। बस में दस-बारह लोग बैठे थे, जो इतनी दूर की सीटों पर थे कि उन से बचा कर बात कही जा सकती थी। सुदर्शना ने आगे की सीटों पर भी निगाह दौड़ाई। वे सभी सीटें खाली थीं। ड्राइवर और कण्डक्टर अभी नहीं आए थे। गुड्डो ने उस की परेशानी पर अचरज करते हुए फिर पूछा, "क्या बात है?"

"अभी जो मैं यहां बैठी न ?···" सुदर्शना रुक गई। वह झेंपने लगी।

"तो ?"

"बैठते ही·· गुड्डो, अब क्या करेंगे ? मेरी कमीज पीछे से फट गई है।" सुदर्शना ने शरमाते हुए दोनों हथेलियों में अपना चेहरा छिपा लिया, फिर कनखियों से गुड्डो की ओर देखती हुई वह इस तरह हंसने लगी, मानो इस स्थिति का उसे मज़ा भी आ रहा हो। झटके के साथ वह सीधी तन कर बैठ गई।

गुड्डो को हंसी आने लगी। उस ने सोचा कि सुदर्शना बुरा मान जाएगी, लेकिन उस की हंसी रुक नहीं रही थी। उस ने कहा, "मैं ने परसों ही टोका था कि तुम मोटी हो गई हो, कमीज जरा ढीली करवा लो। बनवाई भी तो इतनी फिट है कि एक इच की भी गुजाइश···" वाक्य अधूरा रख कर गुड्डो ने अपनी हंसी उन्मुक्त छोड़ दी। सुदर्शना ने मीठे गुस्से से उस की ओर देखा, फिर कहा, "तुम हंसती ही रहोगी या···"

"मैं क्या करूं ? क्या कर सकती हूं ? एक ही इलाज है कि · "

"बताओ···जल्दी बताओ···"

"ठाठ के साथ बस से उतरिए और बड़े आराम से पैदल घर चली जाइए—कमीज बदलिए और स्कूल आ कर प्रिंसिपल को सफाई देती रहिए कि इतनी देर क्यों हुई !"

"हाय ! पैदल ?"

"नहीं तो क्या हवाई-जहाज में जाओगी ?" गुड्डो को फिर हंसी आने लगी। उसी समय सामने के दरवाजे से एक बूढ़ा बस में चढ़ा। उस के इरादे से लगा कि वह इन के पास वाली किसी सीट पर बैठना चाहता है। तब इस विचित्र स्थिति पर दोनों की बातचीत कैसे हो पाएगी ? लेकिन बूढ़ा पीछे की सीटों की ओर चला गया। सुदर्शना ने एक बार और पीछे की सभी सवारियों को देख लिया। गुड्डो के कान के पास मुंह ला कर उस ने फुसफुसाते हुए कहा, "तुम भी उतरो।"

"अपने साथ मेरा भी मजाक उड़वाओगी ?"

"मैं अकेली कैसे जाऊं ?"

"पैदल।" गुड्डो ने हंस कर कहा, "यहां से तो स्कूटर भी न मिलेगा।"

सुदर्शना ने दोनों होठों को शैतानी से एक-दूसरों पर दबा कर ठीक सामने की ओर देखा। फिर उसे भी हंसी आने लगी। उस ने एक हाथ सीट और अपने बीच सरकाते हुए टटोलना चाहा कि कमीज कितनी फटी है। सुदर्शना का चेहरा लाल होने लगा। उस ने गुड्डो की पिंडली पर जोर से चिकोटी काटी और कहा, "अब ?"

गुड्डो ने गम्भीर होने की कोशिश की। हंसी तो आ रही थी लेकिन हंसना कोई उपाय नहीं था। सुदर्शना बोली, 'कमीज इतनी फट गई है कि···मैं उठ भी नही सकती।"

"उठना तो पड़ेगा ही।"

उसी समय बस में दो-तीन लोग चढ़े और इन के अगल-बगल की सीटों पर बैठ गए। दोनों के लिए यह समझना मुश्किल हो गया कि बातों में सांकेतिकता कैसे लाई जाए। ड्राइवर और कण्डक्टर बस की ओर बढ़ते दिखाई दिए। बस रवाना होने से पहले ही निर्णय ले लेना था।

कण्डक्टर ने बस का बोर्ड बदला। तब तक ड्राइवर अपनी सीट ले चुका था। गुड्डो ने सुदर्शना की ओर देखा। सुदर्शना झुझलाती हुई बुद-बुदाई, "कुछ समझ में नहीं आ रहा···" उस ने अपने होंठ काटे। ड्राइवर ने बस का एंजिन चालू कर दिया। गुड्डो को फिर से हंसी आनी शुरू हुई, लेकिन वह किसी तरह निगल गई। बस ने झटका दिया। वह चल पड़ी।

इन्हें वेस्ट पटेलनगर के स्टॉप पर उतरना था, जो मुश्किल से दो मिनट के फासले पर था। गुड्डो ने कहा, "वेस्ट में कोई-न-कोई जान-पहचान का मिल जाएगा।"

सुदर्शना ने निरीहता से उस की ओर ताका।

"तुम्हें किसी ऐसी जगह उतरना चाहिए, जहां कोई जान-पहचान का न हो। वहां से स्कूटर या टैक्सी ले कर घर वापस। स्कूल तो ऐसी हालत में तुम चलने से रहीं।"

गुड्डो का कहना सच था, लेकिन सुदर्शना को यह अच्छा न लगा कि ऐसे मौके पर भी वह उस के साथ रहने की तत्परता नहीं दिखा रही थी। सुदर्शना ने पूछा, "वेस्ट में उतर जाओगी ?"

"तुम जानती ही हो, प्रिंसिपल मुझ से कितनी नाराज है। उस दिन मैं ने एक स्टूडेण्ट को चपत क्या लगा दी, आफत आ गई। अगर बिना एप्लीकेशन के गायब रहूंगी या लेट पहुंचूगी तो न मालूम क्या-क्या सुनना पड़ेगा।" गुड्डो ने गम्भीरता से कहा, किन्तु उसे लगातार हंसी दबानी पड़ रही थी।

वेस्ट पटेलनगर के स्टॉप पर बस रुकी। गुड्डो उठने लगी। दरअसल वह सुदर्शना को छका रही थी, क्योंकि इतना तो वह समझती ही थी कि ऐसे अवसर पर सुदर्शना उसे जाने न देगी। उठने की कोशिश करते ही सुदर्शना ने उस का हाथ पकड़ लिया और रोष तथा आग्रह के साथ आंखें बड़ी करते हुए कहा, "बैठ !"

"नहीं, मैं जाती हूं। तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।" गुड्डो ने कहा, लेकिन वह सुदर्शना का झटका अच्छी तरह सम्भाल न पाई और सीट पर गिरने लगी। आसपास के सभी लोगों का ध्यान उस की ओर आकर्षित हो गया। बस में इतनी सवारियां आ गई थीं कि अब खड़े रहने की भी जगह नहीं थी। एक लड़की लगातार इस ताक में थी कि अगर गुड्डो सचमुच यहां उतरे तो उस की सीट हथिया ली जाए। सुदर्शना ने गुड्डो की बांह को फिर से जोर का धक्का दिया। गुड्डो मुस्कराती हुई बैठ गई। दोनों को हंसी आन लगी।

"लेकिन हम उतरेंगी कहां ?" गुड्डो ने चुटीले स्वर में पूछा।

कनाट-प्लेस आने तक तो उतरने का सवाल ही नहीं था, क्योंकि

वहां तक कहीं भी, कोई भी परिचित या रिश्तेदार दिखाई पड़ सकता था। सुदर्शना ने अन्दाज़ा लगाया कि कनाट-प्लेस से आगे किस जगह कम-से-कम परिचित बसते या आते-जाते हों। इस के अलावा एक और बात पर भी ध्यान रखना आवश्यक था कि जहां उतरा जाए, वहां तुरन्त स्कूटर या टैक्सी मिलनी चाहिए। कमीज जहा से और जितनी फटी थी, उस के बाद सड़क पर खड़ी हो कर स्कूटर-टैक्सी का इन्तजार नहीं किया जा सकता था। "एडवर्ड पार्क कैसा रहेगा ?" सुदर्शना ने पूछा।

"तुम्हीं सोचो, मैं क्या जानू ?"

सुदर्शना नाराज होने लगी. "क्या तुम्हें इसी लिए साथ रखा है कि हर बार 'मैं क्या जानूं' कह कर टाल दो ?"

"लेकिन बताओ न, मैं क्या कर सकती हूं इस मामले में ?"

"मै पार्क के कटघरे से टिक कर खड़ी हो जाऊंगी। तुम स्कूटर बुला लाना। दरियागंज इतना पास है कि स्कूटर मिलने में दिक्कत न होगी।"

"अच्छा, अब कोई और बात करो।"

सुदर्शना शरमा गई।

रामप्रकाश बिल्कुल ठीक समय पर ड्रग-स्टोर पहुंचा। विदेशी दवाओं के सम्बन्ध में कुछ जरूरी खत टाइप करने थे। उस ने टाइप-राइटर का केस खोला। पाठक, जो उस का सहयोगी था, करीब आया और मुस्कराने लगा।

"क्या बात है ?" रामप्रकाश ने उस की ओर देखा।

"परसों शाम आप का कोई प्रोग्राम तो नहीं है ?"

"नहीं। क्यों ?"

"ठीक है फिर, हम-आप पिक्चर चलेंगे।"

"कौन-सी ?"

"मारिलीन।"

"अच्छा ? ···लग गई है ?"

"हां, परसों दूसरा दिन होगा। 'प्लाज़ा' पर।" कह कर पाठक ने रामप्रकाश को हल्के से आंख मारी। वह तीस साल का गैर-शादीशुदा युवक था और कहता था. "मुझे अपनी पसन्द की लड़की ही नहीं मिलती।" खैर, यह तो (रामप्रकाश के अनुसार) कहने-कहलवाने की बात थी। असली कारण चाहे जो रहा हो, नतीजा यही सामने था कि कि वह अब तक गैर-शादीशुदा था और परेशान रहता था। ड्रग-स्टोर में रामप्रकाश की सब से ज्यादा उसी के साथ पटती थी। उन दोनों की दोस्ती का आधार था दिल्ली की फैशनपरस्ती, जिस का रामप्रकाश कट्टर आलोचक था और पाठक एक कट्टर दीवाना। एक-दूसरे से अपनी बात मनवा लेने की दोनों में होड़ मची रहती। इसी लिए एक-दूसरे के बिना उन का काम नहीं चलता था।

'मारिलीन' फिल्म के बारे में रामप्रकाश को पाठक ने सारी सूचनाएं पहले दे रखी थीं। 'समथिंग हैज गाट टू गिव' फिल्म के लिए अभिनेत्री मारिलीन मनरो ने एक स्नान-दृश्य में अपने नग्न चित्र खिचवाए थे, जिस के बाद उस ने नीद की गोलियों से आत्म-हत्या कर ली थी। उस के फिल्मी जीवन के प्रारम्भ से अब तक की सभी प्रमुख फिल्मों के दृश्य काट कर, मारिलीन की याद में एक डाक्यूमेण्ट्री फिल्म बनाई गई थी। भारतीय सेन्सर ने 'समथिंग हैज़ गाट टू गिव' के उन नग्न दृश्यों को भी पास कर दिया था। 'मारिलीन' पहले बम्बई में रिलीज़ हुई थी। पाठक के एक मित्र ने वहां से सूचना भेजी थी कि फिल्म में कोई खास बात नहीं है, लेकिन उन स्नान-दृश्यों के कारण उसे देखना चाहिए।

पाठक ने चुनौती दी थी कि रामप्रकाश ऐसे दृश्यों वाली फिल्म देखना पसन्द न करेगा। मन की चोरी यह थी कि रामप्रकाश एक उलझन से छुटकारा पा गया था। विचारों से वह चाहे जितना भी आदर्शवादी था, लेकिन इस फिल्म को वह देखना चाहता था। पाठक की

चुनौती से उस के पास अब कहने को हो गया था कि मैं तो पाठक के कारण देख रहा हूं।

बस एडवर्ड पार्क के करीब पहुंच रही थी और सुदर्शना का चेहरा लाल होने लगा था। पहले गुड्डो ने अपनी सीट छोड़ी। उस के बाद सुदर्शना बैठी-बैठी ही सरकती हुई सीट के किनारे आ गई। बस रुकी। गुड्डो उतरी। सुदर्शना बड़ी स्फूर्ति के साथ सीट छोड़ कर भीड़ में रास्ता बनाती हुई उतर गई। उस का चेहरा गम्भीर था। उस ने एक बार भी पलट कर पीछे न देखा, हालांकि उस के कानों में फुसफुसाहटों और धीमी हंसी की आवाजें पड़ रही थीं। उतर कर वह झटपट पार्क के कटघरे की ओर बढ़ गई और पलट कर, सड़क की ओर मुंह कर के, कटघरे से पीठ टिकाए खड़ी हो गई। निगाहें झुकी हुई थीं, कान तेज हो गए थे। उस के और बस के बीच काफी दूरी थी, फिर भी उस ने सीटी की एक आवाज सुनी। वह खिसियाती हुई जरा हंसना चाहती थी, लेकिन उसी तरह नीचे देखती हुई गम्भीर बनी रही। गुड्डो उस के बहुत पास आ कर खड़ी हो गई। बस चल पड़ी। बस या उस से उतरी सवारियों की ओर गुड्डो ने भी भूल कर न देखा। उतरी सवारियों में से दो युवक आसपास मंडरा रहे थे। उन के ताने सुन कर सुदर्शना को, साथ गुड्डो को भी बहुत शर्म आ रही थी, लेकिन जब तक युवक चले न जाएं, पार्क के कटघरे से टिक कर खड़े रहने के अलावा और कुछ नहीं हो सकता था। दोनों खामोश रहीं। अब गुड्डो को हंसी नहीं आ रही थी। जोर की आखिरी सीटी बजा कर दोनों युवक चलते बने। सुदर्शना बोली, "प्लीज, अब जल्दी स्कूटर ले आ।"

गुड्डो ने चौराहा पार कर स्कूटर-स्टैण्ड की तरफ कदम बढ़ाए। लगभग दस मिनट बाद वह स्कूटर ले कर लौटी। स्कूटर में बैठे-बैठे ही उस ने सुदर्शना को पुकारा, "आ जाओ।" सुदर्शना लगभग दौड़ कर स्कूटर में बैठ गई। घरघरा कर स्कूटर ने नीला धुआं उगला। वापस मुड़

कर वह दरियागंज की चौड़ी सड़क पार करने लगा। सुदर्शना ने शिकायत-भरे स्वर में कहा, "वे लड़के कितने बदतमीज थे !"

गुड्डो बोली, "उन को क्यों दोष देती हो ? ऐसी हालत में घूमोगी तो···"

"मैं ने जान-बूझ कर थोड़े ही ··"

"किस ने कहा था, इतनी चुस्त···"

"अच्छा, अब चुप रहो।"

झण्डेवालां के पास सड़क बहुत ऊबड़-खाबड़ थी। स्कूटर वाले ने गति धीमी कर ली, लेकिन फिर भी इतने धक्के लग रहे थे कि गुड्डो के पेट में दर्द की गोलियां-सी बनने लगीं। वह चुप रही। सुदर्शना को मन-ही-मन कोसते हुए उस ने दोनों हथेलियों से पेट दबा कर दर्द कम करना चाहा, लेकिन सफलता न मिली। सुदर्शना ने सहानुभूति से पूछा, "दर्द हो रहा है ?"

"ओफ ! इतने गड्ढे तो कसबों की सड़कों में भी नहीं होते। स्कूटर वाले, जरा धीमे।"

स्कूटर थोड़ा और धीमा हो गया। लिंक रोड आने पर गति फिर बढ़ा दी गई। एक बस ने करीब से गुजरते हुए इतना धुआं छोड़ा कि स्कूटर काफी देर तक धुएं के भीतर चलता रहा। दोनों ने अपनी नाक पर रूमाल रख लिया, लेकिन गन्ध आती रही। हवा की पारदर्शकता आधी भी न रही थी।

:: ४

दूसरे दिन सूर्य दिखाई न दिया। जो झड़ी लगी हुई थी, वह रुकती न रुकती कि फिर से जारी हो जाती। दिल्ली की अधिकाश सड़कों पर घुटनों तक पानी भर गया। पुरानी दिल्ली के अनेक पुराने मकान ढह गए, जिस से कइयों ने अपनी जान से हाथ धोया। पाठक रामप्रकाश के पास आ कर कहने लगा कि कल अगर फिल्म के समय ऐसी ही बारिश हुई तो क्या किया जाएगा।

दिन में भी बिजली की कौध फैल जाती।

रात को लगभग आठ बजे बारिश रुकी और साढ़े नौ बजे रामप्रकाश को बस मिल पाई। उसे लगातार डर लग रहा था कि बस रास्ते में खराब हो जाएगी। इत्तफाक की ही बात थी कि वह खराब न हुई। रामप्रकाश बस से उतर कर सड़क के मोड़ तक पहुंचा-न-पहुंचा कि अचानक पानी बरसने लगा।

चारों ओर घुप अन्धकार। सड़क की बिजली गुल हो गई थी। आसपास के घरों से भी इस लिए रोशनी नहीं आ रही थी कि लोगों ने खिड़कियां-दरवाजे बन्द कर के परदे खींच दिए थे। रामप्रकाश ने बारिश से बचने की कोशिश न की। तेज हवाओं और घनी बौछारों की ऊबाने वाली अटूट आवाज सुन कर वह इतना बोर हो चुका था कि उस ने भीग जाना चाहा। दोनों हाथ पेंट की जेब में डाल, सिर झुकाए

वह चलता रहा। सामने से एक कार आ रही थी, जिस की रोशनी ने उस को चुंधिया दिया। वह एक ओर हट कर खड़ा हो गया। कार के पास आने पर उस ने आंखें बन्द कर लीं। कार चली गई। उस ने आंखें खोलीं और सामने देखने की कोशिश की। अंधेरा · अंधेरा···

सहसा एक आशंका ने उस के मन में सिहरन भर दी। उस ने सड़क की उस जगह को ठीक-ठीक पहचानने की कोशिश की। सामने ही यहां एक मैनहोल होना चाहिए। यदि उस का लोहे का ढक्कन खोल कर वैसा ही छोड़ दिया गया है तो ··दिल्ली में इतनी सावधानी कौन बरतता है कि खुले मैनहोल की चेतावनी देने के लिए कोई व्यवस्था की जाए। लाल बत्ती, झण्डी या बांस का अस्थायी घेरा···कुछ भी। रामप्रकाश को यही लगा कि आगे चलते ही वह उस मैनहोल में गिरने वाला है। तब वह···ओह, वह मर जाएगा। रामप्रकाश ने आंखों को सिकोड़ा और अंधेरे में देखा। सामने इतना पानी बह रहा था कि मैनहोल को देखना असम्भव था। बहाव का पाट इतना चौड़ा था कि उसे कूद कर पार नहीं किया जा सकता था। पानी में पैर रख कर आगे बढ़ते ही यदि रामप्रकाश मैनहोल में चला गया···रामप्रकाश ने तय किया कि सड़क को किनारे की बजाय बीच से पार किया जाए।

वह बीच-सड़क में आया ही था कि पीछे से एक कार का हार्न बज उठा। ड्राइवर ने सिर बाहर निकाला और गाली देते हुए कहा, "इतना रास्ता खाली पड़ा है। बीच में क्यों चलते हो?"

रामप्रकाश ने मुड़ कर पीछे न देखा। मन-ही-मन कुढ़ता हुआ लेकिन सामने की सीध में देखता हुआ वह सड़क पार करता रहा—मस्ती के दिखावे के साथ। कार उस के बगल से कट कर आगे चली गई। पीछे से उस की लाल रोशनियों का जोड़ा अंधेरे में रामप्रकाश को ताकता रहा, जब तक कि रामप्रकाश ही दूसरी दिशा में न देखने लगा।

सुबह अब एक ही बार चाय बनती थी। रामप्रकाश चाय का कप सामने रखे बिना अखबार पढ़ रहा था, "···सुना?···कल की बारिश

ने पन्द्रह मकान गिरा दिए···सात मौतें हुईं, अनेक घायल···घायलों की हालत गम्भीर···एक समूचा परिवार मौत की नींद में···साहिबी नदी में बाढ़···भई, तुम तो कुछ सुनती ही नहीं···"

"सुन तो रही हूं।" शान्ति ने कहा।

"क्या खाक सुन रही हो ? न हां, न हूं। अरे ! वाह, खूब रही··· सुनो।" वह रुक गया। गुड्डो और बिल्लू की उपस्थिति में यह नहीं सुनाया जा सकता था···ये उस पोशाक के समाचार थे जिसे पहन कर नहाते समय महिलाओं के उरोज पूर्ण नग्न हो जाते थे।··· कैलिफोर्निया के डिजाइनर रूडी गर्नरिच और उस की खूबसूरत माडल पेगी माफिट ने पूरे विश्व में तहलका मचा रखा था। अखबार में रूडी के भाषण का एक अंश प्रकाशित हुआ था।

रूडी ने कहा था कि मैं ने यह पोशाक बेचने के लिए नहीं बनाई थी। मैं ने तो इसे बना कर मात्र एक भविष्यवाणी करनी चाही थी कि कुछ ही वर्षों में महिलाएं सार्वजनिक स्नान के समय अपने उरोज नग्न करने लगेंगी। ऐसा आभास मुझे इस लिए हुआ कि महिलाओं की अंगिया दिन-ब-दिन छोटी होती जा रही है। भविष्य की ओर इशारा करने के मात्र एक प्रयास का इतना स्वागत किया जाएगा, यह मैं ने सोचा भी नहीं था। फैशन के साथ-साथ चलने वाली कई महिलाओं ने जब टापलेस बाथिंग सूट के आर्डर भेज दिए, तो मुझे उस का व्यावसायिक स्तर पर निर्माण करना पड़ा।

रामप्रकाश पढ़ता और सोचता रहा···आज शाम ही तो उसे पाठक के साथ वह फिल्म देखनी है···उस ने खिड़की में से नज़र आ रहे आकाश के टुकड़े की ओर देखा···हुं···बारिश थमी हुई थी···धूप का निखरना अच्छा लग रहा था···रामप्रकाश ने अन्य समाचारों पर दृष्टि दौड़ाई··· अकस्मात् उस ने वह पृष्ठ खोल लिया, जिस में मारिलीन मुनरो की उस फिल्म का विज्ञापन हो सकता था। था विज्ञापन। उस ने उसे अच्छी तरह पढ़ा, मारिलीन की जो नन्ही-सी तसवीर छपी थी, उसे अच्छी

तरह देखा। उसे झुरझुरी महसूस न हुई। 'होनी भी नहीं चाहिए··· इस उम्र में इतनी जल्दी उबल जाना अच्छा थोड़े ही है···' उस ने उन पृष्ठ को मूद कर फिर से प्रमुख समाचारों पर निगाह दौड़ाई। वह ढांसा बांध की खबरों को चूक गया था। वह ध्यान से पढ़ने लगा···

दिल्ली-पंजाब की सीमा पर प्रायः दो मील लम्बे ढांसा बांध का निर्माण पंजाब की साहिबी नदी की सालाना बाढ़ों को काबू में लाने के लिए किया गया था। इस वर्ष इतनी बारिश हुई थी कि बांध से रुका पानी अनेक मीलों तक फैल गया था। वह खतरे के निशान से आठ फीट ऊपर हो चुका था और इस का पूरा भय था कि समूचा बांध ही फट कर बह जाएगा। सिंचाई मंत्री ने निरीक्षण कर के कहा था कि बांध में एक दरार काट कर पानी कम कर दिया जाए।

"सुना ? ढांसा बांध में ७५ फीट की दरार काटी जाएगी · नजफगढ़ विकास-केन्द्र के साठ से भी ज्यादा गांव डूब चुके हैं।" रामप्रकाश बोला। शान्ति ने उस की ओर आंखें उठाई, "दरार ?"

उसी समय ज़ीने से आवाज आई, "गुड्डो !" सुदर्शना आ पहुंची थी। उस ने कमरे में प्रवेश किया, "तैयार हो या देर है ?" रामप्रकाश ने गौर किया था कि पिछले कुछ दिनों से सुदर्शना साड़ी पहन कर आती है और साड़ी को भी बहुत चुस्ती से लपेटती नहीं है। उस ने उस की ओर एक निगाह देख लिया। वह चुपचाप अन्य पृष्ठों पर दृष्टि दौड़ाने लगा। गुड्डो ने उत्तर दिया था, "बस, एक मिनट।" रामप्रकाश को याद आ गया···उस दिन लगभग आधे इंच तक फटी हुई सुदर्शना की कमीज ···उसे बुरा लगा। वह इधर-उधर कुछ ढूंढ़ने लगा। उस ने तय करना चाहा कि क्या ढूंढ़ना चाहिए। याद आया, अभी शेव नहीं की है।

बिल्लू स्कूल चला गया। गुड्डो और सुदर्शना भी जा चुकीं, तो रामप्रकाश ने शान्ति को बताया, "अमरीकी औरतों ने···तुम ने पढ़ा ही होगा···"

"क्या ?"

"वहां औरतों के नहाने की ऐसी पोशाक बनी है जिसे पहनने पर ···अ···ये दोनों नंगे रहते हैं···" उस ने खुद अपनी छाती की ओर इशारा किया, फिर वह झेंप गया और हंसने लगा। शान्ति को भी हंसी आ गई। बोली, "तुम ने एक दिन बताया तो था, वहां ऐसे क्लब भी हैं जिन में सभी बिना कपड़ों के आते हैं।"

"हां, न्यूडिस्ट क्लब। बड़े-बड़े कैम्प भी लगते है। कुछ टापू भी इन लोगों ने घेर रखे हैं। वहां जाना हो तो सब से पहले कपड़े उतारिए।"

"लेकिन इस से फायदा ?"

"उन का कहना है कि आदमी नंगा पैदा हुआ है, उस को नगा ही रहना चाहिए। दरअसल ये लोग शहर की जिदगी से ऊबे हुए है। और प्रकृति की गोद में जाने के लिए बावले हो गए है। न्यूडिस्ट क्लब आम जगह नही होती, प्राइवेट होती है, लेकिन यह जो सूट है न, टाप-लेस बाथिंग सूट, यह तो आम जगहों में पहनने के लिए है। ऐसा गाउन भी बना है।"

"अच्छा ? लेकिन इस मामले में हिन्दुस्तान आगे ही रहेगा।"

'कैसे ?"

"शादीपुर डिपो के रास्ते में वह झुग्गियों वाली बस्ती है न ! वहा कभी-कभी दिखाई पड़ जाता है। करोलबाग और पूसा रोड जैसे अमीर और चहल-पहल वाले इलाकों में भी देहात से आई औरतो को मैं ने देखा है, सब के सामने छाती खोल कर बच्चे को दूध पिलाती है। ऊपर कपड़ा भी नहीं डालतीं। बस्तर का इलाका तो पूरा ही कौन-सा क्लब कह रहे थे तुम ?···वह तो पूरा ही उस क्लब जैसा है।"

"हा, इस लिहाज से तो आगे ही रहेगा।" सहसा रामप्रकाश को सिगरेट पीने की इच्छा होने लगी। उस ने डिब्बा ढूंढ़ा और होठों से एक सिगरेट लटका कर कहा, "जरा माचिस तो फेंकना !"

शान्ति ने माचिस फेंक तो दी, लेकिन उस से टोके बिना न रहा गया, "क्या बिल्कुल छोकरों की तरह···सिगरेट पीने का भी एक

बुजुर्गाना तरीका होता है। जनाब को इतनी पीने की आदत कब से पड़ गई ? कल मेरे सामने दो पी थीं। बाहर न मालूम कितनी पी होंगी।"

"कभी-कभी मन करने लगता है।"

"इसी तरह आदत पड़ती है।"

"अच्छा, आज की यह पहली और आखिरी।"

किसी ने मानो झकझोर दिया हो। परदे पर तिरंगा लहरा रहा था। जन-गण-मन-अधिनायक···आडिटोरियम के सभी दर्शक खड़े हो गए थे··· रामप्रकाश हड़बड़ाता हुआ कुर्सी छोड़ने लगा · वह इस वक्त बिल्कुल इस मूड में नहीं था कि खड़ा हो कर राष्ट्र-ध्वज और राष्ट्र-गीत को सम्मान दे। 'मन में खौलती कामुकता दबा कर कोई व्यक्ति राष्ट्र-गीत या ध्वज को सम्मान नहीं दे सकता।' रामप्रकाश ने कोफ्त के साथ सोचा, 'जबरन इज्जत कैसे दी जा सकती है ?'·· पंजाब-सिन्ध-गुजरात-मराठा···मारिलीन-मारिलीन···उस का नग्न स्नान···फहराता ध्वज··· इसी परदे पर अभी-अभी मारिलीन ने वह कामुक आह भरी थी, हां,इसी परदे पर, जहां अब तिरंगा लहरा रहा था···कामुक आह, क्षण मात्र की वह आह और वह दृश्य, जब मारिलीन का गुलाबी उरोज तौलिए से बाहर झांक गया था · किसी उच्छृंखल झरने की तरह···जय हे··· भारत·· भाग्य···विधाता···उरोज-उरोज-उरोज···वह गुलाबीपन राम-प्रकाश के मन पर छप गया था···जय-जय-जय ··मारिलीन-मारिलीन-मारिलीन · एकाएक आडिटोरियम जगमगा उठा। तिरंगा दृश्य बुझ गया। परदा सफेद राख-सा हो गया। स्वर मर गए। विदेशी धुन फड़कने लगी · कम-सप्टेम्बर···रामप्रकाश ने पाठक की ओर न देखा। भीड़ बाहर निकल रही थी। रामप्रकाश ने अपने को बिखरता महसूस किया। पता नहीं, पाठक उस की ओर देख रहा था या नहीं। वही धधकता दृश्य ···नग्न-नग्न-नग्न···रामप्रकाश के होंठ सूखने लगे। वह सभी से नाराज

होने लगा। किस ने कहा था कि रामप्रकाश के सामने तिरंगा उस वक्त फहराओ, जब उस ने वह सब देखा था ? इन सैकड़ों दर्शकों में से क्या एक ने भी राष्ट्र-गीत को, राष्ट्र-ध्वज को सम्मान दिया होगा ? इच्छा होने के बावजूद क्या एक भी व्यक्ति इस में समर्थ हो सका होगा ?

अब उस ने पाठक की ओर देखा। पाठक शायद इसी इन्तजार में था। निगाह मिलते ही उस ने पूछा, "कहिए देवताजी ? मज़ा आया ?"

रामप्रकाश ने मुस्कराने की कोशिश की।

दोनों बाहर निकल कर सड़क पर आ गए। रामप्रकाश ने आक्रोश से कहा, "चीन के हमले को इतना समय गुजर चुका। इस के बावजूद हर फिल्म के बाद जबर्दस्ती राष्ट्र-गीत सुनवाने में क्या तुक है ? क्या ऐसी बनावट से राष्ट्र जाग उठेगा ?"

"जाइए, मैनेजमेंट से कहिए।"

"मैनेजमेंट से क्यों, उसे तो वह सब करना ही पड़ेगा जो सरकारी हुक्म के बतौर आएगा।"

"छोड़िए, आप भी कहां की बात ले बैठे ?" पाठक ने हंसते हुए उस के कन्धे पर हाथ मारा, "यह बताइए, मज़ा आया कि नहीं।"

"मैं नहीं सोचता कि यह कोई पूछने की बात है।"

"याने कि मज़ा आया। है न ? बन्दे को भी आया।"

रामप्रकाश ने पाठक को एक नुक्कड़ की ओट में खींचते हुए बुदबुदाहट में कहा, "एक मिनट ··"

दर्शकों की भीड़ का जो प्रवाह थियेटर से अभी पूर्णतया निकल नहीं पाया था, उस में रामप्रकाश ने सुदर्शना और गुड्डो को बाहर आते देखा। "क्या बात है ?" पाठक झुकता हुआ पूछ रहा था। "कुछ नहीं, एक परिचित निकल रहे थे। मैं ने सोचा, निगाह बचा जाऊं।" रामप्रकाश ने कहा। उस ने देखा, वे दोनों तेजी से इक्कीस नम्बर के बस-स्टाप की ओर चली गई। कदमों की तेजी से जाहिर था कि वे जल्द-से-जल्द थियेटर से दूर जाना चाहती हैं।

घर लौट कर उस ने सीधी निगाह से गुड्डो की ओर न देखा। एक बार भी नहीं। हवा में उमस बहुत बढ़ गई थी। कमरे के अन्दर नहीं सोया जा सकता था। सब की खाटें चौगान में बिछा दी गई थीं। गुड्डो लेट गई थी। रामप्रकाश को शक हो रहा था कि कहीं गुड्डो ने भी उसे वहां देख न लिया हो। वह कुण्ठित हो गया।

उस ने शान्ति को एक ओर ले जा कर पूछा, "गुड्डो सुबह क्या कह रही थी ?—उस के स्कूल में कोई फंक्शन है, आने में देर हो जाएगी, ऐसा ही कुछ···"

"हां···"

"उस को ज्यादा देर तो नहीं हुई थी ?"

"तुम्हारे आने से थोड़ी देर पहले ही लौटी है।" शान्ति न उत्तर दिया।

"कैसा रहा फंकशन ?"

"अच्छा ही रहा होगा। मैं ने पूछा नही। क्यों ? वह थकी हुई है।"

"कुछ नहीं, यों ही।"

"आप अपने दोस्त को सही-सलामत स्टेशन छोड़ आए ?"

"हां, फिर वापसी में देर हो गई। बसें मिलती ही नहीं, क्या करें।"

रामप्रकाश के सामने थियेटर का वह परदा रात भर उबलता रहा।

:: ५

"होशियार ! होशियार !" सड़क से लाउड-स्पीकर की आवाज आई, "ढांसा बांध का पानी दिल्ली की ओर बढ़ रहा है। कीर्तिनगर के लोगों को चाहिए कि जरूरी सामान वगैरह पहले से ला कर रख लें। पानी दो दिनों के बाद कभी भी आ सकता है। होशियार ! होशियार ! ढांसा बांध फट गया है···पानी दिल्ली की ओर बढ़ रहा है···हमारे जवान उस को रोकने के लिए रात-दिन काम कर रहे हैं, लेकिन फिर भी सूचना दी जाती है कि अपनी जरूरतों की चीजें···"

रामप्रकाश और शान्ति कमरे से बाहर निकल आए और जंगले पर झुकते हुए सड़क पर देखने लगे। स्लेटी रंग का एक स्कूटर दाहिनी ओर सड़क से जरा हट कर खड़ा था और उस में बैठे दो पुरुष बारी-बारी से पंजाबी और हिन्दी में सूचना दे रहे थे···

स्कूटर घरघरा कर रवाना हो गया, ताकि कीर्तिनगर के दूसरे नुक्कड़ों पर भी ये समाचार बोले जा सकें। रामप्रकाश ने पत्नी की ओर देखा। शान्ति खामोश थी। कुछ देर बाद उस ने पूछा, "अब क्या होगा ?"

"घबराने की कोई बात नहीं। बाढ़ इतनी थोड़े ही आएगी कि सब बह जाए। हद से हद यह होगा कि एकाध फुट पानी फैल जाएगा। बस। आज तुम सारे सामान की सूची तैयार कर रखना कि क्या-क्या

ले आना है। मिट्टी का तेल तो अभी बचा होगा ?"

"कहां ? थोड़ा-सा है।"

"जो भी चीज न हो, या कम हो, शाम को उस की सूची अवश्य तैयार हो जानी चाहिए। कल सुबह सब ले आएंगे।"

"लेकिन मान लो, पानी कल सुबह ही आ गया तो ?"

"कैसे आएगा ? तुम ने सुना नहीं क्या ? आया भी तो दो दिन बाद आएगा।"

"सुना तो—लेकिन क्या भरोसा ?"

"नहीं आएगा। अगर आया तो स्कूटर वाला चक्कर लगा कर पहले बता जाएगा। अव्वल तो आएगा ही नहीं। हमारे जवान रोक लेंगे। फिर भी सारा सामान खरीद लेना चाहिए। कल मै देर से काम पर जाऊंगा। सुबह बाजार चलेंगे।"

"बिल्लू स्कूल गया हुआ है। रास्ते में पता चलेगा तो डर जाएगा।"

"डरेगा तो लौट आएगा। डर तो तुम्हें लग रहा है।"

"नहीं जी, डर कैसा ?"

दोपहर के बाद रामप्रकाश सोच रहा था, "बात मामूली नहीं है। मुझे इस तरह टालना नहीं चाहिए। सुदर्शना ने जिद की होगी। या बहकाया होगा। वरना गुड्डो कैसे जा सकती है। ठीक है, मैं भी गया था देखने, लेकिन मेरी तो अब इतनी उम्र हो चुकी। मुझ पर भला क्या असर पड़ेगा। लेकिन···गुड्डो अभी छोटी है। उस पर ऐसी फिल्मों का असर···और इस से भी बड़ी बात, वह घर से झूठ बोल कर···ठीक है, मैं ने भी झूठ कहा था लेकिन शादी के बाद थोड़ा-बहुत झूठ बोलना ही पड़ता है। इस में बुराई क्या है ? पर गुड्डो तो···उस का और सुदर्शना का साथ छूटना ही चाहिए···कैसे ? ··शान्ति से मशविरा कर के देखूंगा···लेकिन वह तो इस बात को गम्भीरता से लेती ही नहीं·· यही कह देती है कि नया जमाना है···"

'ईवनिंग न्यूज़' में समाचारों को विस्तार से छापा गया था। कुछ

तस्वीरें भी प्रकाशित हुई थीं, जिन में सेना के जवानों को बाढ़ के पानी से जूझते दिखाया गया था। ढांसा बांध का पानी कम करने के लिए उस में दरार पाटना शुरू किया ही गया था कि पानी के जोर के कारण वह चौड़ी होने लगी थी। उस समय भारत सेवक समाज के सौ कार्यकर्ता वहां मौजूद थे। सिर्फ सौ लोगों के लिए पानी पर नियन्त्रण रखना असम्भव ही रहा था, जिस से सेना के इंजीनियरों व जवानों की सहायता ली गई थी। ७५ फीट की बजाए वह दरार ४५० फीट की हो चुकी थी। तिलकनगर में काफी पानी आ गया था और आगे बढ़ कर रमेशनगर को छू रहा था। पंजाबी बाग भी मुख्य सड़क से कट गया था। कीर्तिनगर रमेशनगर के तुरन्त बाद पड़ता था'''पानी को रोकने के लिए पत्थर, रेत की बोरियां, रोड़े इत्यादि मीलों दूर से ढो-ढो कर दुर्घटना के स्थल तक पहुंचाना पड़ता था। पानी का वेग इतना था कि उस में डाले गए सारे रोड़े बह जाते थे।

इधर यमुना का पानी भी खतरे के निशान से ऊपर आ चुका था। गांधीनगर में इतना पानी था कि लोगों को घुटनों तक डूब कर चलना पड़ता था। यमुना के आसपास के अनेक गांव, जिन्हें अधिकारियों ने पहले से ही खाली करवा लिया था, जलमग्न हो चुके थे। रात को बारिश हुई थी और दिन में भी होती रही थी। इस से बाढ़ के नियन्त्रण में बाधा पहुंच रही थी।

अगले दिन सुबह सवा नौ बजे ही रामप्रकाश और शान्ति बाजार जाने के लिए तैयार हो चुके थे। बाजार का रास्ता लगभग बारह मिनट का था। सड़क पर आ कर शान्ति ने अपनी साड़ी के पल्लू को फिर से सहेजा और कहा, "अच्छा हुआ, मैं ने पचास रुपए बचा रखे थे, वरना आज बहुत मुश्किल पड़ जाती।"

"सो तो ठीक है, लेकिन पहले तुम कहती थीं कि बचत का एक पैसा भी नहीं है।"

"न कहती तो तुम साफ न कर जाते ?"

कई बार मुझे बड़ी तंगी का सामना करना पड़ा है। उस वक्त भी तुम ने पैसे देने से इन्कार कर दिया था।"

"न रहे होंगे उस वक्त।"

"रहे कैसे न होंगे। जैसे आज निकल आए, वैसे उस वक्त भी निकल सकते थे, लेकिन तुम मेरी दिक्कतों को सुलझाने में दिलचस्पी कहां लेती हो?"

"जाओ जाओ, ऐसा होता तो आज भी पैसे न निकालती।"

बाजार आ गया। साढ़े नौ बजने में एक-दो मिनट बकाया रहते थे, लेकिन दूकानें खुल गई थीं। क्या मालूम, बाढ के दिनों में चाय के लिए दूध आ पाए या नहीं। शान्ति ने दूकानदार के नौकर से कहा, "दूध का पाउडर है?"

"हां, खुला है।"

"हमें बन्द चाहिए। छोटा वाला डिब्बा।"

"डिब्बा नही है।"

शान्ति पशोपेश में पड़ गई। बारिश के दिनों में कोई भी चीज खुली खरीदना खतरे से खाली नही था। वैसे भी, इन दिनों तो हर चीज में मिलावट आ रही थी। रामप्रकाश दूकान से जरा परे हट कर सड़क के किनारे खड़ा था और सोच रहा था कि जा कर एक पान ही खा आए। शान्ति ने उसे पुकार कर कहा, "सुना? डिब्बे का दूध नहीं है। खुला वाला है।"

बिना पास आए रामप्रकाश ने सड़क से ही कहा, "मत लेना, डिब्बा कहीं और से मिल जाएगा।"

दूकानदार का नौकर मानो पति-पत्नी, दोनों को एक-साथ सुना रहा हो, इस प्रकार बोला, "अजी बाबूजी, सारी दिल्ली में मिल जाए, तो मेरी मूछें उतार लीजिएगा।"

"तुम लोगों की यही आदत बहुत बुरी है। जो माल अपने यहां नहीं है, उस को सारी दुनिया से गायब बताएंगे।" शान्ति ने अपने शरीर का

भार एक पैर से दूसरे पैर पर ले जाते हुए कहा, "अच्छा, दो किलो चीनी दे दो।"

"लाल वाली है।"

"सफेद क्या हुई ?"

"कहीं नहीं मिल रही। ब्लैक में भी नही।"

"क्यों ?"

"हमें क्या मालूम, बीबीजी ?"

"लाल नही चाहिए।"

"ले जाइए, अच्छी है। सभी ले रहे हैं।" नौकर ने हथेली पर लाल चीनी रख कर उसे दिखाई। शान्ति ने देखने में रुचि न लेते हुए कहा, "मिट्टी के तेल का एक टिन घर भिजवा दो। कोठी का नम्बर याद है न ? हम बरसाती में रहते हैं।"

"याद है बीबीजी, लेकिन···मिट्टी का तेल तो आज बिल्कुल नही मिलेगा।"

"क्या मतलब ?"

"माल आ ही नही रहा है। बाबूजी ने पूरी कोशिश कर के देख ली। कह नहीं सकता, शायद शाम को चार-पांच टिन आ जाएं। गुजाइश कम ही है।"

शान्ति झुंझला कर रामप्रकाश के पास आई और बोली, "कहीं और चलो, इस दूकान में तो कुछ नहीं है।"

रामप्रकाश को आश्चर्य हुआ। वह स्वयं दूकानदार के पास गया और पूछने लगा, "की गल ए, सरदारजी, जो मांगो—गायब ! जो मांगो—गायब !"

सरदार ने करारे लेकिन नम्र स्वर में उत्तर दिया, "क्या करें बाबूजी, सारी मारकीट में माल नहीं है। हम को मिलेगा तभी तो देंगे ?"

रामप्रकाश और शान्ति दस-बारह कदम चल कर दूसरी दूकान पर पहुंचे। वहां मिट्टी के तेल का आधा टिन खुला मिल गया। शान्ति ने

तुरन्त नकद दे दिया। दूकानदार ने गिना और कहा, "बीबीजी, एक रुपया और।"

"क्यों ?"

"रेट बढ़ गए है।"

"कब से ?"

"बस, यों समझिए, आज से। वैसे तो कई दिनों से महंगा मिल रहा है, लेकिन हम अपने ग्राहकों को पुराने रेट पर देते रहे। सोचा था कि चलो, दो-एक रोज की बात है, दाम फिर नीचे आ जाएंगे, लेकिन आप ही बताइए, क्या करें। जब हमी को महंगा मिलेगा, तो घाटा खा कर तो नहीं दे सकते न ?"

शान्ति ने चुपचाप एक और रुपया उसे थमा दिया और कहा, 'आप लोग दिनोंदिन दाम तेज कर रहे हैं।"

"नहीं बीबीजी, हम क्यों तेज करेंगे ? अपने-आप तेज हो रहे हैं। माल आ ही नहीं रहा है। तेज तो होगा ही।"

"आ कैसे नहीं रहा। अकाल तो नहीं पड़ा कि माल न आए। माल आता है, दूकानदार दबा कर बैठ जाते हैं।"

दूकानदार ने शान्ति को घूर कर देखा, "बीबीजी, आप तो हम को बेईमान ही कहने लगीं।"

"आप को नहीं, सभी को कह रही हूं। वरना बताइए, सारी चीजों के दाम ऊपर कैसे जा रहे हैं ?"

"जब सारे दूकानदार बेईमान हो गए, तो हम भी तो दूकानदार ही हैं। आप ऐसा करिए, मिट्टी के तेल के पैसे हम से वापस ले लीजिए। खरीदने वाले और मिल जाएंगे। जो दूकानदार बेईमान न हो, आप जा कर उस के यहां से ले लीजिए।"

बात इतनी जल्दी ऐसा रंग पकड़ जाएगी, शान्ति को आभास नहीं था। उसे बुरा लगा। रामप्रकाश को भी। रामप्रकाश ने आगे बढ़ कर दूकानदार के हाथ से नोट वापस ले लिए और कहा, "चलो, दूकानों की

भला कोई कमी है ?"

कीर्तिनगर के छोटे-से बाजार में ये ही दो दूकानें सब से बड़ी थीं, लेकिन रामप्रकाश व शान्ति ने सोचा कि माल कई बार छोटी दूकानों में भी मिल जाता है क्योंकि बड़ी दूकानों में वह पहले खत्म होता है। दूध के पाउडर और मिट्टी के तेल की आवश्यकता सब से बड़ी थी। उतनी ही बड़ी आवश्यकता आलू और प्याज की थी, लेकिन ये दोनो सब्जियां आसानी से मिल गई थीं। हां, दरें कुछ ऊपर जरूर चली गई थीं। एक भी छोटी दूकान ऐसी न थी, जहां दूध के पाउडर का डिब्बा या मिट्टी का तेल मिल पाता। रामप्रकाश बोला, "ऐसा करो, जब कहीं नहीं मिल रहा है तो उसी दूकान पर वापस चलो। कम-से-कम मिट्टी का तेल तो ले ही लें। रही बात पाउडर के दूध की। मैं करोल बाग से ले आऊंगा।"

शान्ति का मन तो नहीं था, लेकिन उस ने एतराज न किया। दोनों उस दूकान के पास पहुंचे तो दूर से उन्होंने देखा, दूकान का नौकर मिट्टी के तेल का वही टिन ले कर बाहर निकल रहा था। जाहिर था कि वह उसे किसी कोठी में पहुंचाने के लिए जा रहा था। शान्ति ने हताश होते हुए पति की ओर देखा।

रामप्रकाश बोला, "कोई बात नहीं बिक गया तो, करोल बाग से मैं आधा क्या, पूरा ही टिन लेता आऊंगा। ये दूकानदार के बच्चे समझते क्या हैं ? किसी ने हमें कीर्तिनगर में कैद तो कर के रखा नहीं है। सारी दुनिया में घूमते है।"

आलू और प्याज के जल्द खराब होने की सम्भावना न होने के कारण आज शाम और कल सुबह उन की सब्जियां बनाना जरूरी नहीं था। उन की बजाए ऐसी सब्जियां बनाई जा सकती थीं, जो कल के बाद पकाने लायक न रहें। शान्ति ने दो वक्त के लिए ऐसी ही कुछ सब्जियां खरीद लीं। उस का मन उखड़ चुका था। उस ने सब्जी वाले से मोल-भाव न किया। सब्जी लेने के लिए उसे प्रायः हर दूसरे दिन

आना पड़ता था, अतः उन की दरों में जो बढ़ोतरी हो रही थी, उस को उस ने क्रमशः अनुभव किया था और उसे ज्यादा नहीं अखरा था। दूध का पाउडर, मिट्टी का तेल, बिस्कुट, चीनी वगैरह के लिए आज वह अनेक दिनों बाद बाजार में आई थी और नई स्थिति ने उसे चौंका दिया था। सुन तो कई दिनों से रही थी कि महंगाई बढ़ गई है, लेकिन इतनी बढ़ गई होगी, नहीं सोचा था। श्रीमती इंजीनियर ने बताया कि चीनी का राशन होने वाला है। राशन होना एक बात है, लेकिन बिल्कुल न मिलना कोई और बात। शान्ति ने पीछे मुड़ कर देखा। सड़क के दूसरी ओर जो दुकान थी, वहां उस ने रामप्रकाश को लाल चीनी तुलवाते देखा। वह चुप रही। सफेद जब मिल ही न रही हो तो···प्लास्टिक के जिस थैले में उस ने सब्जियां उठा रखी थी, वह उस को बहुत हल्का मालूम पड़ा। उस ने हिसाब लगाया कि जितना खर्च कर के उस ने ये सब्जियां खरीदी थीं, उतने में कुछ ही माह पहले इस से लगभग डेढ़ गुना सब्जी व दिगर चीजें आ जाती थीं।

शाम को रामप्रकाश करोल बाग से मिट्टी का तेल का पूरा टिन ले आया, लेकिन उस ने तीन रुपए ज्यादा दिए थे। टिन लेकर कीर्तिनगर स्कूटर में आना पड़ा था। इस का सवा रुपया अलग से। दूध के पाउडर का डिब्बा भी रामप्रकाश ने करोल बाग से प्राप्त कर लिया था। उस ने शान्ति को न बताया कि इस के लिए भी उस ने सवा रुपया ज्यादा दिया है और इस एक डिब्बे को पाने के लिए कम-से-कम पन्द्रह दुकानों के चक्कर लगाए हैं।

अगले दिन यह रहस्य उसे शान्ति के सामने उद्घाटित कर देना पड़ा। कारण : शान्ति ने श्रीमती इंजीनियर को बता दिया था कि उस के पति को ऐसी जगह का पता है, जहां ब्लैक के पैसे दिए बिना पाउडर मिल सकता है। परन्तु श्रीमती इंजीनियर ने अपने लिए चार डिब्बों के पैसे शान्ति को थमा कर कहा था, "अच्छा ? हमारे लिए भी मंगवा दो फिर !"

रामप्रकाश नाराजगी से बोला, "अव्वल तो तुम्हें यह याद रखना चाहिए कि मैं किसी का नौकर नहीं हूं जो दूध के चार-चार डिब्बे लाद कर पहुंचाता फिरूं। दूसरी बात, मैं ने तो तुम्हें गलत दाम बताया था। मैं ने सवा रुपया ब्लैक का दिया है। इस के बावजूद मुझे पन्द्रह-बीस दूकानों के चक्कर लगाने पड़े हैं। पाउडर कहीं है ही नहीं। न मालूम सारी सप्लाई कहां गोदाम में डाल दी गई है।"

"तुम ने मुझ से झूठ क्यों कहा ?"

"तुम भी मुझ से हर बार सच नहीं बोलती।"

"अब नीचे वालों को क्या जवाब दूं ?"

"ऐसा करो, उन के पैसे अभी न लौटाना। आज की बजाए कल देना और कहना कि बहुत कोशिश की तो भी न मिला। अगर बुरा मान जाएं तो मानती रहे।"

ढांसा बांध पर सेना के इंजीनियरों और जवानों ने काबू पा लिया। अखबारों ने उन के शौर्य की सचित्र कहानियां प्रकाशित कीं, लेकिन कुछ अखबारों ने यह भी लिखा कि बांध फटने पर स्थिति की जिस गम्भीरता का प्रचार किया गया था, वास्तव में स्थिति उतनी गम्भीर नहीं थी। ज्यादा गम्भीर बता कर बिचौलियों ने पैसा खा लिया था। बांध का पानी कीर्तिनगर तक पहुंचा ही नहीं था ; रमेशनगर में भी बहुत कम आया था। बाँध की दरार पर काबू होते ही पानी काफी जल्द उतर गया। रामप्रकाश और ड्रग-स्टोर के सभी कार्यकर्ताओं ने विश्वास कर लिया कि बिचौलियों ने पैसा खाया है। पाठक ने कहा, "ऐसे लोगों को जेल में डाल देना चाहिए।"

"किस-किस को डालोगे ? सभी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।"

"आश्चर्य यह है कि केन्द्रीय सरकार और प्लानिंग कमीशन की आंखों के नीचे ऐसा हो रहा है। पहाड़गंज की सड़कों की हालत देखी है ? इतनी धूल उड़ती है, मानो हर तरफ लाल कोहरा छाया हो। यही

साल देवनगर का है। बाईस नम्बर की बस वहां इतनी धीरे चलती है, मानो छकड़ा गाड़ी हो।" पाठक ने सिगरेट का कश लिया।

"थोड़ा तो बारिश का भी कसूर है।" नए-नए नियुक्त हुए एक युवक ने कहा।

"क्या कसूर है? किस ने कहा था कि बारिश के समय सड़क खोदना शुरू कर दो? यह ठीक है कि इस साल ज्यादा बारिश हुई है और हो भी रही है, लेकिन इसे पूरी तरह थम जाने दो। उस के बाद खोदो। लेकिन नहीं, ऐसा करेंगे तो ईमानदारी जाहिर न हो जाएगी? पटेल रोड वाला किस्सा सुना ही होगा?" रामप्रकाश ने पूछा।

"क्या?"

"पटेल रोड को चौड़ी करने के लिए खोदना शुरू किया गया। एकाएक अधिकारियों ने छापा मारा तो पता चला कि सड़क बनाने में रद्दी माल इस्तेमाल हो रहा है। ठेकेदार ने जवाब दिया कि चूंकि अच्छा माल मिल नहीं रहा था, इस लिए रद्दी माल लगाया गया है। बताइए, भला कोई जवाब हुआ? मूर्ख से मूर्ख आदमी भी इतना समझ सकता है कि जब माल नहीं था तो सड़क खोदी ही क्यों गई। हफ्तों से सड़क खुदी हुई पड़ी है। केस चलेगा। सुनवाइयां होंगी। घूस दी और ली जाएगी। तब तक सड़क इसी तरह सड़ती रहेगी। बसें, कारें, स्कूटर—सब पटेलनगर की छोटी सड़कों से गुजरते हैं। ये सड़कें न पर्याप्त चौड़ी हैं, न मजबूत। कुछ दिनों में उखड़ जाएंगी। उन पर आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती हैं, सो अलग।"

"जरूर होंगी।" पाठक ने हामी भरी, "मैं ने वे सड़कें देखी हैं। वे इतनी कम चौड़ी हैं कि एक बस ही मुश्किल से समा पाए।"

"गनीमत है, अब तक किसी की जान नहीं गई।" रामप्रकाश ने कहा, "खून की सजा फांसी है। या आजन्म कैद। लेकिन पटेल रोड खुदवा कर छोड़ देने वाला शख्स भी लोगों की जान से खेल रहा है। उसे कौन सजा देगा?"

उसी समय दो विदेशी औरतें ड्रग-स्टोर में आईं। उन्हें 'एरोविट' की गोलियों की एक बड़ी शीशी चाहिए थी। उन में से एक गर्भवती थी। 'एरोविट' उसी के लिए चाहिए होगा, यह आसानी से समझा जा सकता था। उस ने गाउन-नुमा एक [illegible] तक डाल रखी थी कि उस के ढीले घेर में पेट का सारा उभार छिप गया था।

रामप्रकाश ने उन के चले जाने पर पाठक से कहा, "उस की पोशाक देखी? कितनी सभ्य लग रही थी! निगाह पड़ते ही मन में आदर जगता था कि कुछ दिनों में यह मां बनने वाली है। और एक हैं यहां की औरतें। गर्भवती महिलाओं को भी मैं ने नाइलोन की साड़ी और साटन के लहंगे में मटक-मटक कर चलते देखा है। इतनी बुरी लगती हैं कि क्या कहूं!"

पाठक ने सिर हिलाया "आप ठीक कहते हैं, लेकिन यह दोष भी पुरुषों का है।"

"क्यों?"

पाठक मुस्कराया, "मैं औरतों की कौम को औसतन मूर्ख मानता हूं। शायद इसी लिए मैं अभी तक कुवारा हूं। मुझे कोई पसंद नही आती। मेरा पक्का विश्वास है कि औरतों पर आदमियों का काबू होना चाहिए, वरना वे ऊलजलूल काम करती है। दिल्ली की औरतों पर उन के मर्दों का काबू नहीं है। औरत को कितना और किस तरह सजना चाहिए, इस का निर्णय हमेशा उस के पति द्वारा होना चाहिए, जबकि यहां यह निर्णय सिर्फ औरतें करती हैं।"

"मै तुम्हारी बात को पचास या साठ प्रतिशत से ज्यादा सही नहीं मान सकता।"

"क्यों?"

"यहां के औसत मर्द को फूहड़पन पसन्द है। उसे अच्छा लगता है कि उस की औरत फूहड़ बन कर उस के साथ बाहर निकले।"

"दरअसल इसे यों कहिए कि यहां के मर्दों को फूहड़ता और सुरुचि

का अन्तर मालूम नहीं है।"

"हां, ऐसा भी कह सकते हैं।"

"बल्कि इसी तरह कहिए।" पाठक ने आग्रह किया। रामप्रकाश ने जरा हंस कर स्वीकार कर लिया। काउण्टर पर एक लड़की 'एल्कोसिन' मांग रही थी। नया नियुक्त हुआ वह युवक कह रहा था कि 'एल्कोसिन' बिना डाक्टर के प्रिस्क्रिप्शन के नहीं मिल सकती। ड्रग-स्टोर के मालिक को पास आता देख कर रामप्रकाश झटपट टाइप-राइटर पर उंगलियां चलाने लगा। साथ-साथ उस का ध्यान उस बूढ़े की ओर भी आकर्षित हो रहा था जो करीब पन्द्रह मिनटों से तरह-तरह के टूथ-ब्रश देख रहा था और तय नहीं कर पा रहा था कि कौन-सा खरीदे।

बादलों के घिराव के कारण धूप में निखार नहीं था। एकाध मिनट के लिए वह निकल आती, लेकिन शीघ्र ही छिप जाती। बौछार शुरू हुई जो पन्द्रह-बीस मिनटों में रुक गई। थोड़ी देर में वह फिर से जारी हो कर फिर रुक गई। इस के बाद धूप निकल आई, जो सुनहरी लग रही थी। आकाश में कोई बादल दौड़ रहा था। सड़क पर उस की फिसलती परछाई ने सुनहरेपन को पोंछ दिया। तीन टैक्सियां एक-के-पीछे-एक जा रही थीं। बीच वाली टैक्सी ने हार्न बजाया। ट्रैफिक कण्ट्रोलर का फेस लाल हो गया। दो लम्बोतरी बसें रुकीं और धुआं उगलती हुई असन्तोष से घरघराने लगीं। यह अंग्रेजी का टाइप-राइटर था। रामप्रकाश के सोचने की प्रक्रिया हिन्दी में होती थी। यदि यह हिन्दी का टाइप-राइटर होता या अगर रामप्रकाश बातों को अंग्रेजी में सोच सकता तो निश्चय ही उस ने इस वक्त एकाएक टाइप कर दिया होता कि गुड्डो और सुदर्शना को साथ-साथ नहीं रहना चाहिए। दिल्ली की महंगाई और नागरिक अव्यवस्थाओं में इन दिनों रामप्रकाश इतना उलझा हुआ था कि गुड्डो की समस्या पर वह छिटपुट ही विचार कर पाता था। ये छिटपुट विचार एकाकी चिनगारियों की भांति अनायास ही उसके मस्तिष्क में कौंधते और बुझ जाते···

शाम को कनाट-प्लेस के एक फुटपाथ पर खड़ा एक छोटा-सा लड़का चिल्ला-चिल्ला कर 'ईवनिंग न्यूज़' बेच रहा था, "ताजा खबर ···ताज़ा खबर···दिल्ली का पानी जहरीला हो गया···उबाल कर पीजिए···उबाल कर पीजिए···पानी जहरीला हो गया···ताज़ा खबर··· ईवनिंग न्यूज़...नल का पानी उबाल कर पीजिए..."

ड्रग-स्टोर की मुख्य शाखा कनाट-प्लेस में थी। कुछ जरूरी कागजात देने के लिए रामप्रकाश वहां गया था और इस वक्त लौट रहा था। लड़के की आवाज सुन कर उस की भौंहों पर बल पड़े। उस ने लड़के को पुकारा और 'ईवनिंग न्यूज़' के लिए जेब में सिक्का टटोला।

:: ६

घर आने पर रामप्रकाश को पता चला कि मिट्टी के तेल का जो टिन वह कुछ दिन पहले खरीद कर लाया था, उस में से उसी दिन आधा तेल मकान-मालकिन ले गई है—लगभग जबर्दस्ती। पैसे भी उस ने नगद नहीं दिए हैं। कहा है, किराए में काट लेना।

"तुम ने मुझे पहले क्यों नहीं बताया ?" रामप्रकाश ने सख्त नाराजगी से कहा।

"बताती भी तो क्या कर लेते ? उन से वापस तो ला नहीं सकते थे।"

"क्यों नहीं ला सकते ? बाजार में जब मिल ही नहीं रहा है तो···"

"मकान-मालिक से हमेशा बना कर रखनी चाहिए, वरना रोज-रोज के झगड़ों से जान मुसीबत में फंस जाएगी।"

"वे झगड़ेंगे तो क्या हमें नहीं आता ?"

"हम न ही उलझें तो अच्छा !"

"अच्छा-अच्छा, छोड़ो···बाकी का आधा टिन तो बचा है ?"

"हां, उतना है।"

"कोयले ?"

"पिछले हफ्ते खत्म हो गए। मैं ने आप को बताया तो था···

सारा काम स्टोव से चल रहा है।"

"हुं···मतलब यह कि मकान-मालकिन की ज्यादतियां हम चुपचाप सहते रहें।"

"इतना ही नखरा है तो अपना मकान क्यों नहीं बनवा लेते?" शान्ति ने उलाहना दिया।

"देखो, पानी खौला कि नहीं?"

स्टोव भरभरा रहा था। बड़ी पतीली की तली के नीचे नीली लौ गोलाकार फैली हुई थी। रामप्रकाश को बहुत जोर की प्यास लगी थी। वह सोच रहा था कि यह पानी न मालूम कब खौल कर पीने लायक ठण्डा होगा। तब तक प्यास बहुत बढ़ जाएगी। उस ने थूक सटका। जनता माडल रेडियो में घरघराहट होने लगी। गुड्डो ने उठ कर उस की सुई ठीक की लेकिन घरघराहट जारी थी। बिल्लू ने रामप्रकाश की ओर देखा, "डैडी, इस को ठीक क्यों नहीं करवाते?"

"करवाएंगे, बेटे!" रामप्रकाश ने रूखी आवाज में कहा, "पहली तारीख को तनख्वाह आने दो। उसी दिन करवाने ले जाएंगे।" फिर वह पत्नी से मुखातिब हुआ, "भई मेरी प्यास बढ़ रही है। पतीली का पानी उबलने में बहुत देर लगेगी। मेरे लिए एक लोटे में थोड़ा अलग से उबाल दो।"

शान्ति ने स्टोव पर लोटा रखा।

उसी समय स्टोव की आवाज में फर्क आ गया। रामप्रकाश ने चौकते हुए नीली लौ की ओर देखा। वह बार-बार कट रही थी। लौ एकाएक गायब हो गई। सीई · शान्ति ने झटपट हवा खोली और स्टोव उठा कर हिलाया। भीतर मिट्टी का तेल होने की आवाज आई। वह बोली, "तेल में पानी मिला हुआ है।"

उस ने स्टोव को मोरी के पास ले जा कर खाली किया। फिर बोतल ले कर तेल के टिन के पास पहुंची। उस ने पाइप से तेल खींचना चाहा, लेकिन पाइप रिरिया कर रह गया। टिन खाली था। शान्ति ने

दूसरी बार पाइप चलाने की कोशिश की, लेकिन एक बूंद भी तेल न चढ़ा। उस की भौहों पर बल पड़े। उसे अच्छी तरह याद था कि टिन में काफी तेल बचा हुआ था। श्रीमती इंजीनियर आधी बोतल तेल ले गई थी, उस के बाद भी। शान्ति ने इस आधी बोतल के पैसे श्रीमती इंजीनियर से न लिए थे। पैसे न ले कर वह श्रीमती इंजीनियर से अपनी बराबरी का दिखावा करना चाहती थी। उसे मालूम था कि इस का पता चलने पर रामप्रकाश बहुत नाराज होगा। इसी लिए उस ने सिर्फ आधे टिन वाली बात बताई थी, वह भी रामप्रकाश द्वारा कुरेद कर पूछे जाने पर। पाइप से तेल खींचे जाने की आवाज सुनाई न पड़ने से रामप्रकाश को अचरज हुआ। वह बाहर निकला। "क्या बात है ?" उस ने शान्ति को बौखलाते देख कर पूछा।

"तेल नहीं है।"

'क्या मतलब ?"

"शायद चोरी हो गया।"

'कैसे हो सकता है ? दिन में तुम कहीं गई थीं क्या ?"

"नहीं।"

"फिर ?"

"दोपहर को आधा घण्टा झपकी जरूर ली थी। उस दौरान···"

चोरी किसी रूप में असम्भव नहीं थी। चार मकान एक-दूसरे से सट कर बने हुए थे और चारों ही बरसाती वाले थे। शान्ति अपने चौगान में खड़ी हो कर अगल-बगल के मकानों में बड़ी आसानी से देख सकती थी, उन के बाशिन्दों से बातें कर सकती थी—करती थी। मोटे तौर पर, चारों मकानों की एक छत एक मिला-जुला चौगान ही था, जिस के बटवारे के लिए बीच-बीच में लगभग पांच फीट की दीवारें उठा दी गई थीं। इन को फांद कर एक मकान से दूसरे मकान में जाना इतना आसान था कि शाम को खेलते वक्त बच्चों द्वारा अकसर ही ऐसी छलांगें लगाने के प्रयोग होते थे। मुमकिन था, दोपहर को जब शान्ति सो रही

थी तो दाएं या बाएं के किसी मकान से कोई व्यक्ति कूद कर यहां आया हो और तेल का टिन खाली कर गया हो।

उकड़ूं बैठी शान्ति उठने लगी। उस ने दाएं-बाएं के मकानों पर दृष्टि दौड़ाई। शान्ति की दोनों ओर के परिवारों से मैत्री थी। किस पर शक किया जाए? जरूरी नही था कि चोर उन में से ही किसी एक परिवार से आया हो। कोई और व्यक्ति भी चढ़ कर आ सकता था। लेकिन नहीं···किसी दूसरे को कैसे मालूम हो सकता था कि तेल का टिन चौगान में लावारिस रखा रहता है? अवश्य ही यह किसी पड़ोसी की करतूत थी। शान्ति का मन खट्टा हो गया।

कोई परिवार ऐसा नहीं था, जो अनेक महीनों से पड़ोस में न हो। पड़ोस की मैत्री क्या इतनी जल्दी, इतनी आसानी से टूट गई? शान्ति ने महसूस किया कि नहीं, मैत्री किसी से नहीं टूटी है। कारण, चोरी किस ने करवाई है, शायद कभी पता न चले। अगल-बगल के सभी लोगों से सारा व्यवहार पूर्ववत् ही चलते रहने में जो व्यंग्य था, उस ने शान्ति को थरथरा दिया। उस ने रामप्रकाश की ओर देखा, जो खामोश था। दोनों कमरे में आए।

गुड्डो को जब पता चला, वह चीखने लगी। उस ने कहा कि मैं अभी जाती हूं। ज़ीना उतर कर और पड़ोसी का ज़ीना फिर से चढ़ कर नहीं, बल्कि इसी पांच फुटी दीवार को फांद कर अभी जाती हूं और झगड़ा करती हूं। दोनों ही तरफ के परिवारों को धमका कर आती हूं कि इस बार ऐसा कर लिया सो कर लिया, आइन्दा कभी···

गुड्डो के आक्रोश ने रामप्रकाश को दुख और अचरज में डाल दिया। उस ने आशा नहीं रखी थी कि गुड्डो का क्रोध इतना तीखा है। उस ने सख्ती से कहा, "चुप रहो। लड़कियों को इतनी जोर से नहीं बोलना चाहिए।"

"तुम ने सारे लक्षण सुदर्शना से सीखे हैं।"

"कौन-से लक्षण?" पिता की ओर सीधी निगाह से देखते हुए गुड्डो

ने रूक्ष हो कर पूछा ।

"जोर-जोर से चिल्लाना, और क्या ? कायस्थों की लड़कियां इस तरह नहीं बोलतीं ।"

"आप तो हर बात सुदर्शना से जोड़ देते हैं । उस में आखिर ऐसी क्या बुराई है ?"

शान्ति ने बाप-बेटी के बीच में पड़ते हुए कहा, "फिर आप दोनों का झगडा शुरू ? मैं कहती हूं, बिना मिट्टी के तेल के अब क्या करें ?"

"जाओ, उन्हीं से उधार मांगो जिन्होंने चुराया है ।" गुड्डो बोली ।

शान्ति एक पल इस का निर्णय लेती रही कि श्रीमती इंजीनियर के पास जाया जाए या मकान-मालकिन के पास । सोचा कि मकान-मालकिन ही ठीक रहेगी । श्रीमती इंजीनियर तो केवल आधी बोतल ले गई है । मकान-मालकिन को आधा टिन दिया है । वह जीना उतरने लगी । बिल्लू जरा उत्तेजित था । दौड़ कर वह भी शान्ति के साथ हो लिया । कमरे में अब गुड्डो और रामप्रकाश अकेले थे । कुछ देर बाद रामप्रकाश ने अनायास अपने को उबलता हुआ महसूस किया । वह बोला, "देखो गुड्डो, तुम्हें पहली बार कह रहा हूं ।"

गुड्डो ने पलकें उठा कर उस की ओर देखा । रामप्रकाश को कल या परसों की तुलना में आज वह अधिक युवती मालूम हुई । उसे दो क्षण सोचना पड़ा कि किस तरह कहे ।

"तुम सुदर्शना के साथ ज्यादा मत रहा करो । वह अच्छी लड़की नहीं है ।"

"आप को मेरी सहेली के बारे में ऐसा नहीं कहना चाहिए ।"

"कुछ देखा-समझा होगा, तभी कह रहा हूं ।" गुड्डो ने जिस तरह साफ जवाब दिया, उस से रामप्रकाश की भौहें ऊपर उठ आईं ।

"क्या देखा है आप ने ?"

अब रामप्रकाश को गुस्सा आ गया, "तुम्हें मतलब ? सिर्फ इतना याद रखो कि वह लड़की अच्छी नहीं है ।"

"आप तो फतवा दे रहे हैं।"

"बहुत जबान लड़ाती हो, गुड्डो !"

"आप ने बात ही ऐसी की है।" गुड्डो का चेहरा तमतमा आया।

रामप्रकाश पर इस की प्रतिक्रिया हो पाती, इस से पहले ही शान्ति भीतर आई और बोली, "नहीं मिला तेल।" कुर्सी पर बैठ कर उस ने गहरी सांस ली। बूढ़ी मकान-मालकिन ने कहा था कि तेल उस के भी पास से एक रिश्तेदार ले गया था और वह थोड़ा-सा भी देने में असमर्थ थी। तब शान्ति ने श्रीमती इंजीनियर का दरवाजा खटखटाया था लेकिन वहां से भी साफ जवाब मिल गया था। श्रीमती इंजीनियर ने कहा था, "तुम से जो आधी बोतल ली थी, उस के बाद तेल आया ही नहीं। सारा बाजार छान मारा। आज का हमारा सारा काम अंगीठी पर हुआ है।"

इस के बाद श्रीमती इंजीनियर मुस्कराई थी। उस का मोटा शरीर शान्ति को और भी मोटा लगा था। जिस लहजे के साथ दोनों जगह से उसे जवाब मिले थे, उस से शान्ति समझ गई थी कि झूठ बोल कर टरकाया जा रहा है। 'जब अपने ही मकान में तेल न मिला तो पड़ोस के दूसरे मकानों में भला क्या मिलेगा···!' निराशा से सोचती हुई शान्ति लौट आई थी।

गुड्डो ने अपने हाथ की किताब जोर से एक कोने में फेंकी और रामप्रकाश व शान्ति की तरफ पीठ करती हुई खाट पर करवट के बल लेट गई। शान्ति ने प्रश्नवाचक दृष्टि से पति की ओर देखा। बिल्लू ने भी। रामप्रकाश चुप रहा। शान्ति ने एतराज उठाया, "लड़की को आप न मालूम क्या-क्या कहते रहते हैं। एक मिनट के लिए मैं बाहर गई और तुम···आप ने चिढ़ा दिया। ससुराल चली जाएगी तब देखने को तरसोगे।"

रामप्रकाश फिर भी चुप रहा।

शान्ति गुड्डो के पास गई। उस ने उस के कन्धे पर हाथ रख, चेहरे

पर जरा झुकते हुए देखना चाहा। गुड्डो की आंखें नम थीं। स्पर्श पाते ही उस ने तकिए में मुह डाल कर रोना शुरू कर दिया। रामप्रकाश इस के लिए तैयार नहीं था। तिलमिला कर बोला, "मैं ने ऐसी कौन-सी बात कह दी जो···!" वाक्य अधूरा ही छोड़ वह कमरे से बाहर निकल गया।

अंधेरी रात की चादर तनी हुई थी। जगह-जगह से रेडियो की आवाजें उठ रही थीं। रामप्रकाश को शाम के वक्त अंगीठियों मे से धुएं के टेढ़े-मेढ़े खम्भों का उठना याद आया। कुछ घर ज्यादा रोशन थे, कुछ कम। दूर ·· 'नटराज' थियेटर का नियां लाइट्स रोज की तरह अंधेरे में लटकी हुई थीं।

शान्ति पीछे से आ कर बोली, "ऐसी बात कहते तुम्हे शर्म न आई ?"

"कैसी बात ?" रामप्रकाश उसी तरह तिलमिलाया हुआ था।

"वह गन्दी लड़कियों के साथ घूमती है ?"

"मैं ने ऐसा नहीं कहा।"

"फिर ?"

"सिर्फ इतना कहा था कि सुदर्शना से दोस्ती कम करो···!"

"कुछ बातें बाप को नहीं कहनी चाहिएं। वे मां के जरिए कही जाती हैं···मैं अभी मर नहीं गई।"

रात के दस का समय हो चला था। उन दिनों शाम ही सात बजे के बाद होती थी अतः ग्यारह तक लोगों का जागते रहना मामूली बात थी। रामप्रकाश को और ज्यादा प्यास महसूस हुई। उस ने कहा, "छोड़ो···मेरा गला सूख रहा है···!"

"तो उबाल लो पानी। मैं किसी की नौकरानी नहीं हूं।"

रामप्रकाश ने जलती आंखों से उसे घूरा। अंधेरे में उस का चेहरा स्पष्ट था। वह बोली, "गुड्डो रो रही है।" और स्वयं उस की आंखों में भी आंसू आने लगे (जो रामप्रकाश को नजर न आए)। लरजते

स्वर में उस ने फिर दोहराया, "हमें नहीं पीना पानी। जिसे पीना हो, उबाल ले।"

"ठीक है, उबाल लूंगा—इतना रौब क्यों दिखाती हो? कहीं से मिट्टी का तेल ला दो।"

"क्यों लाऊं? आप ही लाइए। अनेक दरवाजे खुले हैं।'

"यह काम मेरा नहीं है।"

"मेरा भी नहीं है।"

शान्ति पलट कर कमरे में चली गई। रामप्रकाश विचारमग्न खड़ा रहा। क्या सचमुच उस ने इतनी गम्भीर बात कह दी थी?···उस ने तोलना चाहा। उसे याद आया, आलमारी में एक छोटा हीटर रखा है। वह कमरे में घुसा। गुड्डो उसी तरह तकिए में मुह दिए लेटी थी। शांति दीवार से पीठ टिका कर अन्यमनस्क बैठी थी। बिल्लू अपनी दीदी के सिरहाने उदास बैठा था। रामप्रकाश ने किसी की परवाह न करते हुए आलमारी खोली। हीटर सामने ही रखा मिल गया। उस ने पावर प्लग से उस का कनेक्शन जोड़ कर स्विच आन किया। कमरे में रोशनी फैला रहा बल्ब स्विच दबते ही कुछ फीका हो गया।

रामप्रकाश ने लोटा उठाया। वह गर्म था। हीटर के तारों की कुण्डली (लहू जैसी) लाल हो चुकी थी। रामप्रकाश ने लोटे को हीटर पर रख कर योजना बनाई कि खौलने पर लोटा ठण्डे पानी में गले तक डुबा दूगा। तभी पानी पीने लायक ठण्डा जल्दी हो पाएगा। सतह पर से भाप के सफेद धागे उठते और दो-तीन इंच की दूरी तक लहरा कर गायब हो जाते।

पानी खौलना शुरू करता, इस से पहले ही बिजली चली गई। कमरे में घुप अंधेरा। पहले तो रामप्रकाश ने समझा कि फ्यूज उड़ गया है। उस ने चौगान में आ कर दूसरे मकानों की ओर देखा तो पता चला, सारे कीर्तिनगर की रोशनी गुल है। लहू की तरह लाल हीटर के तारों की कुण्डली क्रमशः काली पड़ चुकी थी। उस के ठण्डे हो कर

सिकुड़ने की बारीक चिट्-चिट् सुनाई पड़ी। शान्ति बाहर आई, लेकिन गुड्डो लेटी रही, मानो कुछ न हुआ हो। बिल्लू दो पल दीदी के पास बैठा, फिर चौगान में निकल आया।

जहां से सड़क इण्डस्ट्रियल एरिया की ओर मुड़ती थी, वहां कुछ आरा मशीनें थीं, जिन की अनवरत आवाज रात भर सुनाई देती थी। मशीनें रुकने से आवाज का लेट जाना महसूस किया जा सका। रामप्रकाश ने जंगले पर झुकते हुए इधर देखा, फिर उधर। कहा, "पता नहीं, कितनी देर में आएगी।"

पांच मिनट बीते। अंधेरा उसी तरह घिरा रहा। शान्ति ने अपना मौन तोड़ते हुए धीमे स्वर में कहा, "घर में मोमबत्ती भी नहीं है।"

"बिजली अभी आ जाएगी।" बिल्लू बोला।

"आ जाए तो अच्छा है।"

"बस, आती होगी।"

झप से बल्ब जले। चुधिया कर रामप्रकाश ने आंखें बन्द कर ली। अगले क्षण बिजली फिर चली गई। रामप्रकाश बड़बड़ाया, "दिल्ली में अब तो किसी बात का भरोसा नहीं रहा। कभी बिजली गायब, कभी चीनी। हर चीज में मिलावट। दाम बढ़ रहे है सो अलग। न मिट्टी का तेल मिलता है, न दूध। इन्सान आखिर क्या करे ..."

सब की आंखों ने अपने को इस तरह व्यवस्थित कर लिया कि अंधेरे में फीकी चांदनी का खिला होना देखा जा सका। आकाश में बादल तो काफी थे, लेकिन वे चांद के चेहरे से काफी दूर थे।

लगभग दस मिनट तक और इंतजार करने के बाद भी जब बिजली न आई, तो रामप्रकाश आंखें सिकोड़ता हुआ कमरे में गया। चांदनी खिड़की से छन कर आ रही थी। रूमाल से गर्म लोटे को पकड़ कर वह बाहर आया और नल की ओर बढ़ा, जहां एक टब में पानी भरा हुआ था। उस ने लोटे को गले तक पानी में डुबाया। उसे उसी स्थिति में पकड़े हुए वह उकड़ू बैठ गया।

झपाक से बल्ब चले। रामप्रकाश चौंक कर उठने लगा। बल्ब बुझ गए। उन की चौंध रामप्रकाश को इतनी चुभी कि अंधेरे में उसे लाल-पीले धब्बे नजर आए। वह हिसाब लगाता रहा कि पानी पूरी तरह तो नहीं, लेकिन तकरीबन जरूर खौल चुका है और उसे ठण्डा कर के पीने में खतरा नहीं है। उस ने उंगली से पानी को छुआ। थोड़ा और ठण्डा किया जा सकता तो अच्छा था, लेकिन गला इतना सूख रहा था कि रामप्रकाश ने उसे पी लिया।

वह उठा और सड़क की तरफ के जंगले की ओर बढ़ा। शान्ति जंगले पर चुपचाप झुकी हुई थी। रामप्रकाश को सान्त्वना मिली कि शान्ति ने उसे पानी पीते नही देखा था। सड़क से जो कारें, स्कूटर इत्यादि गुजरते, उन की रोशनी धरती के समानान्तर खम्भों के रूप में सफर करती। तिराहे पर दिशा बदलती कारों आदि का उजाला मकानो पर से होता हुआ इस तरह फिसलता, मानो कैदियों के कैम्प पर चमकती, भोथरी सर्च-लाइट फेंक कर चौकीदारी की जा रही हो।

बिजली पौन घण्टे बाद आई। वे इन्तजार करते रहे कि यह अभी चली जाएगी, लेकिन न गई। रामप्रकाश ने रेडियो चालू किया। तटस्थ महिला-आवाज में खबरे प्रसारित हो रही थीं···

"यह आकाशवाणी का दिल्ली केन्द्र है। अधिकारियों ने आज घोषित कर दिया कि बाढ़ के कारण दिल्ली के नलों का पानी अशुद्ध हो गया है और पीने से पहले उसे उबाल लेना जरूरी है। सभी अस्पतालों, होटलों, रेस्तरांओं और अतिथि-गृहों को सूचना दी गई है कि वे बिना उबाले पानी का इस्तेमाल न करें। राजधानी के अधिकांश नलों को वजीराबाद पम्पिग स्टेशन से पानी दिया जाता है। राजधानी का कूड़ा-करकट और गन्दगी बादली डम्पिग ग्राउण्ड में नष्ट होती है। अलीपुर ब्लॉक के बाढ़ के पानी ने बादली की गन्दगी बहा कर जमुना में पहुंचा दी है, जिस से नलों के पानी में क्लोराइड कण्टेण्ट सामान्य से लगभग ढाई गुना हो गया है। डम्पिग ग्राउण्ड का आधा हिस्सा पानी में डूबा हुआ है। वहां

के अधिकारियों ने गन्दगी को पानी में फेंकने की बजाए ग्रेण्ड ट्रंक रोड पर जलाना शुरू किया है, लेकिन पानी इतना अशुद्ध है कि उसे बिना उबाले पीना खतरनाक है।···लीजिए, अब आप पूरे समाचार सुनिए···आज प्रधान-मन्त्री लालबहादुर शास्त्री ने अपने भाषण में कहा कि चीजों की बढ़ती कीमतों को रोकने के लिए सरकार पूरी कोशिश कर रही है, लेकिन सरकार के सामने भी कुछ मौलिक समस्याएं हैं। प्रधान-मन्त्री ने आश्वासन दिया कि उन व्यापारियों और विक्रेताओं के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी जो चीजों के दाम बढ़ाने के लिए उन को अपने गोदामों में जमा कर के अभाव की स्थिति पैदा करते हैं···"

उसी समय बिजली चली गई। रेडियो की खामोशी ने सब को कुढ़ा दिया, लेकिन वे चुप रहे और सोने की तैयारी करने लगे। बिजली सुबह चार बजे आई। इस का पता यों चला कि रामप्रकाश स्विच आफ करना भूल गया था। चार बजे रेडियो चालू हो कर घरघराने लगा।

6

अफवाह सुनाई पड़ रही थी कि जमुना का पानी जितना अशुद्ध घोषित किया गया है, उस से वह कहीं ज्यादा अशुद्ध है— बाढ़ में जानवरों की लाशें बह-बह कर पम्पिंग स्टेशन तक पहुंच रही है, हालांकि किसी भी अखबार ने ऐसे समाचार प्रकाशित नहीं किए हैं।

उन्हीं दिनों एक ऐसा समाचार प्रकाशित हुआ, जिस से रामप्रकाश को लगा कि किसी भी दिन उस की—उस के पूरे परिवार की मृत्यु हो सकती है। पुरानी दिल्ली के एक नल में से बिच्छू निकला था। लोक-सभा के एक सदस्य ने बिच्छू को शीशी में बन्द कर के सभा में पेश भी किया था। ऐसा ही बिच्छू या कोई ज़हरीला कीड़ा रामप्रकाश के यहां निकल आए तो ? पानी के पाइप के अन्दर मीलों का सफर करने के बाद भी किसी जन्तु में जहर रह सकता है या नहीं, रामप्रकाश नहीं जानता था, बहरहाल, उसे इस कल्पना ने सिहरा दिया कि दिल्ली में उस का, उस के प्रिय परिवार का सम्पूर्ण अस्तित्व खतरे में है।

लेकिन उस ने देखा कि रोज के काम उसी तरह चल रहे हैं, जिस तरह पहले चलते थे। बसें धुआं उगलती हैं, देर से आती हैं (या आती ही नहीं हैं), सड़कें गायब हो रही हैं, दैनिक आवश्यकताओं की चीजें बाजार से बारम्बार गायब हो जाती हैं, मिलती भी हैं तो बहुत ऊंचे दामों पर, कोई मामला ऐसा नहीं है, जिस में लोगों की शिकायतें न बढ़

रही हों ; लेकिन सारे काम पूर्ववत् ही चल रहे हैं। मानो राजधानी के लोगों ने ये शिकायतें स्वीकार कर ली हों, अपने अन्दर इस कदर कैद कर ली हों, जैसे उन के बिना काम ही न चलेगा। मौत के साए में भी दिखाई पड़ रही यह निश्चिन्तता रामप्रकाश को डरावनी लगी। यह लोगों की सहनशीलता थी या उदारता, लापरवाही अथवा बेवकूफी— वह निर्णय न कर पाया। हां, इतना अवश्य कि उस का भय कम हो गया। इतने सारे लोगों को तसल्ली के साथ अपना काम करते देख उस ने सोचा कि खतरा उतना बड़ा नहीं है, जितना वह सोच रहा है। और यदि सचमुच उस की मौत हो जानी है, तो उस के साथ मरने वालों की संख्या भी छोटी न होगी।

पानी के दस लाख हिस्सों में तीस या उस से भी ज्यादा हिस्सों का क्लोराइड कण्टेण्ट शामिल हो गया था। बारह हिस्सों के क्लोराइड कण्टेण्ट तक तो पानी सामान्य होता है, लेकिन तीस, पैंतीस या उस से भी ज्यादा हिस्सों का कण्टेण्ट···रामप्रकाश को थरथराहट हो आती···पम्पिग स्टेशन में सामान्य से बहुत ज्यादा क्लोरीन मिलाई जा रही थी, लेकिन पानी में ऐसे भी अनेक वाइरस थे, जो क्लोरीन से नष्ट नहीं किए जा सकते थे।

रात को लौटते समय रामप्रकाश यही सोच रहा था कि अब गुड्डो की शादी हो जानी चाहिए। अपने अधिकांश रिश्तेदारों से वह कटा हुआ था। भाइयों से पटती न होने के कारण वह उन से इस मामले में भी कोई सहायता लेना नहीं चाहता था। शान्ति ने अपने भाई को लिखा था कि इस सम्बन्ध में वह क्या कर सकता है। गुड्डो को अभी बताया नहीं गया था कि उस के लिए लड़के की तलाश की जा रही है। पति-पत्नी को विश्वास था कि गुड्डो से जब कहा जाएगा, उस की शादी तय हो गई है, वह सिर झुका कर इसे स्वीकार कर लेगी। गुड्डो का वह इकलौता मामा बम्बई में रहता था। अभी तक लड़के के बारे में उस का उत्तर नहीं आया था, लेकिन इस का अर्थ यह नहीं था कि उस ने बात को गम्भीरता

से न लिया हो। वह सिर्फ पत्रों के उत्तर देने में लापरवाही बरतता था।

रामप्रकाश ने ज़ीना पार किया। शान्ति स्टोव के सामने बार-बार झुक कर उस की लौ देख रही थी। स्टोव पर चढ़े बर्तन में पानी खौल रहा था। रामप्रकाश ने पूछा, "पानी नल का है या हैंड-पम्प का ?"

"हैंड-पम्प का भी पानी गन्दा आ रहा है। बाढ़ के कारण दिल्ली की जमीन अन्दर ही अन्दर खोखली हो गई है, ऐसा इंजीनियर साहब अपने घर में बता रहे थे। मुझे वहीं से पता चला। मैं ने नल का ही उबाल लिया।"

'अखबार में तो ऐसा नहीं छपा है।"

"अखबार में सारी बातें कहां छपती है ?" शान्ति उठी और एक कोने की ओर बढ़ी—पानी खौलने लगा था और उस का बर्तन उतारने के लिए कपड़ा चाहिए था। ज्यों ही उस ने कदम बढ़ाए, रामप्रकाश ने पाया, वह कुछ लंगड़ा रही थी।

"क्यों ?" उस ने पूछा, 'पैर में कुछ हो गया है क्या ?"

"जीने में रपट गया था। हैंड-पम्प के पानी की बाल्टी ले कर चढ़ रही थी। एकाएक···बस, जरा मोच आ गई है। ठीक हो जाएगी।"

"तुम्हें ध्यान से चढ़ना चाहिए था।"

"जान-बूझ कर कोई नहीं गिरता।" शान्ति ने कपड़े से बर्तन उतार जमीन पर रखते हुए कहा। रामप्रकाश ने खुले दरवाजे पर पड़ी चिक को एक हाथ से काफी ऊपर उठा कर बाहर जाने का रास्ता बनाया। शान्ति ने दोनों होंठों को आपस में भींच, बर्तन को कपड़े की मुट्ठियों के बीच पकड़ कर उठाया। कमर को झुकाए हुए वह जल्दी-जल्दी बाहर निकली। टब में नल का ठण्डा पानी भरा था। उस ने बर्तन को उस में इस तरह रखा कि ठण्डा पानी उस की गरदन से एक-दो अंगुल नीचे तक चढ़ आया।

बर्तन को ढंक कर शान्ति कमरे में आई। बोली, "नीचे वाले मकान

बदल रहे हैं।

रामप्रकाश चौंक-सा गया, "क्यों ?"

"आज मकान-मालकिन कह रही थी कि पहली मंजिल वाले जा रहे हैं। मैं ने ज्यादा पूछ-ताछ नहीं की।" शान्ति ने उंगलियों के जोड़े मरोड़ते हुए टिच-टिच की।

"यहां उन्हें कोई शिकायत थी ?"

"शायद इस से अच्छा मकान मिल गया हो।"

"अजी-हां, इस तरह मकान मिलते हैं। जहां भी जाएंगे, डेढ़ गुना किराया देंगे। छोडने के पीछे जरूर कोई-न-कोई बड़ी बात होगी।"

एक कोने में रखी डेढ़ गुना दो की छोटी मेज पर गुड्डो ने अपने कागजात फैला रखे थे। बिना हत्थे की छोटी कुर्सी पर बैठ कर वह व्यस्तता से झुकी हुई थी। जिस तरह वह जल्दी-जल्दी पन्ने पलट कर लाल पेन्सिल से कुछ लिखती जा रही थी, उस से लगता था कि वह अपने विद्यार्थियों की कापियां जांच रही है।

रामप्रकाश ने उस की पीठ की ओर देखा। लगा, अगर गुड्डो की शादी हो जाए तो कई परेशानियां स्वतः हल हो जाएंगी। शादी के बाद गुड्डो किस के साथ घूमती है, किस के साथ मित्रता रखती है या कौन-सी फिल्म देखने जाती है, वगैरह सारी जिम्मेदारियां उस के पति की होंगी। रामप्रकाश को सिर्फ इतना देखना होगा कि गुड्डो को कोई कष्ट नहीं है। या यह भी नहीं देखना होगा। कष्ट मिलना या न मिलना रामप्रकाश को संयोगों पर इतना आधारित लगा कि वह इस बारे में जो कर सकता, वह बहुत ही कम होता—न के बराबर।

बिल्लू चौगान से चिल्लाया, "पानी ठण्डा हो गया।"

शान्ति बाहर निकली। पीछे-पीछे रामप्रकाश। "तुम रहने दो।" शान्ति को लंगड़ाते देख उस ने कहा, "मैं ले आता हूं।" उस ने टब में से पानी का बर्तन निकाल कर उठाया और कमरे के फर्श पर रख दिया। बिल्लू एक कप से पानी बोतलों में डालने लगा।

"कल से डबल-रोटी नहीं मिलेगी।" रामप्रकाश ने सूचना दी।

"क्यों ?" एकाएक चौंक कर गुड्डो ने पीछे देखते हुए पूछा।

"तुम कभी अखबार नहीं पढ़तीं क्या ?" रामप्रकाश ने इस तरह कहा, मानो झगड़ा करना चाहता हो। दरअसल वह समझ न पाता था कि दिनों-दिन बड़ी हो रही इस लड़की से किस तरह बातें करे।

गुड्डो ने उत्तर दिया, "सुबह देखा तो था, लेकिन जल्दी में होने के कारण · याने कल से हमारी कैण्टीन में कुछ न मिलेगा। सिर्फ चाय पर गुजारा · वरना कभी भूख लगने पर टोस्ट वगैरह खा लेते थे ·· लेकिन डबल-रोटी मिलेगी क्यों नहीं ?" गुड्डो ने लाल पेंसिल का सिरा मुंह में डाल लिया। रामप्रकाश मन-ही-मन नाराज होने लगा कि गुड्डो को अपने बाप के सामने ऐसी अदा दिखाने की क्या जरूरत है। उस ने नजर दूसरी ओर घुमाते हुए कहा, "मैदा बनाने पर रोक लगाई गई है। आटे की लाल डबल-रोटी मिलेगी, लेकिन खरीदेगा कौन ?"

"रोक किस लिए ?" गुड्डो ने पूछा।

रामप्रकाश ने तीखी निगाह से उस की ओर देखा, "तुम मास्टरनी हो कर भी इतना नहीं समझतीं ? लोगों के लिए जब गेहूं की ही नहीं है, तो मैदा बनाने की इजाजत कैसे दी जाएगी ? सारी मिलों को सिर्फ आटा बनाना होगा।"

"हुं ··" पिता की तीखी निगाह का गुड्डो को बुरा तो लगा लेकिन उस ने कुछ न कहा। वह एक कापी में लगाए गए नम्बरों को चुपचाप गिनने लगी।

शान्ति ने आंखों-ही-आंखों पति से कहा कि लड़की को इस तरह बेवजह नहीं डांटना चाहिए। रामप्रकाश नीचे देखने लगा। अपने व्यवहार के लिए वह स्वयं ही शर्मिन्दा हो रहा था। तिस पर पत्नी ने · थोड़ी देर बाद उस ने यों ही कहा, "हुं ··तो नीचे वाले जा रहे हैं···"

शान्ति को बहुत आश्चर्य था। उतना ही दुख भी। इंजीनियर परिवार का कोई व्यक्ति ऊपर झांकने भी न आया था। 'ठीक है, आप मकान छोड़ कर जा रहे हैं···' वह अपने-आप से कह रही थी, 'शायद आप से कभी मुलाकात न होगी···लेकिन इतना अरसा साथ रहे हैं। जाते-जाते नमस्ते कर ली होती तो क्या बिगड़ जाता···?'

कमरे के अकेलेपन में शान्ति का मन न लगा। ताला लगा कर वह मकान-मालकिन के पास चली गई और बोली, "बी' जी ! ये ऊपर वाले भी अजीब रहे···अव्वल तो इतनी जल्दी जाने वाले हैं, यह किसी को बताया नहीं। इस के अलावा, जाते-जाते किसी से दुआ-सलाम भी न की। भला इस तरह भी कोई जाता है ?"

मकान-मालकिन ने उसे सोफे पर बिठाया, "हमारा मन तो हुआ था कि एक महीने का किराया वसूल कर ले। उन्होने एक महीने दा (का) नोटिस थोड़े ही दिया था। लेकिन इंजीनियर साहब थे चंगे आदमी···हम ने सोचा, चलो, जाने दो। पर तुम्हीं सोचो, इस महंगाई के जमाने में पांच रुपए भी कितने मुश्किल से बचते हैं ! यह तो पूरे एक महीने दा किराया था। दो सौ से भी ज्यादा रुपए। लेकिन मैं ने सरदारजी से कहा कि इंजीनियर साहब चंगे बन्दे हैं, जाने दो, हमारा क्या,···मकान तो चुटकियों में फिर उठ जाएगा···दिल्ली में मकान भला खाली रहता है ?"

मकान-मालकिन बोलती ही जा रही थी। शान्ति ने कई बार आश्चर्य किया था कि एक बूढ़ी औरत लगातार इतना कैसे बोल सकती है। गुड्डो तो कहती है कि एक पीरिएड लेते-लेते गला दुखने लगता है।

उस ने पूछा, "लेकिन मांजी, वे अचानक क्यों चले गए ? कोई कारण तो दिया होगा ?"

"क्या मालूम, हम से उन्होंने यही कहा कि करोल बाग में जान-पहचान के कारण एक सस्ते किराए दा मकान मिल गया है।"

"अच्छा ?"

"लेकिन मुझ से पूछो, उन्होंने झूठ ही कहा है। जान-पहचान हो या रिश्तेदारी, दिल्ली में किराए हद-से-हद पांच-दस रुपए घट हो सकते हैं। इतनी-सी बचत के लिए कोई अपना जमा-जमाया अड्डा छोड़ता है?"

"फिर क्या बात होगी?"

"खुद हम को अचरज है।" मकान-मालकिन कह रही थी, "न झगड़ा, न टण्टा, अरे, उन की तो बोलचाल ही कितनों से थी? मैं सोचती हूं, उन को किराया ज्यादा पड़ता था। कहीं पर छोटी जगह ली होगी। इसी लिए बता नहीं रहे थे।"

दरवाजे पर खटखटाहट हुई। बुढ़िया उठने लगी, "कौन?" उठने में उसे दिक्कत हो रही थी। मैं खोलती हूं। कहती हुई शान्ति दरवाजे की ओर बढ़ी। उस ने सिटकनी उतारी।

सामने एक युवक खड़ा था। देखने में वह पढ़ा-लिखा मालूम होता था। उस ने नमस्ते की। शान्ति औपचारिकता से मुस्कराई। युवक ने उस की ओर एक छपा हुआ कागज बढ़ा दिया और कहा, "आज शाम को डेरावाल भवन में एक मीटिंग है। आप जरूर आइएगा। घर के सब लोगों के साथ।"

शान्ति ने कागज ले कर उड़ती निगाह से देखा। युवक जीना चढ़ने लगा। शान्ति ने ऊंचे और रूखे स्वर में कहा, "ऊपर कोई नहीं है।"

"यहां इंजीनियर साहब रहते थे न?"

"वे मकान खाली कर गए।"

"कब?" युवक को बहुत आश्चर्य हुआ।

"आज ही सुबह।" शान्ति ने उत्तर दिया।

युवक फिर भी ऊपर जाने लगा। शान्ति ने रोका, "बरसाती में ताला लगा है। वहां हम रहते हैं। ठीक है, हम शाम को आएंगे। आप जाइए।"

युवक उतर आया और लोहे का गेट खोल कर बाहर निकला। शान्ति ने उसे बगल के मकान में प्रवेश करते देखा।

"की गल ए ?" मकान-मालकिन ने पूछा।

शान्ति ने उस कागज का मजमून पढ़ते हुए कहा, "आज शाम एक सभा है। डेरावाल भवन में।"

"सभा ? किस लिए ?"

"लिखा है, बढ़ती महंगाई का सामना करने के लिए सलाह-मशविरा किया जाएगा—कीर्तिनगर रेसिडेण्ट्स एसोसिएशन की तरफ से···"

"दिल्ली में किसी का भरोसा नहीं।" बुढ़िया ने उस की ओर गम्भीरता से देखा, "अभी जो लड़का आया था, हो सकता है, वह कोई चोर हो। इसी तरह के बहानों से वे लोग घर में घुसते हैं और देख जाते है कि क्या-क्या रखा है।"

"लेकिन मांजी, यह तो आज की ही सभा की बात है। सभा न होगी तो चालबाजी तुरन्त पकड़ में आ जाएगी। अगर वह चोर होता तो कोई ऐसा बहाना ढूंढ़ता, जिस की पोल हाथ-के-हाथ न खुलती।"

"इन की चालें समझना मुश्किल है।" बुढ़िया फिर से अपनी आदत के अनुसार नीचे देखने लगी, "मुझे तो उन पड़ोसियों का किस्सा बार-बार याद आता है। एक आदमी बिजली का मीटर चेक करने आया और ट्रांजिस्टर उठा ले गया···"

शान्ति को डर लगा। यह डर अभी जो युवक आया था, उस के प्रति नहीं था, लेकिन फिर भी उसे डर लग रहा था। वह महसूस कर रही थी कि उसे अपने घर के अन्दर होना चाहिए। वह सोचने लगी कि उठने के लिए क्या बहाना करे। बोली, "करोल बाग में सस्ते किराए का मकान ? हो नहीं सकता। एक कमरे के लिए ही पचहत्तर-सौ मांग लेते हैं। इतनी तो मुश्किल से तनख्वाह होती है।"

"नहीं-जी, कइयों को दो-दो हजार भी मिलते हैं।" मकान-मालकिन ने कहा। शान्ति को इस में व्यंग्य का आभास मिला। तिलमिला कर उस ने मकान-मालकिन की ओर देखा, लेकिन वह सिर झुका कर अपने पैरों को ताक रही थी; गोया वहां कोई दिलचस्प घटना घट रही हो।

शान्ति उठी, "अच्छा, मांजी, चलती हूं।"

ज़ीना चढ़ते समय शान्ति पहली मंज़िल पर रुकी। चारों कमरे पोपले मुंहों की तरह खाली थे। वह चल कर एक कमरे में गई। उस का बीच का दरवाजा दूसरे कमरे में खुलता था। वह दूसरे में गई। फिर स्टोर-रूम के सामने, बरामदे में निकल आई। शेष दो कमरों में भी उस ने घूम कर देखा—मानो इंजीनियर परिवार के एकाएक चले जाने पर विश्वास न कर पा रही हो। वह ज़ीने में आई और कुछ इस तरह हड़बड़ाती हुई पार करने लगी, मानो कहीं चोरी करने गई हो और कुछ हाथ लगे, इस से पहले ही पकड़े जाने का खतरा पैदा हो गया हो।

समय से एक घण्टा पहले ही गुड्डो स्कूल से लौट आई तो शान्ति को आश्चर्य हुआ। उस की आखें लाल थीं। "तबीयत तो ठीक है, बेटी ?" उसे खाट पर निढाल होते देख कर शान्ति ने पास आते हुए पूछा। उस ने उस के माथे पर हाथ रखा।

गुड्डो चुप रही। शान्ति ने फिर पूछा, "क्या बात है, बेटी ?"

गुड्डो उठी और उस की आंखों में इस तरह देखने लगी कि शान्ति आशंकित हो गई। 'कहीं इस की नौकरी तो नहीं छूट गई ?' उस ने सोचा। एक बार गुड्डो की प्रिंसिपल से झड़प हो चुकी थी। सुदर्शना से तो कई बार। वह उस के पास आई। अकस्मात् गुड्डो ने अपना माथा उस के कन्धों पर रख दिया। वह सिसकियां भरने लगी। छोटे बच्चों की तरह उस ने अपना चेहरा मां की साड़ी में छिपा दिया।

"पहले बात तो बता ? या रोती रहेगी ? नौकरी छूट गई क्या ?"

गुड्डो कुछ न बोल सकी। सिसकियों के कारण उस का शरीर सिहर उठता।

"धुत् पगली···तुम्हें कोई जिंदगी भर थोड़े ही नौकरी करनी थी··· बल्कि मैं ही कहने वाली थी कि छोड़ दे। अब तो तेरी शादी करेंगे···"

"शादी ! मुझे नहीं करनी—तुम लोगों को और कुछ सूझता भी है ?" उस ने शान्ति के कन्धे से अपना चेहरा अलग करते हुए कहा।

गाल लाल हो रहे थे। शान्ति ने सोचा कि शायद यह स्कूल में भी रो कर आई है। गुड्डो की सिसकियां रुकीं। उसे हंसी आने लगी। उस ने अपने को रोकना चाहा, लेकिन सफल न हुई। वह हंस पड़ी और शान्ति से लिपट गई, "मां!"

शान्ति बिल्कुल न समझ सकी कि माजरा क्या है। गुड्डो की हंसी ने मन की आशंका तो दूर कर दी थी, परन्तु···

उस ने खाट से उठते हुए कहा, "इतनी बड़ी हो गई लेकिन पागलपन नहीं गया।"

"मां, बता दूं?"

"मत बता, मेरी बला से!"

'बात यह है कि···कि सुदर्शना की शादी होने वाली है।"

"अच्छा? कब? लेकिन इस में तेरे रोने की क्या बात है?"

"बेचारी के घर वालों ने साफ कह दिया कि नहीं होगी।"

"याने?"

"याने उस के साथ नहीं होगी, जिस के साथ वह चाहती है।"

"लेकिन पगली, इस में तू क्यों रो रही है? इतनी पढ़-लिख गई, लेकिन जरा-सा कुछ हुआ और रो देने की तेरी आदत···लड़कियों की जात ही···अच्छा, हां, क्या नाम बताया था—कपूर?"

"हां। उन दोनों ने अपने-अपने मां-बाप से कहा। दोनों को ही साफ इन्कार हो गया।"

"लेकिन तू तो कह रही थी, शादी होने वाली है।"

"इन्कार होने का यह मतलब थोड़े ही है कि शादी न होगी?"

शान्ति ने जरा चौंक कर गुड्डो की ओर देखा। गुड्डो हंसी, "दोनों ने तय किया है कि आर्य-समाज मन्दिर में जा कर चुपके से शादी कर लेंगे। जरूरत हुई तो घर से अलग हो जाएंगे। लेकिन देखो, अभी तुम किसी को बता मत देना।"

शान्ति चुप रही। गुड्डो उस की प्रतिक्रिया देखना चाहती थी।

शायद उस ने आशा रखी थी कि शान्ति को उन दोनों का ऐसा निर्णय पसन्द आ जाएगा। उस के चेहरे पर किसी भी प्रकार का भाव न देख कर गुड्डो पसोपेश में पड गई।

फिर से उसे हंसी आने लगी। दौड़ कर वह शान्ति से लिपट गई, "मां!"

"अरे-अरे!" शान्ति ने उसे अलग करना चाहा।

"मां, तुझे कोई खुशी नहीं है?"

"है क्यों नही। वे दोनों शादी करें, सुख-चैन से जीवन बिताएं।"

"खूब! ऐसे बोल रही हो, मानो नाटक के बोल रट लिए हों।"

शान्ति इस तरह मुस्कराई, जैसे बेटी का मन रखना चाहती हो।

"बेचारों को कितनी परेशानी उठानी पड़ेगी···इस की बजाए, उन के मां-बाप राजी हो जाते, तो क्या बिगड़ जाता? दोनों सुन्दर है, एक-दूसरे को पसन्द करते है, जिम्मेदारी उठाने के लिए भी तैयार है, दोनों कमाते हैं—फिर क्या बात है, जो उन को इन्कार किया जाए?"

"हां, इन्कार नहीं करना चाहिए।" शान्ति ने तटस्थता से कहा। उसे अच्छा नहीं लगा था। वह सोचने लगी थी कि अगर कल को गुड्डो ही ऐसा काम कर बैठे, इन्हीं तर्कों के साथ सामने आ खड़ी हो, तो वह क्या जवाब देगी? हा कह देगी? नही कहेगी? निर्णय करना मुश्किल था। इतने साल दिल्ली में रह कर प्रेम-विवाह के विरोध और समर्थन में उस ने तरह-तरह की बातें सुनी थीं। दिल्ली आने के शुरू-शुरू के दिनों में तो नहीं, लेकिन बाद में उस ने महसूस किया था कि उस की दृष्टि विकसित हो रही है। तब उस ने बहुत स्पष्टता से न सही, लेकिन हर बार इसी आशय का मत दिया था कि प्रेम-विवाह में कोई बुराई नहीं है। आज उस की बेटी की सहेली प्रेम-विवाह करने जा रही थी और केवल इतने से ही शान्ति के मन की पुरानी बद्धमूलता जाग उठी थी। 'चुप क्यों हो?" गुड्डो उसे झकझोरती हुई पूछ रही थी।

शान्ति ने कह दिया, "तुम तो इतनी खुश हो, जैसे तुम्हारी ही शादी

हो रही है !"

"धत् !" गुड्डो का चेहरा लाल हो आया।

"नीचे वाले तुम्हारे स्कूल जाने के बाद मकान खाली कर गए।" शान्ति ने बताया।

"अच्छा ?" गुड्डो को यह विषय-परिवर्तन पसन्द न आया, लेकिन उसे आश्चर्य भी कम न हुआ, "जाने की बात तो वे कर रहे थे, लेकिन इतनी जल्दी···?"

"जाते-जाते नमस्ते भी न की।"

"अच्छा ? पर जाने का कारण · ?"

"मकान-मालकिन से तो कह गए हैं कि करोल बाग में जान-पहचान के कारण कम किराए का मकान मिला है, लेकिन इस में दम नहीं है।" शान्ति ने सीधी दृष्टि से बेटी की ओर देखा, "तुम्हें एक बात बताना चाहती हूं। आज शादी की बात चल पड़ी है, इस लिए साथ-साथ·· दो-एक दिन में तुम्हारे मामा का पत्र आता होगा। मैं ने उन को लिखा था कि अब···गुड्डो के लिए···"

"समझ गई। दूसरी बार बताने की क्या जरूरत थी ?" गुड्डो ने इतनी आसानी से कह दिया कि शान्ति को अचरज हुआ। उसे याद आया, जब स्वयं उस की शादी की बात पहली बार उस के सामने आई थी, वह कितनी झेंपी-शरमाई थी। गुड्डो अपनी छोटी मेज के पास जाती हुई कह रही थी, "मेरा अभी कोई इरादा नहीं है।"

"क्यों ? तुम अब छोटी नहीं हो। कभी-न-कभी तो ·"

"कह दिया न, अभी कोई इरादा नहीं है।"

शान्ति को एक आशंका हो आई। कहीं ऐसा तो नहीं कि सुदर्शना की तरह गुड्डो ने भी किसी से · उस ने भौंहों को सिकोड़ कर बेटी की ओर देखा। वह मेज पर अपनी किताबों को व्यवस्थित कर रही थी, हालांकि किताबें पहले से ही व्यवस्था में थीं। शान्ति, न मालूम क्यों, सिहर-सी गई। अगर सचमुच गुड्डो ने · क्या यह बुरा न होगा ? क्यों

होगा बुरा ? क्यों न होगा बुरा ? कायस्थ परिवार की लड़की इतनी आज़ादी के साथ···ठीक है, शहर में रहते हैं, लेकिन इस का मतलब यह थोड़े ही है कि···लेकिन इस में आखिर हर्ज क्या है ?···

मन का तूफान सहा न गया। शान्ति ने और ही तरह की बात छेड़ दी, "आज शाम को एक सभा है।" उस ने सब विस्तार से बताने के बाद कहा, "घर छोड़ कर मैं तो जाने से रही। आजकल दिन-दहाड़े चोरी हो जाती है। तुम चली जाना। अभी कुछ देर पहले एक स्कूटर से लाउड-स्पीकर वाला बता कर गया है कि कीर्तिनगर की महिलाएं जरूर आएं ··"

"देखूगी, मन होगा तो जाऊंगी।" गुड्डो ने सिर्फ इतना कहा।

रामप्रकाश के लौटने से पहले गुड्डो डेरावाल भवन जा चुकी थी। महिलाओं की भीड़ में उस ने सुदर्शना को खोजने की चेष्टा की। वह अकेली नहीं थी। उस की मां साथ थी। गुड्डो उन के साथ हो गई। भीतर दरियां बिछा कर बैठने की व्यवस्था की गई थी। कीर्तिनगर रेसिडेण्ट्स एसोसिएशन के मंत्री महोदय बोलने के लिए उठे, "···देवियो और सज्जनो, आज हम यहां इस लिए एकत्र हुए है कि बढ़ती महंगाई का सामना करने के लिए कोई उपाय सोच सकें। बल्कि उपाय तो हम ने सोच लिया है, लेकिन उस को आजमाया तभी जा सकता है, जब आप सब का पूरा सहयोग हमें मिले···।"

भाषण आगे चला। गुड्डो सुदर्शना के कान में बोली, "आज मैं ने मम्मी को सब बताया और मेरी आंखों में आंसू आ गए।"

"चुप ! अभी इस बारे में कोई बात नहीं।" सुदर्शना फुसफुसाई।

" · व्यापारी कहते हैं, माल नहीं आ रहा है। इस में सचाई नहीं है। जो आंकड़े सामने हैं, उन से पता चलता है कि चीजों को व्यापारियों और दूकानदारों ने दबा लिया है। सरकार छिपे गोदामों की सरगर्मी से खोज कर रही है। कई जगह छापे पड़े हैं। लेकिन जब तक सारा माल बाजार में नहीं आ जाता, हमारा भी फर्ज है कि इस दिशा में

कोशिश करें···दिल्ली को हर महीने करीब दो लाख दस हजार मन गेहूं की जरूरत पड़ती है। पिछले मई के महीने में यहां छह लाख मन गेहूं भेजा गया। सोचिए, कहां दो लाख और कहां छह लाख। इस के बावजूद जब गेहूं की तंगी दूर न हुई, तो आगामी माह, याने जून में, बारह लाख मन गेहूं लाया गया। फिर भी गेहूं की इतनी ज्यादा तंगी रही कि सरकार को मैदा बनाने पर रोक लगानी पड़ी। आज डबल-रोटी जैसी रोजाना के इस्तेमाल की चीज भी हमें नहीं मिल रही है···"

मंत्री महोदय ने बताया कि दिल्ली को प्रति माह तीस हजार मन चावल चाहिए, जबकि मई में तिरपन हजार और जून में तिरानवे हजार मन चावल मंगवाया गया। इस के बावजूद चावल के दाम ऊंचे होते गए। अन्त में उन्होंने कहा कि कीर्तिनगर में नई दूकानें खोली जाएं। ये दूकानें फायदे के लिए न चले। दूकानों पर कीर्तिनगर के ही निवासी काम करें। दिन के समय पुरुषों को चूंकि आफिस जाना होता है, इस लिए यह बहुत जोर दे कर कहा गया कि इन दूकानों के संचालन में महिलाओं के सहयोग का महत्व कई गुना है।

उन के बैठने के बाद एक पंचावन प्रौढ़ा ने भाषण दिया, जिस में उस ने उन्हीं की बातों को घुमा-फिरा कर दोहरा दिया। सुनने वालों में से यदि किसी को कोई शंका हो या भाषण के रूप मे कुछ कहना हो, तो इस के भी अवसर दिए गए।

फिर से गुड्डो ने सुदर्शना के कान में बुदबुदा कर कहा, "तुम दोनों कब···?"

सुदर्शना ने उस की ओर आंखें निकाल कर बनावटी गुस्से से देखा और संकेत किया कि चुप, मम्मी बगल में बैठी है···

"कई चीजें ऐसी हैं, जिन की दरों में सत्तर से सौ प्रतिशत तक बढ़ोतरी हो गई है·····" एक साहब अपने संक्षिप्त भाषण में कह रहे थे।

इंजीनियर परिवार के चले जाने और सुदर्शना द्वारा कपूर से शादी करने के निर्णय ने रामप्रकाश को उलझन में डाल दिया कि वह किस समाचार को ज्यादा महत्व दे। गुड्डो डेरावाल भवन से वापस आए, इस से पहले ही शान्ति ने रामप्रकाश को इस आशंका से भी अवगत करा देना आवश्यक समझा कि कहीं सुदर्शना की तरह गुड्डो ने भी किसी को न चुन लिया हो। रामप्रकाश ने सहजता से कह दिया, "ठीक है। इस की तसल्ली कर लेंगे कि गुड्डो ने भावावेश में किसी गलत व्यक्ति को नहीं चुना है। अगर ऐसी कोई बात न रही तो हां कह देने में क्या बुराई है?"

"तुम्हें तो खुदा भी नहीं समझ सकता।" शान्ति झल्ला पड़ी, "अभी कल तक इसी बात पर नाराज थे कि गुड्डो और सुदर्शना में इतनी दोस्ती क्यों है। आज मैं कह रही हूं कि गुड्डो ने भी कहीं सुदर्शना जैसा काम न कर डाला हो, तो जनाब बिटिया की तरफदारी कर रहे है..."

"कोई भी काम इस लिए बुरा नहीं हो जाता कि सुदर्शना ने पहले कर लिया। तुम भी तो मुझे अकसर उपदेश देती रहती हो कि बड़े शहर में पुराने खयालों को छोड़ देना चाहिए।"

"अब तुम से बहस कौन करे?"

"मुझे बताओ तो सही, तुम्हें क्या एतराज है, अगर गुड्डो..." एकाएक रामप्रकाश को हंसी आ गई, "हम दोनों तो इस तरह उलझ रहे हैं, मानो गुड्डो ने सचमुच ही..."

उसी समय गुड्डो लौट आई।

रामप्रकाश कहने लगा, "गुड्डो तुम्हें बाहर से चाय भी पीने की जरूरत नही है। परसों क्या समाचार आए हैं, मालूम है? सरकार के सी० एच० एस० अस्पतालों में भी पानी बिना उबाले इस्तेमाल होते पकड़ा गया। बड़े-से-बड़े होटलों में भी पानी सिर्फ गर्म कर के दे देते है। उबाल कर ठण्डा करने का समय किस के पास है..."

"आप तो इस तरह कह रहे हैं, मानो मैं रोज ही होटलों में..."

"मैं आरोप नहीं लगा रहा, केवल बता रहा हूं। पटेलनगर में कई अच्छे होटल हैं। वहां कभी तुम प्रिंसिपल के साथ काफी-वाफी पीने चली न जाओ, इस के लिए···स्कूल में बच्चों को तो उबाल कर ही पानी देते होंगे ?"

"हां।"

"कीर्तिनगर में वे सहयोगी दूकानें कब खुल रही हैं ?" कुछ देर बाद रामप्रकाश ने पूछा।

"भाषण में तो यही कहा गया कि अगले सप्ताह में सारा इन्तजाम हो जाएगा।"

"अच्छा ! इतनी जल्दी ?"

शान्ति ने हंस कर कहा, "दिल्ली के लोग बहुत सहनशील है, लेकिन सहने की भी एक सीमा होती है। लोगों में चेतना आ रही है।"

चार दिन बाद पहली मंजिल खाली न रही थी। चारों कमरे एक दलाल के जरिए किराए पर उठ गए। नए किराएदार दक्षिण-भारतीय थे। शान्ति ने गिन कर देखा। हर उम्र के पूरे बारह सदस्यों का परिवार था। सभी सांवले और छरहरे।

.. 6

स्कूटर घर के सामने रुका। पहले बिल्लू उतरा, फिर रामप्रकाश। उस ने स्कूटर वाले को पैसे दे कर विदा किया। बिल्लू ज़ीना चढ़ रहा था। रामप्रकाश जल्दी से उस के पास पहुंच गया और साथ-साथ चढ़ने लगा। उसे भय था, कहीं बिल्लू कमजोरी के कारण सीढ़ियों पर गिर न पड़े। वह चार दिनों में ही इतना छीज गया था कि एकाएक विश्वास ही न हो पाए, यह वही बिल्लू है, जो चीखता-चिल्लाता भी था।

डाक्टर ने कहा था, "यह कच्चा पानी पीता रहा है।"

"लेकिन डाक्टर, हम तो घर में बिना उबाले कभी नहीं···"

"स्कूल के अधिकारी अपना फर्ज नहीं समझते। कई स्कूलों में बिना उबला हुआ पानी पकड़ा गया है। सरकार किस-किस को समझाए, किस-किस को सजा दे? लोगों को भी जरा सोचना चाहिए···पता नहीं, इस ने कच्चा पानी स्कूल में पिया है या खोंचे वालों के यहां कुछ खा-पी कर···आप इस को जेब-खर्च के ज्यादा पैसे देते हैं क्या?"

"नहीं, कभी-कभार एकाध चीज खरीद दी, बस। सिक्के कभी हाथ में नहीं दिए···"

"बहरहाल, इस ने कच्चा पानी खूब पिया है।" डाक्टर ने अन्तिम मत देते हुए कहा, "लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं। ठीक हो जाएगा।"

बिल्लू को खूनी पेचिश हो गई थी।

पेट में हर समय इतना दर्द होता कि ऐंठता रहता। गुड्डो कल स्कूल नहीं गई थी। उस के सिरहाने बैठी रही थी। बिल्लू बार-बार उठता और उसे खून आने लगता।

आज गुड्डो स्कूल जा सकी थी क्योंकि बिल्लू ने अपने को इस लायक पाया था कि उस की अनुपस्थिति सह ले। नल में से बिच्छू निकलने के समाचार प्रेत की तरह शान्ति का पीछा कर रहे थे। यही हाल राम-प्रकाश का था। डाक्टर द्वारा पूरा आश्वासन मिलने के बावजूद दोनों को यही लग रहा था कि बिल्लू की जान खतरे में है। जब भी वे किसी को पानी पीते देखते, उन्हें डर-सा लगता। आज बिल्लू कल को अगर गुड्डो ··

गुड्डो के स्कूल जाने के बाद शान्ति ने उस के मामा को काफी कड़ा पत्र लिखा कि यहां हम मौत के साए में जी रहे हैं और तुम हो कि जवाब तक नहीं देते। उस ने हिदायत दी कि गुड्डो के विवाह के सम्बन्ध में वहां जो भी किया जा सकता हो, उस की सूचना शीघ्र दी जाए। लिफाफे को चिपका कर उस ने बिल्लू पर झुकते हुए कहा, "बेटे, मैं अभी इस को डाल आती हूं, अच्छा? दरवाजे को बाहर से ताला लगा कर जा रही हूं। डरना मत। बस अभी आई।"

वह वापस लौटी तो पहली मंजिल में जो हो रहा था, उस ने उसे अचरज में डाल दिया। खुले दरवाजों में से शान्ति ने झलक पाई कि सामान वगैरह बांधा जा रहा है। क्या ये लोग भी जा रहे हैं? लेकिन कहां? अभी तो इन को आए मुश्किल से डेढ़ सप्ताह बीता है। एक माह का किराया पेशगी दिया होगा। कम-से-कम महीना तो पूरा बिता कर जाते। फिर उसे लगा कि ये नहीं जा रहे है—माल वगैरह किसी और ही काम से कहीं ले जा रहे होंगे। इतने महंगे किरायों के मकान बार-बार थोड़े ही बदले जाते हैं।

उस ने ताला खोला और कमरे में आ कर बिल्लू की ओर स्नेह से

देख लिया। नीचे वालों के यहां बांधा जा रहा सामान उसे फिर कुरेद गया। उस से न रहा जा सका। उन लोगों से उस की अभी बोल-चाल नहीं थी। उस ने सोचा, अच्छा अवसर है। जा कर पूछू, 'क्या बात है, आप लोग जा तो नहीं रहे ?'

"बिल्लू, मैं अभी आई—जरा नीचे से···" कह कर वह सीढ़ियां उतरने लगी। पहली मंजिल वालों के दरवाजे को उस ने जरा झिझकते हुए पार किया। उस ने पाया, एक प्रौढ़ा उस की ओर अत्यधिक तीखी निगाहों से देख रही है। वह ठिठक कर खड़ी रह गई। उस ने कुछ कहना चाहा, लेकिन इस से पहले ही उस औरत ने हाथ हिला-हिला कर न मालूम किस भाषा मे जोरों से चिल्लाना शुरू कर दिया। तुरन्त दूसरे कमरे से दो जवान लड़किया वहा आ गई और चिल्लाने लगी। शान्ति एकदम सकते में आ कर उल्टे पैरों बाहर निकल आई। उस ने अपने पीछे दरवाजों को भड़ाक-से बन्द होते सुना।

उस ने बहुत कोशिश की कि पड़ोसियों के ऐसे व्यवहार का कारण समझ में आ जाए, लेकिन कोई तारतम्य ही नही था · न झगड़ा, न मन-मुटाव—यह सब तो दूर, अभी बातचीत भी शुरू न हुई थी। उसे प्यास लगी। उस ने एक ग्लास में बोतल का पानी ढाला और आधा ही पी कर छोड़ दिया। बिल्लू आखें मूद कर जागता हुआ पड़ा था।

दोपहर के बाद उस ने जंगले के पास खड़े हो कर देखा, मकान के सामने दो टैक्सियां रुकी हुई थीं और पहली मजिल वालों का सामान लद रहा था। पीछे के ढक्कन उठा दिए गए थे। उन में ट्रंक, बिस्तर वगैरह ठूसे हुए थे। उन में ट्रंक, बिस्तर वगैरह ठूसे हुए थे। परिवार के सदस्य उत्तेजित मालूम पडे।

कमरे मे आ कर परदे की ओट लेते हुए शान्ति ने खिड़की से इस तरह झांका कि वह तो सब कुछ देख ले लेकिन दूसरे उसे न देखें। थोड़ा-बहुत नही, बल्कि सारा ही सामान कहीं ले जाया जा रहा था। इस में अब शक नहीं किया जा सकता था कि किराएदारों ने मकान छोड़ दिया

था। शान्ति साहस न कर सकी कि नीचे उतर कर इन के जाने का कारण मालूम करे। प्रौढ़ा कहीं फिर इस तरह न चिल्लाने लगे कि फजीता हो जाए।

दोनों टैक्सियां रवाना हो गईं तो शान्ति अधैर्य और बौखलाहट से ज़ीना उतरने लगी। वह मकान-मालकिन से पूछना चाहती थी। अभी वह आधा ही जीना पार कर पाई थी कि उस ने बुढ़िया मकान-मालकिन को ऊपर आते देखा। घुटनों पर हाथ का सहारा दे-दे कर वह एक-एक सीढ़ी बहुत कोशिश के साथ चढ़ रही थी। "अरे, मांजी, आप ने इतनी तकलीफ क्यों की···मैं खुद ही आप के पास ··"

बुढ़िया ने सीढ़ी पर रुक कर जरा हांफते हुए कहा, "नही बेटी, आज मैं ही तेरे यहां ···तू तो रोज ही मेरे यहां आती है···"

शान्ति ने उस को सहारा देना चाहा। वह बोली, "नहीं, मैं वैसे ही चढ़ जाऊंगी···"

ऊपर आ कर बुढ़िया शान्ति की आंखों में ताकती रही। फिर गहरी सांस लेते हुए उस ने नीचे देखा। शान्ति समझ न पाई कि वह कौन-सी बात कहने की तैयारी कर रही है।

"कमरे में आ जाइए।" शान्ति ने कहा। उस ने चिक उठाई। मकान-मालकिन भीतर आई। उस ने बिल्लू के पास जा कर तसल्ली करनी चाही कि यह अच्छी तरह नींद में है या नहीं। "बेचारा···कितना दुबला हो गया···"

शान्ति उदासी से बोली, "क्या करें, न मालूम कहां-कहां कच्चा पानी पीता रहा···कितना समझाया था, लेकिन चौबीसों घण्टे निगरानी तो नहीं रखी जा सकती।"

बुढ़िया चुप रही। उस ने शान्ति की आंखों में फिर उसी सांकेतिकता के साथ देखा, जिस की रहस्यमयता से वह बुरी तरह आशंकित हो रही थी। उस ने दरी बिछाई। बुढ़िया इस तरह बैठी मानो हताशा का सामना करने में असमर्थ हो। पास ही शान्ति बैठ गई और बोली,

"कुछ समझ में नहीं आता ··अच्छे-खासे चार कमरे है। पूरी आजादी है कि जब मन हो, आओ-जाओ। शोर-शराबा नही है। किराया भी आप वाजिब लेते हैं। फिर वजह क्या हो गई, जिस से ये इतनी जल्दी चले गए ?"

मकान-मालकिन ने एक बार फिर बिल्लू की ओर देख कर आश्वासन पा लिया कि वह उन की बातें नहीं सुन रहा है। जरा पास खिसक कर उस ने लगभग फुसफुसाते हुए कहा, "बात यह है···देखो, बुरा मत मानना, लेकिन तुम लोगों की बदनामी हो रही है।"

"जी ?" शान्ति एकदम चौक गई।

आदत के अनुसार बुढ़िया अपने पैरों की ओर देखने लगी और धाराप्रवाह बोली, "तुम्हारी कुड़ी (लड़की) उस के साथ आती-जाती है न ? वही—सुदर्शना···उस के कारण गुड्डो भी बदनाम हो गई है। इंजीनियर के जाने का भी यही कारण था, हालांकि मैने तुम्हे बताया नहीं था। सोचा था, बात दब जाएगी। मैं तो जानती हूं···आखिर तुम लोगों को इतने सालों से देख रही हूं···लेकिन दुनिया की जबान कैसे बन्द की जाए ? न मालूम कैसे, सब को पता चल गया कि सुदर्शना बुरी है। परसों रात सुदर्शना के यहां···तुम जानती ही होगी···उस के यहा बहुत बड़ा झगड़ा हुआ···"

"नहीं, मुझे कुछ नहीं मालूम···" एक-एक शब्द शान्ति के गले में फस रहा था।

"मां-बेटी में ऐसी झड़प हुई कि पड़ोसियों तक को पता चल गया ···सुदर्शना किसी के साथ · हाय, कैसा जमाना आया है · वह नसीबां-जली···अभी कल तक दूध पीती थी···आज उस ने लड़का चुन लिया ···न मालूम कौन है, कैसे खानदान का है · कहती है, उसी के साथ शादी करूंगी, वरना मर जाऊंगी···न मालूम, किन-किन के साथ घूमती रहती है। कई लोगों ने अपनी आंखों से देखा है·· तुम मेरा मतलब समझ गई न ? लोग गुड्डो को भी इसी लिए इंजीनियर साहब की घर

वाली ने उन को मजबूर किया कि मकान छोड दें···तुम्हें आज बता रही हूं · बुरा मत मानना। कह गए थे, जिस मकान में ऐसी लड़की हो, वहां कोई टब्बर (परिवार) वाला कैसे रह सकता है ? फिर ये लोग आए। उन को भी न मालूम किस ने भड़का दिया···बताओ, मैं क्या करूं ··"

' लेकिन सुदर्शना तो उस लड़के के साथ शादी करने वाली है।"

"शादी तो एक से करेगी। घूमती न मालूम कितनों के साथ है। जाने क्या-क्या धन्धे करती है। लोगों ने अपनी आंखों से देखा है। सच-मुच कोई बात होगी तभी तो···वरना बेवजह इतनी अफवाह थोड़े ही फैलती है···आजकल की कुड़ियों ने तो हद कर दी···वैसे मैं गुड्डो को कुछ नहीं कह रही हूं · मैं तो जानती हूं कि गुड्डो अच्छी है···लेकिन किराएदारों को कौन समझाए ?···"

शान्ति ने अपनी कनपटियों पर खून का तेज हो जाना महसूस किया। उस के पूरे जिस्म में झुरझुरी हो रही थी। समूचे चेहरे की चमड़ी तनने लगी थी। एकाएक उस का ध्यान इस ओर गया कि उस ने पल्लू के नीचे अपनी मुट्ठियां बन्द कर रखी हैं। मुट्ठियां खोलीं— उंगलियों पर पसीना आ गया था। साड़ी पर हथेलियों को मसल कर सुखाना चाहा। बोल कुछ न पाई। दो पल बुढ़िया की ओर देखती रही, फिर गहरी उसांस के साथ उस ने आंखें फेर लीं।

"बस बेटी, यही कहना था ··" बुढ़िया उठने लगी।

रामप्रकाश भभक पड़ा, "मैं शुरू से कहता रहा कि इन दोनों की दोस्ती···लेकिन तुम ने हमेशा मेरी खिलाफत की···"

रात पति-पत्नी ने खाना न खाया।

"ध्यान रखना, गुड्डो को कुछ भी मालूम न हो, वरना वह क्या सोचेगी ···" शान्ति ने भर्राई आवाज में कहा।

६

अधिकारियों ने घोषित कर दिया था कि अब पानी को पीने से पहले उबालने की जरूरत नही है—वह अशुद्ध नहीं रहा है। रामप्रकाश को इस घोषणा पर विश्वास न था, क्योंकि वह जानता था कि जिन प्रयोगशालाओं में पानी की जांच की गई है, वे कैसी है। एकाध सप्ताह पहले एक अखबार ने काली लकीरों से घेर कर यह खबर छापी थी कि वाटर सप्लाई एण्ड सीवेज डिस्पोसल अण्डरटेकिंग की प्रयोगशाला में उपकरणों के नाम पर सिर्फ कुछ बोतलें, कांच की दो छड़ें और कुछ रसायन है। यह प्रयोगशाला वजीराबाद वाटर वर्क्स के पम्पिंग रूम की खिड़की के पास एक छोटी-सी जगह में समा गई है। पानी की जाच के लिए वहा केवल एक ज्यूनियर केमिस्ट है। ऐसी खस्ता प्रयोगशाला द्वारा की गई यह घोषणा कि पानी अब स्वच्छ हो गया है, सचमुच उसे विश्वसनीय नही लगी। उस ने शान्ति से आग्रह किया कि दूसरे लोग भले ही बिना उबाले पीने लगें, लेकिन हमारे घर में उबलना चाहिए।

"कब तक ?" शान्ति ने पूछा।

रामप्रकाश उत्तर न दे सका।

शान्ति ने कहा, "अब बिल्लू ठीक हो गया है। न हुआ होता तब तो मैं तुम्हारी बात मान सकती थी।"

"जैसा तुम चाहो।"

"अभी डाक्टर के यहां होते जाना। उस ने बिल बना रखा होगा।"

"अच्छा।" वह सीढ़ियां उतरने लगा। डाक्टर वेस्ट पटेलनगर में था। कीर्तिनगर में भी कई डाक्टर थे लेकिन रामप्रकाश उन में से किसी के भी व्यक्तित्व से प्रभावित न हुआ था। पटेलनगर वाला यह डाक्टर अच्छा था, यह उस ने अपने कुछ परिचितों से सुना था। शादीपुर डिपो जाने के लिए वह झुग्गियों की बस्ती पाण्डुनगर की पगडण्डी पर चलने लगा।

हर दूसरी या तीसरी झुग्गी पर उस ने यह नारा लिखा हुआ देखा, 'अस्सी गज का प्लाट ले कर रहेंगे।'

एक झोपड़ी में से उस ने ऊंचे स्वर में रेडियो की आवाज सुनी। उस ने भीतर देखा। रेडियो नहीं, ट्रांजिस्टर था। मटमैले कपड़े पहने एक व्यक्ति उसे गोद में रख कर आराम से सो रहा था।

रामप्रकाश चौंक कर खड़ा हो गया। पाण्डुनगर में पाठक ?

हां, यह पाठक ही था।

"अरे ! तुम ? यहां ?" उस ने पास जाते हुए पूछा।

पाठक ने हड़बड़ा कर पीछे देखा। दोनों ने हाथ मिलाए। पाठक हंसने लगा, 'हां, मैं। अचरज हो रहा है ? मैं ने सोचा था, आप को बताने की जरूरत न पड़ेगी, लेकिन आज आप ने देख लिया।···आज की रात मैं ने इसी बस्ती में गुजारी है। यहां मेरी सगी मौसी रहती है।"

"मौसी ? झोपड़ियों की बस्ती में ?"

"हां। आइए, डिपो पहुंचें।" पाठक ने कहा।

एक ओर बहुत पुराना रोड-रालर खड़ा था। पास ही बिल्कुल नई, चमचमाती कार मौजूद थी। उस में कोई रईसजादा बैठा हुआ सिगरेट पी रहा था। सामने की झोपड़ी में एक छोटी मेज पर जो कागजात बिछे हुए थे, उन से लगता था कि यहां नक्शे वगैरह तैयार होते है। एक सार्वजनिक नल पर हर उम्र की कई फूहड़ औरतें कपड़े धो रहीं थीं। पास ही एक पुरुष लगभग लंगोटे जैसा एक जांघिया पहन कर नहा रहा

था। नुक्कड़ पर किरियाने की एक दूकान थी। उस के मालिक के पास भी एक ट्रांजिस्टर था जो उस ने पूरी ऊंचाई पर खोल रखा था। नुक्कड़ पार करने के बाद शादीपुर डिपो की इमारत और लाल बसों की कतार नजर आई।

पाठक ने कहा, "आज आप घर से जल्दी निकल पड़े ?"

'रास्ते में पटेलनगर के एक डाक्टर के पास रुकना है। बिल्लू बीमार था न ! अब ठीक हो गया है। दवाओं का बिल लेने जाना है। इस पहली तारीख को पेमैंट कर देना होगा।"

"चलिए, आप को अकेले नहीं जाना पड़ेगा। मैं साथ हूं।" पाठक मुस्कराया, "और अब बता ही दू···मैं ने मजाक नही किया था। यहां वाकई मेरी सगी मौसी रहती है। पिछले आठ सालों से।"

यह सवाल रामप्रकाश के होठों तक आ कर रुक गया, 'क्या वह इतनी गरीब है कि उसे ऐसी जगह में···'

बिना पूछे ही पाठक उत्तर दे रहा था, "चूंकि वह यहा आठ सालों से है, इस लिए उस की झोपड़ी नष्ट करने से पहले सरकार को उसे जमीन देनी होगी। सरकार इन लोगों को शायद पचास गज का प्लाट देना चाहती है। ये अस्सी गज का चाहते हैं। इसी का झगड़ा चल रहा है। सारी बेईमानी सरकार की और सारी ईमानदारी गरीबो की ही नहीं होती।"

रामप्रकाश ने उसकी ओर अविश्वास से देखा। वह कह रहा था, "झोपड़ियों की यह बस्ती नष्ट तभी की जा सकती है जब प्लाट का मसला हल हो जाए। सभी को, मान लीजिए, अस्सी-अस्सी गज के प्लाट मिले। इतनी जमीन की दिल्ली में क्या कीमत होगी, सोचिए।"

"कीमत ज्यादा तब होती है, जब वह अच्छी कालोनी में हो। जो कालोनी इन झुग्गी वालों के लिए बनेगी, वहां अच्छी कीमत देने कौन जाएगा ?"

"यही तो मजा है !" पाठक हंसा, "सभी झुग्गी वाले अपना प्लाट

बेच देंगे। फिर कहीं और झुग्गिस्तान बसा लेंगे। कई सालों बाद वहां से हटाने के लिए सरकार को इन्हें फिर से जमीन देनी होगी। ये जिन लोगों को प्लाट बेचेंगे, वे इतने समर्थ होंगे कि अपना पैसा लगा कर झुग्गिस्तान को ही परिस्तान में बदल दें। जे० जे० कालोनी के साथ यही तो हुआ। वह झुग्गी वालों के लिए बनी थी, आज वहां लखपति रहते हैं।"

"हुं..."

"क्या आप सोचते हैं, इस कालोनी में सभी गरीब है ? राम भजिए ! इन में से कुछ तो वाकई गरीब हैं, लेकिन इन्हीं में ऐसे भी मिल जाएंगे, जिन के पास हजारों दबा हुआ होगा। याने, मेरी मौसी यहां इस लिए रहती है कि " पाठक हंसने लगा।

जब ये पटेलनगर के डाक्टर के यहां पहुंचे, बिल इन्तजार कर रहा था। बिल की रकम देखते ही रामप्रकाश के तोते उड़ गए। उस ने कहा, "डाक्टर ! आप से कोई गलती तो नही हुई है ?"

"क्यों ?"

"उस छोटे-से लड़के की बीमारी का बिल दो सौ रुपए ?"

डाक्टर चश्मा उतार कर मेज पर रखता हुआ हंसा, "लड़का छोटा-सा था, मर्ज तो छोटा नहीं था ?"

"लेकिन डाक्टर, हमने भी कई बार इलाज कराए है। क्या हमें अन्दाज़ा नहीं हो सकता कि बिल कितना आएगा ? मैं ने तो सोचा था, हद-से-हद पचास-साठ..."

'पचास-साठ ?" डाक्टर ने स्वर चबाते हुए व्यंग्य किया, "मेरी दवाओं ने आप के बच्चे की जान बचाई। अहसान मानता तो दूर, उल्टे आप..."

"देखिए डाक्टर," पाठक आगे आया, "हम दवाओं की दूकान में काम करते हैं। हमें सारे दाम मालूम हैं। बताइए, आप ने बलदेव को क्या-क्या दवाएं दीं ? अभी हिसाब लगा कर बताता हूं, बिल कितना

होना चाहिए।"

पाठक का रुख बहुत कठोर था, लेकिन डाक्टर पर कोई असर न हुआ। शायद इस के लिए वह पहले से तैयार था। उस ने उसी तरह बनावटी नम्रता से कहा, "मैं ने एक पैसा भी ज्यादा नहीं लगाया है।"

"फिर इतना बिल ?"

"दवाएं तो लाखों होती हैं। दवा कौन-सी दी जाए और कब-कितनी दी जाए, इसी की असली कीमत है। आप से बिल्कुल वाजिब ले रहा हूं।"

"याने, आप ने कन्सल्टेशन फी लगा कर इतना बड़ा बिल बना दिया ?"

"बिल बड़ा है ही नहीं।" डाक्टर ने चश्मा चढ़ा लिया। वह प्लस चश्मा था। उस की आंखे फैली-फैली नजर आने लगी।

रामप्रकाश ने देखा कि घी तो टेढ़ी उंगली से भी नहीं निकल रहा। उस ने अधिकाधिक मुलायम बनते हुए कहा, "देखिए डाक्टर साहब, मै आप के पास इस लिए आया था कि मेरे एक दोस्त ने सलाह दी थी। वरना आप ही बताइए, मैं कीर्तिनगर जैसी दूर की जगह से यहां क्यों आता ? किसी सरकारी अस्पताल में भी जा सकता था।"

"देखिएजी, सभी जानते हैं कि दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में मरीज को किस तरह रखा जाता है। प्राइवेट डाक्टरों के पास लोग बेवजह नहीं आते।"

"प्राइवेट डाक्टर कीर्तिनगर मे भी है।"

"आप अपने दोस्त के रिकमण्डेशन के कारण यहां आए—ठीक है न ? उन्हीं दोस्त के कारण मैं ने आप से नगद पैसे नहीं लिए। इस के अलावा और क्या कर सकता हूं ? आप को मालूम होना चाहिए कि डाक्टर पहले पैसे रखवा लेते हैं, बात बाद में करते हैं।"

पाठक रामप्रकाश का चेहरा ताकने लगा। रामप्रकाश ने सिर झुका कर बिल उठाया और जेब में रखा। वह बोला, "ओके डाक्टर, आप ने

तो हमारे कहने के लिए कुछ भी न बचाया।"

वे रवाना होने वाले थे कि डाक्टर ने पीछे से टोका, "तो आप पहली तारीख को आ रहे हैं न ?"

"जी हां।" मुड़ कर उस की ओर देखे बिना रामप्रकाश ने कहा।

"बिल्कुल चमड़ी उतार लेते हैं !" पाठक बुदबुदाया।

'अखबारों में भले ही आता रहा हो कि पानी खराब होने पर भी बीमारों की संख्या नहीं बढ़ी, लेकिन असलियत कुछ और ही है। डाक्टरों ने देखा, बहती गंगा में हाथ धोने का ऐसा मौका रोज-रोज नहीं आएगा।"

ड्रग-स्टोर पहुंच कर रामप्रकाश ने अपने उस परिचित को फोन कर के सारी बात बताई। उधर से आवाज आई, "भई, इस मामले में मैं लाचार हूं। डाक्टर से इतना तो कह सकता था कि बिल का पैसा बाद में लें, लेकिन जहां तक रकम घटाने का सवाल है···"

"छोड़िए···मैं इसी पहली को दे दूंगा।" कह कर रामप्रकाश ने फोन रख दिया।

लेकिन वह जानता था कि पहली तारीख को दो सौ रुपए नही दिए जा सकते थे। उस ने सोचा कि पचास-पचास की किस्तें बना कर चार महीनों में भरपाई कर देगा। उसे विश्वास था कि परिचित के कारण इतनी और रियायत उसे मिल ही जाएगी।

काम में दिन भर मन न लगा। उदासी में उसे सिर्फ एक बात याद आती कि लड़के के बारे में गुड्डो के मामा ने कोई जवाब नहीं दिया है··· शान्ति का कहना था कि जरूर वह शहर से बाहर है, वरना दो लकीरों का पत्र लिखने में कितनी देर ? इस मामले में सारा दारोमदार एक ही व्यक्ति पर रखना रामप्रकाश को अखरने लगा था, लेकिन यह भी समझना मुश्किल था कि और किस को लिखा जाए—लड़का देखिए !

तीसरे दिन एक्स ब्लाक की अधिकाश औरतें एक-दूसरी से मिलने के लिए लालायित हो उठी थीं। समाचार एक घर से दूसरे, दूसरे से

तीसरे—यों दूर-दूर तक फैल गए थे। एक्स ब्लाक के आस-पास के ब्लाकों में भी पता चल गया था कि सुदर्शना कल रात घर नहीं आई है। सभी कह रहे थे कि वह उस लड़के के साथ भाग गई है···दोनों ने छिप कर शादी कर ली होगी···हर औरत अपने घर से निकल कर दूसरे घर में जा रही थी, जिस से हर घर में गलत औरत आ गई थी··· सुना ? मैं पहले ही कहती थी·· खुली सड़कों पर, होटलों में, स्कूटर और टैक्सी में सभी जगह उस ने इतना खुल्लम-खुल्ला···अपनी आंखों से देखा था मैं ने · सुनी-सुनाई बात नहीं है—हां !···और अभी तो देखना···उस की वह सहेली है न ? चौबीसो घण्टे साथ रहती है···वही गुड्डो·····मास्टरनी है जी मास्टरनी···आज इस के साथ, कल उस के साथ···हाय, क्या जमाना आया है !···इसी लिए तो वह मकान खाली पड़ा है। दलाल उस में किराएदार बिठाता ही नहीं। भला बताओ, जिस मकान में गुड्डो जैसी कुड़ी रहती हो, उस में किसी बाल-बच्चों वाले का गुजारा कैसे···? सुना ? गुड्डो के डैडी को मालिक-मकान ने साफ कह दिया कि मकान खाली करो···हां, री, सुना तो मैंने भी है · !

"अगर आप मकान खाली कर दें, तो बड़ा अच्छा हो।" उस दिन रामप्रकाश को बुला कर मकान-मालिक के जवान बेटे ने कहा था और वह भीतर-ही-भीतर जल उठा था। उस ने नम्र बनते हुए उत्तर दिया था, "ऐसी क्या बात हो गई, सरदारजी ? हम तो आप के पुराने किराएदार हैं। हमारे-आप के घर जैसे ताल्लुकात···"

"वो सब ठीक है, लेकिन आप मकान खाली कर दीजिए।" मकान-मालिक के बेटे ने कहा। उस ने आज सिर धोया था। उस ने लम्बे बालों को सुखाने के लिए औरतों की तरह फैला दिया था, जिस से उस का बड़ा सिर और भी बड़ा लग रहा था। फैले हुए बाल सिंह की अयाल जैसे।

रामप्रकाश ने दोनों हाथों की उंगलियां आपस में उलझाते हुए

पूछा, "लेकिन सरदारजी, वजह ?"

"वजह आप जानते हैं।"

रामप्रकाश सन्न रह गया। किसी तरह बोला, "मैं मतलब नहीं समझा।"

"देखिएजी, जब आप सुनना ही चाहते हैं तो मैं ने समझा था, इशारा काफी होगा···बात यह है · आप के कारण हमारी पहली मंजिल किराए पर नहीं उठती। दलाल से हम ने कितना कहा-सुना, लेकिन वह किसी को हमारी कोठी दिखाता ही नहीं। और मान लीजिए, वह दिखाए भी · आप जानते ही हैं, किराएदार महीना पूरा किए बगैर भाग जाता है। इस से दलाल के ग्राहक टूटते हैं। अच्छा हो, अगर आप खाली कर दें···"

"लेकिन मैं कहां जाऊं ?" रामप्रकाश ने पूछा। पूछते ही लगा, उस ने बेवकूफी कर ली है। मकान-मालिक को क्या सरोकार ? हुंह ! बच्चों की तरह पूछने बैठे हैं, मै कहां जाऊं ? रामप्रकाश स्वयं पर खीज गया। उस ने नीचे देखते हुए कहा, "सोचूंगा।"

'सोचने की गुंजाइश ही नहीं है।" लड़के ने दोनों हथेलियों से बालों को मला, फिर उन में उंगलियों को कंघी की तरह फेरा।

"याने ?" रामप्रकाश की आवाज कुछ तीखी हो आई।

"याने कि इसी पहली तारीख को आप खाली कर दीजिए।"

"पहली तारीख एक हफ्ते में आ जाएगी। आप को कम-से-कम एक महीना पहले बताना चाहिए। यही कानून है।"

"कानून की ऐसी की तैसी ! आप खाली कर रहे है या नही ?" लड़का जनून में आ कर कुर्सी पर कुछ आगे झुका।

"अरे ! अरे ! पुत्तर ! इस तरह गल्लां (बातें) की जाती हैं ?" कहती हुई उस की बुढ़िया मां (जो शायद परदे की ओट से सब सुन रही थी) वहां आई और सामने बैठ कर समझाती हुई बोली, "बेटे ! (यह शब्द रामप्रकाश के लिए इस्तेमाल हुआ था) जो गैर-वाजिब है,

उस के लिए हम थोड़े ही जोर देंगे ? ठीक है, हम ने एक महीने दा (का) नोटिस नहीं दिया। तुमी (आप) एक महीने दा किराया हम से ले लो। बेशक पेशगी ले लो।"

"नहीं-जी-नहीं," लड़के ने टोकते हुए कहा, "पेशगी किस बात की ? ये क्या, इन के बाप को भी खाली करना पड़ेगा।"

'देखिए मिस्टर," रामप्रकाश उठ खड़ा हुआ, "पहले आप तमीज से बात करना सीखिए।"

"जाज्जा ! बड़ा आया तमीज सिखाने वाला।"

"अरे-अरे ! तुसीं तो झगड़ा करने लग पए···!" बढ़िया फिर बीच में पड़ी। लड़के को शान्त करते हुए उस ने रामप्रकाश से आग्रह किया कि बैठ जाए, लेकिन रामप्रकाश बोला, "मुझे देर हो रही है। आप से रात को बात करूंगा।"

"बात क्या करनी है ?" लड़का तेज आवाज में चुनौती देता हुआ बोला, "साफ सुन लीजिए, आप को मकान खाली करना है। ज्यादा गड़बड़ की तो आंगन में रोज हड्डी फेंकूंगा—समझे ?"

थरथराता रामप्रकाश कमरे से निकल आया।

अव्वल तो इतने कम किराए पर दूसरी बरसाती मिल नहीं सकती थी। दूसरे, जब सिर पर डाक्टर का बिल लटक रहा हो तो नया मकान दिलाने के लिए एजेण्ट का कमीशन और सारा सामान लाद कर ले जाने का खर्चा उठाना सम्भव नहीं था। मकान-मालिक के बेटे के लिए झगड़ा करना बहुत आसान था। यदि सचमुच उस ने रोज एकाध हड्डी रामप्रकाश के चौगान में फेंकनी शुरू की तो शान्ति को तो कै होने लगेगी···!

रामप्रकाश ने महसूस किया, उस की जिंदगी में पिछले कुछ माहों से सभी कुछ असन्तुलित हो गया है। दिल्ली में दिन-रात का एक-एक जोड़ा इतना जटिल हो चला है कि उस को जीने के लिए बहुत ज्यादा ताकत चाहिए—उतनी ताकत रामप्रकाश ने उस वक्त तो महसूस न ही

की। कुछ साल पहले जब वह दिल्ली आया था, जीवन आज के जितना उलझा हुआ नहीं था, किन्तु ज्यों-ज्यों दिन बीते थे···

सुदर्शना उस दिन से घर लौटी ही नहीं थी। गुड्डो को भी नहीं मालूम था कि वह कहां थी। प्रिंसिपल ने उस को डिसमिस कर दिया था। सुदर्शना बालिग उम्र की हो चुकी होने के कारण उस ने स्वेच्छा से जो विवाह किया था, उस के विरोध में अब कुछ भी करना असम्भव था।···हां, तो गुड्डो। गुड्डो की शादी। उस के मामा ने अभी तक उत्तर नहीं दिया···।

रामप्रकाश को इतना बुरा लगा कि उस ने उसी समय गुड्डो के मामा के नाम एक रजिस्टर्ड पत्र लिखने का निर्णय ले लिया। ड्रग-स्टोर के टाइप-राइटर पर उस ने एक संक्षिप्त पत्र लिख कर नौकर के हाथ रजिस्ट्री के लिए भेज दिया।

गुड्डो···सुदर्शना के कारण वह भी बदनाम हो चली है · लेकिन इस से क्या फर्क पड़ता है···कौन-सी गुड्डो की शादी कीर्तिनगर में ही करने का बन्धन है ? उस का मामा रहता है बम्बई में। वहां तलाश करेगा। दूसरे शहरों में बैठे अपने रिश्तेदारों को भी तो लिखेगा वह···और भला ऐसी कौन-सी जवान लड़की है, जिस के बारे में थोड़ी-बहुत अफवाह न उड़ी हो ?···गुड्डो · गुड्डो तो बहुत अच्छी है···सुदर्शना के साथ रह कर वह जरा तेज हो गई है, बस, लेकिन वह बहुत अच्छी है···

उसे याद आया, स्वास्थ्य मन्त्राणी ने कहा था, "पानी अशुद्ध हो जाना एक ईश्वरीय प्रकोप है। हम इस बारे में कुछ नहीं कर सकते···" वाह जी वाह ! ईश्वरीय प्रकोप कैसे हैं ?···बाढ़ हर साल आती है। क्यों नहीं इस बाढ़ की रोकथाम की जाती ?···इस साल पानी में मल और कूड़ा आ मिला। सन १९५५ में भी यही हुआ था। प्रकृति द्वारा एक बार चेतावनी मिलने के बावजूद कोई रोकथाम न की गई। फुरसत किसे है ?···

उस ने तय किया कि जो बीत चुका है, उस पर सोच कर इतना

परेशान नहीं होना चाहिए। टप-टप-टप···जी, बाबूजी, अभी आया ·· वैक्यूलैक्स ?···चार टिकियां···बिल काटिएगा जी, बारह रुपए सात पैसे···कीर्तिनगर में सहयोगी दूकानें खुली हैं···कलकत्ता की मिलों के तेरह व्यापारी गायब हो गए है। डिफेन्स आफ इण्डिया रूल्स के अंतर्गत उन की गिरफ्तारी का वारण्ट निकला हुआ है···उन्होने पिछले एक साल में गेहूं और गेहूं से बनी चीजों की ब्लैक-मारकेटिंग कर के···इतनी घनी, व्यापक और अनुगुंजित आवाज कि हवा में थरथराहट महसूस हो—कोई हवाई-जहाज गुजर रहा है···हुं · रिसीव्ड योर लेटर सिर्फ एक साल की ब्लैक-मारकेटिंग से उन्होंने कम-से-कम पांच करोड रुपए कमाए है··तलाश जारी है·· कागज झटके के साथ बाहर खीचने पर टाइप-राइटर कैसे बोलता है—किररररर···ट्रिन-ट्रिन-ट्रिन···ड्रग-स्टोर का फोन घनघना रहा है·· हुंह ! होगा कोई · गुड्डो···उस की शादी जल्दी हो जाए तो कितना अच्छा ··रजिस्टर्ड पत्र का तो जवाब आएगा ही ·· हैलो !···गुड्डो चली जाए ससुराल, फिर छुट्टी · फिर चाहे पानी में जहरीले कण आने लगे, चाहे सड़कों में असंख्य गड्ढे हो जाएं···रही बात बिल्लू की · वह किसी-न-किसी तरह बड़ा हो जाएगा लड़कों की चिन्ता करने की वैसे भी जरूरत नहीं होती।···फोन पर बात खत्म हो गई है···और, कौन-सा मैं आज ही मरा जा रहा हूं···गुड्डो की शादी में दहेज भी देना होगा···डाक्टर का बिल···मकान बदलना है · रह सवाल दहेज का···जा कर भाइयों से झगड़ा करूंगा कि मिल्कियत में से हिस्सा लाओ।

गुड्डो के मामा ने अगर दिलचस्पी न ली या उस की निगाह में अगर कोई अच्छा लड़का न हुआ तो दूसरे रिश्तेदारों को भी लिखूंगा ···झगड़े-टण्टे तो परिवारों में चलते रहते हैं···भाइयों को भी लिखूंगा कि गुड्डो के लिए देखते रहो···कभी-कभी झुकना जरूरी हो जाता है गुड्डो···गुड्डो···गुड्डो···उस की शादी·· शादी···शादी·· टप-टप-टप · एक बार ससुराल चली जाए·· टिक टिक टिक·· यह आखिर

पत्र टाइप करना है···उस के बाद लंच के बहाने जरा टहल आऊंगा। खाने की जरा भी इच्छा नहीं है·· वह सरदार·· किस तरह चीख रहा था अरे, मकान-मालिक हो, कोई खुदा नहीं ··

आज पाठक चुप-चुप है···होगी कोई बात···इन कुंवारो के भी अपने झमेले होते हैं ··कीर्तिनगर में सहयोगी दूकानें खुली है···बिल्लू की बीमारी के कारण शान्ति वहां एक बार भी काम करने न जा सकी ·· और अब तो वह कभी न जाएगी, क्योंकि वह बदनाम···गुड्डो की मां के रूप में···एमोसिएशन वाले शान्ति को मौका ही न देगे। वे नए किराएदार कितने वहशीपन के साथ (शान्ति बता तो रही थी) चीखने लगे थे—शान्ति को देखते ही। सुदर्शना ने अपनी पसन्द के लड़के से शादी कर ली। इस में गुड्डो का क्या दोष ? शान्ति का क्या कसूर ? ···लोगों का दिमाग सड गया है ···नए-नए फैशन तो कर लेगे, लेकिन दिमागी तौर पर अठारहवी सदी में जिएंगे···

ट्रिन-ट्रिन···फिर ड्रग-स्टोर का फोन घनघना उठा है···हैलो ! ···हां जी, है। अभी बुलाता हूँ···एक मिनट होल्ड कीजिए ·· रामप्रकाशजी आप का फोन···

रामप्रकाश हड़बड़ा गया। कच्ची नीद में गर्दन पर ठण्डे पानी की कोई बूद आ पड़े, कुछ इसी तरह। वह उठने लगा। उस के नाम फोन शायद ही कभी आता था। किस का हो सकता है ? उस ने कुर्सी पीछे खिसकाई। जो आवाज हुई, वह बहुत बडी मालूम हुई।

रामप्रकाश फोन के पास आया। रिसीवर उठाते समय उस ने फिर से आश्चर्य किया कि किस का फोन हो सकता है।

"हैलो !" उस ने कहा।

'कौन ? रामप्रकाशजी ?" एक लडकी-आवाज सुनाई पडी। रामप्रकाश घबरा-सा गया। यह गुड्डो नही थी। बोलने वाली का लहजा और ही तरह का था।

"हां जी बोल रहा हूँ।" रामप्रकाश ने कहा। उस ने पूछना चाहा

कि आप कौन है, लेकिन इस से पहले ही लडकी ने फिर सवाल किया, "आप कौन साहब बोल रहे है ?"

"मैं बोल रहा हूँ—रामप्रकाश, कहिए ?"

'देखिए, मै वेस्ट पटेलनगर से बोल रही हूं। आप जल्दी-से-जल्दी यहां आ सकते हैं ?"

"जी ?"

"तुरन्त रवाना हो जाइए।"

"लेकिन क्यों ? और कहां ?" रामप्रकाश के माथे पर बल पडे। लडकी की आवाज काप रही थी।

रामप्रकाश ने सीधा ही प्रश्न पूछा, "आप कौन है ?"

"किस का फोन है ?" पाठक पास आ कर उत्सुकता से पूछ रहा था। रामप्रकाश ने उस की ओर देखा और फिर से अपना सवाल दोहराया, "देवीजी, आप कौन है, जरा बताएंगी ?"

"देखिए, मैं पटेल माण्टेसरी स्कूल से बोल रही हूं। आप की लड़की यहीं पढाती है ?"

"हां।"

"वह आप को बुला रही है।"

"मुझे ? क्यों ? वह खुद फोन नही कर सकती ?" रामप्रकाश ने आशंकित होते हुए पूछा। इस का जवाब काफी देर तक न आया। रामप्रकाश अधैर्य से बोला, "हैलो !"

चुप्पी।

"हैलो ! आप कौन है ?" पाठक ने रामप्रकाश के हाथ से रिसीवर ले कर स्वयं पूछा। फोन पर शैतानी करने वाले लड़के-लड़कियों से उसे सख्त चिढ़ थी। वह डांटना चाहता था। रामप्रकाश पसोपेश में पड़ा हुआ पाठक का चेहरा ताक रहा था।

"देखिए···" लडकी ने कहना चाहा, लेकिन उस की जबान लड़खड़ा गई। स्वर इतना असन्तुलित था कि पाठक का यह शक तो दूर

हो ही गया कि शैतानी की जा रही है। वह इन्तजार करता रहा कि लड़की अभी अपनी बात कहेगी, लेकिन वह कुछ बिखरे वाक्यों के अलावा और कुछ न सुन सका, "···देखिए ···मैं···मैं···आप कौन है ? रामप्रकाशजी को दीजिए···मैं उन से बात करना चाहती ·· हूं"

"आप मुझ से कहिए, क्या बात है ? मैं रामप्रकाशजी का साथी हूं···" पाठक ने अधिकार के साथ कहा।

लडकी कुछ न बोली। पाठक ने दूसरी तरफ से सिसकियों की आवाज सुनी। सिसकियां ? पाठक को समझते देर न लगी कि कोई अप्रिय घटना उस ने उसी क्षण तय कर लिया कि रामप्रकाश को फोन नही देगा। पता नहीं, कैसी घटना हो और वह किस रूप में रामप्रकाश के सामने रखी जाए। रामप्रकाश उस से फोन लेने की कोशिश कर रहा था, लेकिन पाठक ने रिसीवर को अपने मुह से जरा परे हटाते हुए कहा, "ठहरिए, कोई आप को छेड रहा है ! इस तरह तंग करने वाले दिल्ली में बहुत हो गए है। मै इसे डांटूगा।"

पाठक रिसीवर को फिर मुह के पास ले गया, "हैलो !"

"हैलो ! आप कौन हैं ?" इस बार भी पाठक ने एक नारी-स्वर सुना, लेकिन पहले कोई युवती बोल रही थी, जबकि यह आवाज किसी प्रौढ़ा की थी। इस का अर्थ यही हो सकता था कि पहले फोन करने वाली युवती सिसकियों के कारण हट गई है। पाठक चौकन्ना हो गया। उस ने सन्तुलित और निर्णयात्मक आवाज में कहा, "देखिए, मैं रामप्रकाशजी के साथ काम करता हूं। उन से आप जो कहना चाहती हैं, मुझे लगता है कि जरूर वह कोई नाजुक बात है। अगर आप मुझे बता सकें तो मैं रामप्रकाशजी तक सन्देश पहुंचा दूगा—अच्छा अवसर देख कर। कहिए !"

"ओ माई लार्ड !" उधर से प्रौढा ने कहा, "हैल्प मी···हां जी, देखिए, आप उन को साथ ले कर तुरन्त वेस्ट पटेलनगर के पटेल माण्टेसरी स्कूल में आ जाइए। मैं प्रिंसिपल बोल रही हूं। यहां उन की

लड़की काम करती है। स्कूल उन का देखा हुआ है।

"लेकिन मैडम, बात क्या है ?"

"उन की लड़की का एक्सीडेण्ट हो गया है।"

"जी ?" पाठक ने बाहर से शान्त बने रहने की पूरी कोशिश के साथ पूछा और कनखियों से रामप्रकाश की ओर देख लिया।

"ए सीरियस एक्सीडेण्ट···वैरी सीरियस···लेकिन आप उन को मत बतलाइएगा। सिर्फ इतना कहिए कि थोड़ी-सी चोट आई है लेकिन घबरा गई है···बट ··" प्रौढ़ा रुकी। उस ने खखार कर अपनी भर्राई आवाज को ठीक किया, "·· बट···प्लीज, डोण्ट वेस्ट टाइम "

उधर से फोन रख दिया गया। पाठक ने रामप्रकाश की ओर देखा, "आप को अभी पटेलनगर चलना होगा।"

इस से पहले कि रामप्रकाश कुछ पूछ पाता पाठक दौड कर काउण्टर पर बैठे मालिक के पास गया और कान में कुछ बुदबुदाया। रामप्रकाश ने मालिक को चौकते देखा। पाठक ने उस से दस दस के दो नोट लिए और रामप्रकाश के पास आ कर, उस की बाह पकड़, लगभग खींचता हुआ बाहर ले गया। "दौडिए !" उस ने रामप्रकाश को झटका दिया।

"लेकिन···बात क्या है ?···" रामप्रकाश उत्तेजित हो रहा था।

"अभी बताता हूं।" पाठक ने कहा, "पहले टैक्सी " वह उस का हाथ थामे हुए सड़क के किनारे खड़ा हो गया। कण्ट्रोलर का फेम अभी लाल नही हुआ था, लेकिन आवागमन का सिलसिला एक बार टूटा। पाठक और रामप्रकाश दौड़ते हुए सड़क पार करने लगे। जो टैक्सी नम्बर पर लगी थी, उस मे झटपट बैठते हुए पाठक ने ड्राइवर से कहा, 'वेस्ट पटेलनगर। जल्दी चलो। बहुत जरूरी काम है।"

ड्राइवर ने मीटर डाउन किया ! उत्तेजना के कारण पाठक को मीटर की हल्की टिन् सुनाई न पड़ी। उस की सास तेज हो गई थी। टैक्सी ने एक झटका दिया और पार्किंग में से निकल कर दौड़ पड़ी।

रामप्रकाश ने पाठक की ओर देखा। पाठक भी उस की ओर देखता

रहा। फिर उस ने नकलीपन के साथ जरा मुस्करा कर निगाह नीचे कर ली और कहा, "एक बात बताइए। कभी-कभी क्या ऐसा नहीं होता कि सिर्फ एक क्षण में···मेरा मतलब है, सिर्फ एक क्षण में कुछ ऐसा हो जाए कि हमें···हमें सारी बातों पर बिल्कुल नए सिरे से सोचना ···"

"देखो पाठक, मैं लम्बी भूमिका नहीं चाहता।" रामप्रकाश ने पास सरकते हुए कहा, "मुझे शक हो रहा है। ऐसी क्या बात है जो तुम एकाएक नहीं बताना चाहते? पटेलनगर से फोन आने और गुड्डो के बारे में···यह मेरी लड़की का घर का नाम है। बताओ, क्या हुआ है?"

"ठीक-ठीक मैं भी नहीं जानता लेकिन किसी गम्भीर बात के लिए तैयार रहना चाहिए।"

रामप्रकाश की भौंहें सिकुड़ी हुई थीं, कपार पर लकीरें बन आई थीं। चेहरा स्थिर।

पाठक से आंखें मिलते ही रामप्रकाश ने पलकें झपकाईं। पाठक दूसरी ओर देखने लगा। उस ने कहा, "फोन पर पहले कोई लड़की बोल रही थी। टीचर रही होगी। उस के बाद प्रिंसिपल बोलने लगी।"

"प्रिंसिपल?"

"उस ने बताया कि गुड्डोजी का—एक्सीडेण्ट हो गया है।" पाठक ने बिना रुके आगे का वाक्य भी कह दिया, "गुड्डोजी बहुत घबरा गई है। चोट ज्यादा नहीं आई है, लेकिन घबराहट के कारण आप को बुला रही है···"

टैक्सी पूसा रोड पार कर के ईस्ट पटेलनगर के चौराहे का चक्कर ले रही थी। वह पटेल रोड पर मुड़ी। पाठक ने पूछा, "आप ने गुड्डोजी का स्कूल तो देखा है न?"

रामप्रकाश चुप रहा।

"आप को रास्ता बताना होगा।" पाठक ने आशा रखी थी कि ड्राइवर को रास्ते का निर्देशन देने में रामप्रकाश कुछ स्वस्थ हो जाएगा। ऐसा हुआ या नहीं, वह न भांप सका।

"वेस्ट चलना है न, बाबूजी ?" ड्राइवर ने पूछा। पाठक ने जान-बूझ कर उत्तर न दिया। वह चाहता था कि रामप्रकाश बोले। रामप्रकाश चुप रहा। ड्राइवर ने फिर पूछा। तब रामप्रकाश धीमी आवाज मे बोला, "हा, वेस्ट।"

अधिकाश पटेल रोड, जो अनेक सप्ताहों से खुदी हुई पड़ी थी, मरम्मत का काम आगे न चल रहा होने के कारण अब तक बन्द थी। टैक्सी ने ईस्ट का बस-स्टाप छोड़ने के बाद साउथ पटेलनगर के पास से बगल की सकरी सडक पकड ली। आगे दो स्कूटर, एक फोर-सीटर और तीन बसे जा रही थी, जिस से बहुत शोर हो रहा था और सडक पर पैट्रोल की गन्ध फैल गई थी। पाठक ने कुछ कहने के लिए कहा, "काच चढ़ा ले ? धुआं न आएगा।"

दोनों ने अपनी-अपनी ओर के काच चढ़ाए।

"लेकिन रामप्रकाशजी, फोन पर सही स्थिति कभी नही बताई जाती। मुमकिन है, काफी गम्भीर दुर्घटना हुई हो। हमे बुरे-से-बुरे समाचारो के लिए तैयार रहना चाहिए।"

'हा।" रामप्रकाश ने सिर्फ इतना कहा। उस की आवाज कितनी बदल गई थी, इस का इस एक शब्द से ही पता चल गया।

पटेल रोड जितनी दूर तक खुदी हुई थी, वहा तक का रास्ता सकरी सड़क से काटने के बाद टैक्सी मुख्य सड़क पर आई। ड्राइवर ने पूछा, "किस तरफ ले, साहब ?"

इन की बातो में बार बार 'एक्सीडेण्ट' और 'दुर्घटना' शब्दो को सुन कर ड्राइवर भी गम्भीर हो गया था और अधिक-से-अधिक तेजी से ले जा रहा था।

रामप्रकाश ने ड्राइवर को बताया कि गाड़ी कहा से मोड़नी है।

पाठक ने उस को मानसिक रूप से और अच्छी तरह तैयार करने के लिए स्कूल आने से पहले ही सहजता से, लेकिन साफ कह दिया "मुझे तो लगता है, बहुत ही सीरियस एक्सीडेण्ट हुआ है।"

टैक्सी स्कूल के सामने रुकी। दोनों तेजी से नीचे उतरे। स्कूल सूना था। इस समय तो यहां बच्चों का हल्ला होना चाहिए था। उस की बजाए यह नीरव शान्ति···गुड्डो कहां है ? रामप्रकाश बौखलाता हुआ इधर-उधर देख रहा था। पाठक ने बिल दे कर टैक्सी को विदा किया। प्रिंसिपल का कमरा खुला था। उन्होंने परदा हटा कर प्रवेश किया। बड़ी मेज के सामने एक कुरसी पर बैठी प्रिंसिपल उठ खड़ी हुई। उस के बाल सफेद थे और वह मोटी न होने के बावजूद मातृत्व से ओत-प्रोत थी। उसे देख कर इस का आभास नहीं मिलता था कि वह मास्टरनियों को कितना दबा कर रखती है। उस ने गम्भीरता से सोफे की ओर इशारा किया। दोनों बैठे।

उसी समय परदा हटा। स्कर्ट पहने हुए एक युवती ने प्रवेश किया। रामप्रकाश ने पहचाना कि यह वही क्रिश्चियन टीचर होनी चाहिए, जिस के बारे में गुड्डो अकसर कुछ-न-कुछ बताया करती थी।

प्रिंसिपल ने रामप्रकाश की ओर संकेत करते हुए युवती से कहा, "ही हैज़ कम।"

युवती रामप्रकाश को देख कर सिसकने लगी और आंखों पर रूमाल दबा, धीमे कदमों बाहर चली गई। रामप्रकाश अपनी जगह से उठने लगा, 'मेरी लड़की···"

प्रिंसिपल ने तुरन्त कहा, "आप बैठिए। मैं डाक्टर को फोन करती हूं।" उस ने डायल घुमाया, "हैलो ! हां जी, वह आ गए हैं जी···जी ···हांजी · अच्छा···अच्छा···"

उस ने फोन रखा और रामप्रकाश की ओर देखा, "डाक्टर का कहना है कि जब तक वह होश मे न आए, वहां किसी को न जाने दिया जाए।"

'लेकिन · लेकिन वह किस तरह एक्सीडेण्ट कैसे···"

"आयम सॉरी···आप की लड़की सड़क पार कर रही थी। मेन रोड बन्द हो जाने से सारी गाड़ियां इधर से गुजरती हैं। मैं कह नहीं सकती,

एग्ज़ेक्टली कैसे हुआ, लेकिन वह डी० टी० यू० की एक बस से टकरा गई ···आयम रियली टैरिबली सॉरी · फार्चुनेटली सामने ही एक अस्पताल था। उस को तुरन्त वहां ले जाया गया। हालत बहुत गम्भीर है। डाक्टर पूरी कोशिश कर रहा है कि···अभी फोन पर नर्स ने बताया, वह अभी होश में नही आई है।"

"उस को कहां-कहां चोट लगी है ?" पाठक ने पूछा, क्योंकि उस ने पाया, रामप्रकाश पूछ ही नही रहा है।

रामप्रकाश ने दोनों हाथ सोफे पर ढीले छोड़ दिए थे।

"मेनली पेट और सिर में···फोन पर तो खैर, मैं सच बता नही सकती थी। इतना आप खुद भी समझ गए होंगे। उस की हालत··· हम ने आप के घर पर भी टैक्सी भेजी थी।" उस ने रामप्रकाश से मुखातिब होते हुए कहा। वह पास आई और सोफे पर बैठ गई। सोफे की सतह जरा दबी। रामप्रकाश ने स्थिर रहते हुए, केवल गर्दन घुमा कर उस की ओर देखा। वह कह रही थी, "लड़की की मदर को हम ने बुलवाया, लेकिन जो टीचर उन्हें लेने गई हुई थी, उस ने रास्ते में सब बता दिया। मदर टैक्सी में ही बेहोश हो गई।"

"हुं···" पाठक ने गहरी सांस ली। रामप्रकाश की शून्य दृष्टि दीवार पर टिकी थी।

पाठक ने पूछा, "वे कहां हैं ?"

"कौन ? लड़की की मदर ?"

"जी, हां।"

"उन को नर्स अटेण्ड कर रही है।"

"लेकिन वह कहा है ? मैं उस के पास जाना चाहता हूं।" रामप्रकाश ने रूखेपन के साथ कुछ इस तरह कहा, मानो चिढ़ गया हो।

प्रिंसिपल ने उत्तर दिया, "वह भी उसी प्राइवेट अस्पताल में हैं, जहां आप की लड़की···यहां से वही अस्पताल सब के करीब पड़ता है।"

"मैं वहां जाना चाहता हूं।" रामप्रकाश उठा। उस की टांगों में

झुरझुरी थी। पाठक यह सोच कर उस के पास आया कि शायद सहारा देना पड़े, लेकिन रामप्रकाश कुछ तन कर खड़ा था। उस की नाक जरा फूल आई थी। होंठ रह-रह कर कांपते।

प्रिंसिपल ने कहा, "ठहरिए, मैं पहले पूछ लेती हूं।"

उस ने फिर अस्पताल का फोन मिलाया। "हैलो! यस ··दिस इज प्रिंसिपल···ये वहां आना चाहते है···जी ? ·· अच्छा···"

रिसीवर रख कर उस ने कहा, 'आप थोडा इन्तजार करें। नर्स अभी डाक्टर से पूछ कर आती है। वह खुद हमें फोन करेगी।"

'देखिए, मैं कायदे-कानून नहीं जानता। मुझे वहा पहुंचा दीजिए। यहा अकेले में मुझे घबराहट हो रही है।" रामप्रकाश सोफे पर बैठ गया, "मैं अपनी वाइफ के पास जाना चाहता हूं—भले ही वह बेहोश हो। मैं फोन का इन्तजार नही कर सकता। हमें बताइए, वह कौन-सा अस्पताल है। हम खुद चले जाएंगे। आप टैक्सी बुलवा दीजिए।"

पाठक ने कुछ न कहा। प्रिंसिपल पसोपेश में पड़ कर दोनों को घूरती रही। तब फोन की ओर बढ़ी।

इस से पहले कि वह रिसीवर उठाती, घण्टी बज उठी। ट्रीं··· ट्रीं ·· पाठक ने तनाव महसूस किया। प्रिंसिपल ने रिसीवर उठाया, "हैलो! यस···पटेल माण्टेसरी स्कूल···"

इस के बाद वह चुप हो गई। उस ने रिसीवर कान से लगाया हुआ था, जिस से जाहिर था कि उसे अटूट प्रवाह के साथ कुछ बताया जा रहा है। उस के चेहरे के भाव जल्दी-जल्दी बदल रहे थे।

अब वह रिसीवर रख रही थी। उस पर हथेली दबा कर वह नीचे देखने लगी। उस के होंठ एक-दूसरे पर भिंचे हुए थे।

पाठक उठ कर उस के पास आया, "प्रिंसिपल !"

प्रिंसिपल ने इस तरह सिर उठाया, मानो इतने से ही उस ने साहस का परिचय दिया हो।

उस ने घोषणा-सी करते हुए कहा, "लड़की चली गई।"

इलाहाबाद, लखनऊ, हिसार वगैरह के रिश्तेदार मातमपुरसी कर के जा चुके थे। बिल्लू के मामा का अभी तक कोई पता नहीं था। बम्बई की जिस संस्था में वह काम करता था, उस ने रामप्रकाश द्वारा भेजी गई रजिस्ट्री यह कह कर लौटा दी थी कि इस नाम का कर्मचारी हमारी नौकरी छोड़ कर जा चुका है। यदि न जा चुका होता, यदि उस ने लड़के की तलाश की होती या कम-से-कम पत्र का उत्तर ही दिया होता, तो भी अब क्या अन्तर आता था! शान्ति और रामप्रकाश ने अनुभव किया कि उन्होंने एक ऐसे सपने की शादी करनी चाही थी जो अपनी अपरिपक्वता में टूट गया।

दिल्ली परिवहन के उस ड्राइवर ने पुलिस में और उस के बाद अदालत में जो बयान दिया था, उस से उसे सिर्फ चार माह की सजा हुई थी—उस ने अपना यह अपराध स्वीकार कर लिया कि वह एक ऐसी बस चला रहा था, जिस के ब्रेक खराब थे।

"न चलाता तो क्या करता?" ड्राइवर का तर्क था, "गाड़ी की सीट पर जाने से पहले मैं ने अपने अफसर को बताया था कि ब्रेक ठीक नहीं है, रास्ते में कहीं भी बिल्कुल खराब हो सकते हैं। किसी ने मेरी बात पर ध्यान न दिया। मुझे गाड़ी वैसी ही ले जाने पर मजबूर किया गया। मैं नहीं चाहता था कि मेरी नौकरी पर कोई बात आए। उस सकरी सड़क पर एक मोड़ था। मोड़ने से पहले मैं ने गाड़ी धीमी करनी चाही, लेकिन वह आगे बढ़ती गई। वहां वह लड़की सड़क पार कर रही थी। बताइए, मेरा क्या कसूर है।"

रामप्रकाश सोच रहा था कि परिवहन में ऐसी एक नहीं, अनेक बसें हैं जो तुरन्त हटा दी जानी चाहिएं···

आज वह कई दिनों बाद ड्रग-स्टोर आया, हालांकि काम बिल्कुल न कर पाया। पाठक से एकाएक उस ने बहुत घनिष्ठता महसूस की। पाठक उसे इधर-उधर की बातों में उलझाए रहा। शाम को साढ़े सात बजे रामप्रकाश ने ड्रग-स्टोर के मालिक से कहा कि वह जाना चाहता

है। उसे छुट्टी मिल गई। पाठक ने भी छुट्टी ले ली। वह नहीं चाहता था कि रामप्रकाश अकेला घर जाए।

सारी राह दोनों में कोई बात न हुई। पाठक की मौजूदगी से ही रामप्रकाश को जैसे तसल्ली मिल रही थी। इण्डस्ट्रियल एरिया का बस-स्टाप आने पर दोनों ने अपनी सीटें छोड़ दीं। पाठक बुदबुदाया, "आइए!" रामप्रकाश चुप ही रहा।

दोनों ने ज़ीना पार किया। रामप्रकाश ने बन्द दरवाजे पर ठकठक की। "कौन?" बिल्लू की आवाज।

"मैं हूं, बेटे। देखो, हमारे यहा कौन आया है?"

बिल्लू ने दरवाजा खोल दिया। "नमस्ते अंकलजी!" उस ने पाठक की ओर हाथ जोड़े। शान्ति बाहर आई और औपचारिकता से जरा मुस्कराई। पाठक कमरे में आया और खाट पर बैठा।

"वहां नहीं, कुर्सी पर।" रामप्रकाश ने कहा।

'नहीं, ठीक है।" पाठक ने कहा, दरअसल वह कुर्सी को शान्ति के लिए छोड़ देना चाहता था। शान्ति जैसे इसे भांप गई हो। बोली "बैठिए न!" उस ने कुर्सी पाठक के पास खिसकाई। पाठक से इन्कार करते न बना।

"किसी समय मैं ने पाम्पेई का इतिहास पढ़ा था। आज अधिकांश बातें भूल गया हूं, लेकिन इतना याद है कि पाम्पेई की सभ्यता का पूरी दुनिया में जोड़ नहीं था।" रामप्रकाश ने कहा, "अरे भई, चाय तो पिलाओ!" लेकिन एक दिन भयंकर भूचाल आया और सारी सभ्यता धरती के गर्भ में समा गई। सैकड़ों वर्षों में जो तरक्की हुई थी, कुछ ही मिनटों में नष्ट।"

पाठक को अच्छा लगा कि उस ने ऐसी बात प्रारम्भ की थी, जिस का सम्बन्ध ताजा दुखद घटना से नहीं था, लेकिन रामप्रकाश ने आगे कहा, "ऐसा ही मेरे साथ हुआ है।" पाठक ने सशंकित हो कर उस की ओर देखा। शान्ति ने भी।

रामप्रकाश सूखी मुस्कान के साथ उसांस ले रहा था, "गुड्डो हमारे परिवार के संस्कारों का प्रतीक थी। मैं उसे एक ऐसे रूप में देखना चाहता था जो मौलिक हो। इसी लिए मैं उस से नाराज रहता था। वह मौलिक नहीं थी। उस ने शहर की कई ऐसी बातें सीखी थीं—और ठीक है, हर व्यक्ति सीखता है—कई ऐसी बातें, जो मुझे बुरी लगती थीं लेकिन जिन्हें मैं बुरी सिद्ध नहीं कर सकता ··"

शान्ति ने स्टोव में पम्प करते हुए टोका, "आप ने फिर वही बातें शुरू कर दीं?"

"तो क्या मन-ही-मन घुटता रहूं? कह देने से हल्का हो जाऊंगा।"

पाठक ने भी रामप्रकाश का पक्ष लिया, "हां भाभीजी, यह ठीक कहते हैं।"

"एक बार मैंने एक प्रोफेसर का भाषण सुना था।" रामप्रकाश कमीज उतारने लगा, "उस का शीर्षक मुझे आज तक याद है—जस्टीफाइड एब्सर्डिटीज़। हिन्दी में कहना हो तो—उचित सिद्ध की जा सकें, ऐसी बेवकूफियां। इसे तुम किन्ही और शब्दों में भी रख सकते हो।"

"हां। तो?"

"प्रोफेसर ने कहा था कि कभी-कभी आधुनिक व्यक्ति जस्टीफाइड एब्सर्डिटीज़ का शिकार हो जाता है—बल्कि कई बार वह सिर्फ इन्हीं का पुतला होता है। दिल्ली में, मुझे लगता है, सभी जस्टीफाइड एब्सर्डिटीज़ के ही पुतले हैं और बिल की चींटियों की तरह भरे हुए हैं।"

"लो, चाय तो पियो।" शान्ति ने दोनों की ओर कप बढ़ाए।

"गुड्डो भी इस की शिकार हो गई थी—या होने की तैयारी में थी।" रामप्रकाश ने चुस्की ली। उस ने मुस्करा कर कहा, "लेकिन इस बात को मैं सिद्ध नहीं कर सकता।"

पाठक के आस-पास उदासी घिर आई, क्योंकि उस ने एकाएक ही उसे विषय-परिवर्तन करते सुना।

"सो, माई डीयर पाठक, अब मुझे इस घर से जाने की जरूरत नहीं है। मकान-मालकिन फिर दयालु हो गई है। उस का लड़का माफी मांग गया है। पहली मंजिल में किराएदार आ जाने की बात भी पक्की हो चुकी है। अब सब ठीक है।"

काफी देर तक किसी ने कुछ न कहा।

रामप्रकाश ने मौन भग किया, "गुड्डो की शादी के बाद मैं जिस निश्चिन्तता का अनुभव करता, वही आज अनुभव कर रहा हूं। दुःखी तो हूं, लेकिन बहुत निश्चिन्त भी। खैर, कोई और बात करो।"

पाठक समझ गया कि अगर वह चुप रहा तो रामप्रकाश फिर बहकने लगेगा। उस ने कहा, "दिल्ली में सहयोगी दूकाने खुल गई। दशहरे के समय महगाई के विरोध में लोगों ने मिठाइयों का बॉयकाट कर दिया। क्या इस से नहीं लगता कि लोग जाग रहे है ?"

"हां। समस्या दरअसल बिल्ली के गले में घण्टी बांधने की है।"

"एक घण्टी मैं भी बाधना चाहता हूं।"

"याने ?"

"प्रयोग कर ही लिया जाए। कल मैं किसी सडक पर लेट जाऊंगा —दिल्ली-परिवहन की लापरवाहियों के विरोध में। हद से हद यही तो होगा कि पुलिस पकड़ ले जाएगी ? लेकिन जब तक पुलिस आएगी, मैं सैकड़ों बसों और कारों को रोक रखूगा।"

रामप्रकाश ने अविश्वास से उस की ओर देखा, फिर हंस कर कहा, "न रोक सकोगे। लोग तुम्हीं को उठा कर फेंक देंगे।"

"मैं किसी दिन सचमुच ऐसा कर बैठूगा। फिर जो होगा, देखा जाएगा!"

"सब मुझे क्या सलाह दे रहे हैं, जानते हो ?"

"क्या ?"

"मैं दिल्ली-परिवहन पर दावा कर दूं। सारी बातें मेरे पक्ष में हैं। कई हजार का हरजाना मिलेगा। लेकिन नहीं, ऐसा नहीं करूंगा। गुड्डो

की मां भी नहीं चाहती। आज की जिस निश्चिन्तता को स्वीकार करने के लिए मैं मजबूर किया गया हूं, उस की कीमत नहीं आंकी जा सकती।"

नौ बजे की वह बस शादीपुर डिपो से रवाना हुई। उस का नम्बर बाईस था। रामप्रकाश सब से आगे की सीट पर बैठा हुआ था—अन्यमनस्क।

बस एक झटके के साथ रुक गई। ड्राइवर खिड़की से सिर निकाल कर चिल्लाया, 'ओए—मां दे पुत्तर"

सूट-बूट पहन कर पाठक बीच सड़क में खड़ा था। रामप्रकाश ने उसे अच्छी तरह पहचाना। वही था। उस ने दोनों हाथ ऊपर उठाए हुए थे—मानो कोई पोर्टर किसी ट्रेन को रोक रहा हो। बस खड़ी होते ही वह ऐन सामने सड़क पर औंधा लेट गया। रामप्रकाश अन्दर-ही अन्दर उबलने लगा। ड्राइवर मा-बहन की गालियां बक रहा था। कण्डक्टर उतरा। "ओए झल्ले (पगले)?" कहता हुआ वह पाठक के पास गया और उस पर झुक कर रास्ता छोड़ने के लिए कहने लगा। पाठक ने सिर उठाया। उस ने धीमे स्वर में कण्डक्टर को क्या उत्तर दिया, रामप्रकाश को सुनाई न पड़ा। कण्डक्टर के चेहरे पर झुंझलाहट तैरने लगी। वह लौटा और ड्राइवर से बोला, "वह तो उठने का नहीं। कहता है, डी० टी० यू० के खिलाफ बगावत कर दी है।"

पाठक इस तरह लेटा हुआ था कि बस को आगे ले जाने का रास्ता काटने के लिए पहले उसे पीछे मोड़ना जरूरी था। कण्डक्टर ने देखा कि पीछे तो हिलने की भी जगह नहीं है।

वहां एक और बस प्रायः सट कर रुकी हुई थी। उस के कई यात्री नीचे उतर कर पाठक को देख रहे थे। एक भी यात्री पाठक के करीब नहीं जा रहा था, गोया वह दूर से ही देखने लायक कोई जीव हो।

रामप्रकाश की बस से भी दो सरदार अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उतरे और पाठक की तरफ देखते हुए मुस्कराने लगे। रामप्रकाश समझ न पाया कि वे पाठक की प्रशंसा में मुस्करा रहे हैं या उस का मजाक बना रहे हैं। रामप्रकाश ने अपने भीतर उबाल-सा महसूस किया।

रामप्रकाश ने सीट छोड़ दी। नीचे उतर कर उस ने बस के लम्बोतरे आकार को देखा, जो एंजिन की घरघराहट के साथ कांप रहा था। उस ने खिड़कियों से झांकते लोगों पर निगाह डाली। वे सभी रामप्रकाश की ओर देख रहे थे। दोनों सरदार भी पास आ गए।

रामप्रकाश ठोस चाल से आगे बढ़ा और पाठक के साथ नंगी सड़क पर लेट गया। पाठक ने सिर उठा कर उस की ओर देखा और हल्की मुस्कान फेंकी। उसी वक्त दोनों सरदार भी करीब आ कर लेट गए।

फिर और भी कई लोग।